चाँपाडाँगा की बहू

चाँपाडाँगा की बहू

श्री ताराशंकर बन्द्योपाध्याय

अशोक पुस्तक मन्दिर

१६३, महात्मा गाँधी रोड,

कलकत्ता—७

प्रकाशक की ओर से

'चाँपाडाँगा की बहू' बंगला के विख्यात कथाकार श्री ताराशंकर बन्द्योपाध्याय के 'चाँपाडाँगार बहू' का हिन्दी अनुवाद है। बंगला में यह पुस्तक बड़ी लोकप्रिय है।

ताराशंकर बाबू आदर्शवादी कथाकार हैं। प्रायः इनकी सभी रचनाओं में विविध रूप से राष्ट्रीयता प्रस्फुटित हुई है। इन्होंने ग्राम्य-जीवन को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है और निम्न तथा मध्यम श्रेणी के लोगों के सुख-दुःख, प्रेम-विरह तथा पारिवारिक जीवन आदि का सजीव एवं स्वाभाविक चित्रण करने में अपूर्व सफलता प्राप्त की है। यही कारण है कि आज बंगला साहित्य में ताराशंकर बाबू सर्वश्रेष्ठ कथाकार माने जाते हैं। इन्होंने अनेक ग्रन्थों को रचना की है और अधिकांश के चलचित्र भी बन चुके हैं। इनके 'आरोग्य निकेतन' उपन्यास पर अभी हाल ही में 'साहित्य एकादेमी' ने इन्हें ५ हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया है। इसी पुस्तक पर कलकत्ता विश्वविद्यालय ने 'रवीन्द्र पदक' देकर इनका सम्मान किया है।

हम चाहते हैं कि भारत के इस विख्यात कथाकार के ग्रन्थों को हिंदी-संसार भी पढ़ कर लाभ उठावें और इसी उद्देश्य से हमने इनके ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने की योजना बनायी है। आशा है, हिन्दी-संसार हमारी इस योजना से लाभ उठायेगा।

१० अक्टूबर, १९५७

रामसकल सिंह एम० ए०
संचालक
अशोक पुस्तक मन्दिर,
१६३, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता-७

प्रथम परिच्छेद

देवग्राम के रास्ते में पास के बड़े ग्राम से गायक-मण्डली आयी है। एक ढोलकिया एक बड़ी ढोल नाच-नाच कर बजा रहा है। उसके साथ झाल और सिंघा बज रहा है। यह दल बहुत दूर पर दिखाई दे रहा है। देवग्राम में गायक-मण्डली नहीं है। नन्दग्राम की मण्डली भी कभी इस गाँव में नहीं आती। इस बार यह नयी बात है।

दक्षिण पाढ़े की मण्डलबाड़ी से दोनों बहुयें दौड़ी हुई आकर खड़ी हो गयीं।

मण्डलबाड़ी गाँव में सबसे समृद्ध है। मिट्टी का घर, टिन की छाजन, पक्का फर्श। बरामदे में सुन्दर लकड़ी के खम्भे। यह सिताब और महताब मण्डल का मकान है। दोनों बहुयें दोनों भाइयों की स्त्रियाँ-कादम्बिनी और मानदा हैं। कादम्बिनी थोड़ी लम्बी, पतली और श्यामवर्ण की अपूर्व सुन्दरी स्त्री है। मानदा की गर्दन छोटी और वह थोड़ी मोटी है। कादम्बिनी निस्सन्तान, उम्र चौबीस-पच्चीस; मानदा की उम्र सत्रह-अट्ठारह—वह एक सन्तान की माता है।

उधर गायक-मण्डली एक दूसरे रास्ते से जाने लगी। ढोल बजने का शब्द मोड़ की आड़ में पड़कर कम सुनाई देने लगा।

मानदा बोली—सर्वनाश, मुर्दों का दल उस रास्ते चला गया। कादम्बिनी ने गवेषणा कर कहा—जान पड़ता है, उस पाढ़े के मोटे मण्डल के घर गयी है।

—मोटे मण्डल के घर ? क्यों ? हमारे घर से मोटे मण्डल का सम्मान अधिक है क्या ?

—उम्र का भी तो सम्मान होता है। इसके अलावा देने-लेने में मोटे मण्डल का खूब नाम है।

थूक घोंट कर मानदा बोली—घर में नहीं दाने, दीदी गयी भुनाने। सुना है—इधर तो गर्दन भर कर्ज है और बाहर देने-लेने में नाम !

कादम्बिनी ने जरा शासन के स्वर में कहा—छिः, ऐसी बात न कहो। हजार होने पर भी वे आदरणीय हैं। अब चलो, अपना काम करें। जब गाँव में आयी है तो इधर भी आयेगी ही।

वे मकान में चली गयीं।

पहले गोशाला है। गायें बँधी हैं। दोपहर की धूप में सोयी हैं, जुगाली करतीं हैं, और एक चरवाहा गाय के शरीर को तकिया बना कर सो रहा है।

इसके बाद खलिहान घर है।

खलिहान घर में घुसते ही एक कड़ी गाना और धम-धम शब्द सुनाई पड़ा। गेहूँ लाठी से पीट कर झाड़ते-झाड़ते हलवाहा गा रहा है—

"प्रभुजी खेती से चरवाही भली।"

गेहूँ के चारों ओर कबूतर इकट्ठे होकर गेहूँ खा रहे हैं।

कादम्बिनी हँस कर बोली—क्यों रे नोटन, खेती से इतनी चिढ़ क्यों है ?

जीभ काट कर नोटन ने कहा—जी, मालकिन ?

—खेती से चरवाही अच्छी कहता है ?

—जी हाँ मालकिन, चरवाहा होने पर क्या गेहूँ झाड़ता ? चला जाता गायक-मण्डली की धूम देखने।

मानदा बोली—देखती हूँ इस बार गायक-मण्डली की धूम अधिक है नोटन ! दो गाँव पार कर हमारे गाँव में आयी है।

—वह तो हमारे छोटे मण्डल की करतूत है ! तुम अच्छी तरह जानोगी छोटी मालकिन !

कादम्बिनी ने विस्मय के साथ प्रश्न किया—किसकी ? महताब की ?

—जी हाँ। आज कई दिनों से वहीं हैं।

—यह क्या ? वह ससुर को देखने गया था ! मानू के बाप की बीमारी—

मानदा ने उसकी ओर अग्निदृष्टि से देख कर कहा, साग से मछली नहीं ढँकती बड़ी दीदी, तुम झूठ बात न कहो।

—मानू ! तू क्या कहती है ?

—ठीक कहती हूँ बड़ी मालकिन। वह नहीं गया, यह तुम जानती हो।

—मैं जानती हूँ ?

—यदि जानती नहीं, तो मेरा जाना तुमने क्यों बन्द कर दिया ?

—इस गर्मी में छः कोस बच्चे को गोद में लेकर जाओगी, बच्चे को बीमारी-टिमारी होगी, इसी से मना किया। कहा—देवर ! देख आओ।

—झूठी बात। मैं जानती हूँ, मैं समझती हूँ। जानती हो, मैं सब समझती हूँ। मेरे बाप के घर जायगा ? उससे तो गायक–मण्डली में चार दिन भंग पीना, भूतों की नाच नाचना अच्छा है। मैं सब जानती हूँ।

मानदा तेजी से खलिहान घर पार कर मकान के भीतर चली गयी।

खलिहान घर में उस ओर की दीवार में एक दरवाजा है। उसी दरवाजे को जोर से ठेल कर वह भीतर घुस गयी। कादम्बिनी खड़ी रही। थोड़ा सोचकर बोली, तू ठीक जानता है नोटन, छोटा मण्डल आज कई दिनों से नवग्राम की गायक मण्डली में मतवाला होकर वहीं है?

—यह देखो! मैंने अपनी आँखों देखा है। रोज देखता हूँ।

—बतलाया नहीं क्यों?

—उसकी बात क्या कहूँ? छोटे मालिक ने कहा—नोटन, घर न कहना, नहीं तो धमाधम पीटूँगा। छोटे मालिक का घूँसा जैसा कड़ा है, वैसा ही भारी भी।

—हूँ। कादम्बिनी मकान की ओर चली।

नोटन पीछे से बोला, बड़ी मालकिन?

—क्या?

—किन्तु छोटे मालिक देवीपुर गये थे?

—गये थे? तो नवग्राम में कैसे रहे?

—यह देखो, छः कोस छः कोस और बारह कोस का रास्ता छोटे मालिक के लिये कितनी देरका है? उस दिन सवेरे गये और दूसरे दिन लौट आये। आकर नवग्राम में ही जम गये। भंग खायी है, बम बम करते हैं, और लेटे हैं। सुना है दस रुपये चन्दा दिये हैं।

—दस रुपये?

—हाँ।

—दस रुपये?

—जी हाँ। छोटी मालकिन ने बाप के घर देने के लिये तीस रुपये दिये थे। उनमें से दस रुपये छोटे मालिक ने खैरात कर दिया है।

—तुझे किसने बतलाया ?

—दूसरा कौन ? खुद छोटे मालिक ने। पहले ही दिन की बात है, जिस दिन गये, उसी दिन नवग्राम में चन्दा देकर सोचते थे क्या करूँ ? इसी समय मुझसे भेंट हो गयी। कहा—दस रुपये तू उधार ला दे नोटन। कह दूँगा, बड़ी बहू दे देंगी। फिर क्या करता ? ला दिया।

बड़ी बहू कादम्बिनी के मुँह पर थोड़ी हँसी फूट पड़ी। हँसते हुए ही बोली, और किसी से न कहना नोटन, तेरा रुपया मैं दे दूँगी।

यह कह कर वह घर में चली गयी।

घर के आँगन में चना, मटर फैली हुई है। पास ही दो टोकरियों में कुछ भरी हुई हैं। देखते ही मालूम हो जाता है कि दोनों बहुयें चना भरते-भरते ही चली गयी थीं।

एक बकरी उन्हें आजादी से खा रही है। उसके दो बच्चे पीछे खड़े हैं, कूद रहे हैं।

छोटी बहू मानदा एक बरामदे में दीवार से लगकर रो रही हैं।

बड़ी बहू ने घर में घुसते ही बकरी भगा दी—मर जा सर्वनाशी, निकल जा, दूर हो।

बकरी भाग गयी।

बड़ी बहू ने टोकरी खींच कर कहा, तू बैठी-बैठी देख रही थी मानू ? भगाया नहीं।

—मेरी इच्छा। मेरी खुशी।

—तेरी खुशी ?

—हाँ। खुशी। क्यों भगाऊँ ? क्या गरज ? इस परिवार में मेरा क्या है ? क्या होगा ?

बड़ी बहू चने उठाते-उठाते बोली, इतना क्रोध न करो। दिन-दोपहर को मत रोओ। रोना अच्छा नहीं है। रोने का कोई कारण भी नहीं है। तू नोटन से पूछ आ, देवर देवीपुर गये थे। किन्तु हाँ, एक दिन से अधिक ठहरे नहीं। वहाँ से लौट कर नवग्राम में डेरा डाला है। आ, चने भर।

—मैं नहीं भर सकूँगी।

—भरना होगा। आ।

—तुम महारानी हो सकती हो, मैं तुम्हारी दासी नहीं हूँ। परिवार भाड़ में जाय, मेरा क्या?

इसी बीच एक टोकरी भर गयी। उसको काँख में दबाकर घर में ले जाते समय मानदा के पास रुक कर बोली, तेरे तीस रुपये देवीपुर में बाप के हाथ में पहुँच गये मानू! देवर दे आये हैं। परिवार भाड़ में जाने से फिर कभी भेजा नहीं जा सकेगा। जाकर मटर भर ले। झंझट मत बढ़ा।

वह घर में चली गयी।

मानदा चौंक पड़ी। घर की ओर मुँह फेर कर बोली, क्या कहा? तुमने क्या कहा?

घर के भीतर से ही कादू ने जवाब दिया; कुछ नहीं कहा। कहती हूँ, चने उठा ले।

मानदा घर की ओर बढ़ गयी—नहीं, रुपये के विषय में क्या कहती हो?

कादम्बिनी ने बाहर निकल कर हँस कर कहा,—मैं रुपये के विषय में नहीं कहती हूँ। क्या बता सकती हो आज कौन तारीख है? इतना कहते

ही मुँह पर उँगली रख कर उसने चुप रहने का संकेत किया और खुद खिड़की से झाँकने लगी।

घर में सिताब खाता-पत्र लेकर हिसाब कर रहा था। उसकी उम्र बत्तीस वर्ष की है। सूखा शरीर, विरक्ति भरा मुँह। एक जोड़ी मूँछें। वह गर्दन ऊँची कर कान लगा कर सुन रहा है। बात बन्द होने पर साव-धानी से उठा और पैर दबा कर खिड़की के पास आड़ में खड़ा हो गया। उधर पास का दरवाजा ठेल कर बड़ी बहू ने घर में घुस कर कहा, यह क्या रहा है?

सिताब चौंक पड़ा और उत्तर में प्रश्न किया, क्या?

—वही तो पूछती हूँ। यहाँ आड़ में क्यों खड़े हो?

—आड़ में क्यों खड़ा होऊँ?

—तो करते क्या हो?

—कुछ नहीं। वह लौट कर तख्तपोश पर बैठ गया। इसके बाद बोला, इस भरी दुपहरी में तुम दोनों झगड़ती क्यों हो? पहला वैशाख, शुभ दिन, तुम लोग क्या सोचती हो? क्या सोचती हो?

बात कहते-कहते उसकी बातों में गर्मी बढ़ने लगी।

उधर ढोल का बाजा क्रमशः स्पष्ट होने लगा।

बड़ी बहू कादम्बिनी ने कहा, झगड़ा? कौन झगड़ा करता है? किससे? तुमने झगड़ा कहाँ देखा? हम दोनों थोड़ा जोर से बातें करती हैं। उसीका नाम झगड़ा है! तुम इस प्रकार आड़ में छिप कर सुनने गये थे?

—सुनूँगा नहीं? छोटी बहू ने रुपये के विषय में क्या कहा? तुमने

छिपाया, नहीं रुपया नहीं, तारीख-तारीख ? मैं तुम्हारा पति हूं। मेरे पैर पर हाथ रख कर बोलो।'

—हाय ! हाय ! हाय ! कोई शब्द जब खट से होता है तो बिल्ली समझती है कि चूहा है और चोर सोचता है कि पहरेवाला है। और रुपये की बात से तुम्हारी गर्दन हिलती है। वही सुन कर तुम आड़ से सुनने गये थे !

—जाऊँगा नहीं ? रुपया कितने कष्ट से होता है ? कितने दुःख का धन है ? कहाँ, सात हाथ मिट्टी खोद कर रुपया तो रुपया एक पैसा लाओ तो कहूँ ! मैंने बड़े कष्ट से परिवार बनाया है। पिता का ऋण चुकाया, दस रुपया लेन-देन करता हूँ। माँ लक्ष्मी को प्रसन्न किया है। तुम लोग मेरा वही रुपया तहस-नहस कर दोगी ? इससे तो—इससे तो—

—इससे तो रुपये की तौल बराबर तुम्हारा चमड़ा काट लेने पर तुम्हें कम दुःख होता है, यह मैं जानती हूँ। किन्तु निश्चिन्त रहो, तुम्हारे रुपये का कोई अपव्यय नहीं करता।

'—नहीं करता ! मैं नहीं जानता, नहीं समझता ? अच्छा हाँ, रुपया-रुपया कर क्या कह रही थी ?

—कह रही थी मानू का बाप बीमार है, देवर देवीपुर देखने गये—रास्ते के खर्च के लिये पाँच रुपये भी तो देना उचित था। इसीसे मानू से कहती थी कि ससुर न दें, पति न दें, तुम तो अपनी नाक की लवंग बेच कर भी दे सकती थी। तेरा ही बाप है। इसी पर वह चिढ़ गयी।

—उहूं ! बना कर कहती हो। झूठ बोलती हो। मेरा पैर छूकर कहो।

—तुम अत्यन्त अविश्वासी, अत्यन्त कुटिल हो। छिः-छिः-छिः।

—मैं अविश्वासी कुटिल हूँ ?

—हाँ, केवल इतना ही नहीं, तुम कृपण हो, तुम अभद्र हो ?

—काढू !

—छोटी बहू के बाप की बीमारी में तुम्हें पथ्य के लिये दस रुपये देना उचित नहीं था ? भिखारी को भीख देने में तुम्हारी छाती टन-टन करती है। तुम्हारे रुपये-पैसे को धिक्कार है !

ढोल की आवाज खूब तेज हो गयी।

बड़ी बहू घर से बाहर निकल गयी।

सिताब उठ कर बोला, अब मरन है ! ढोल मेरे घर क्यों रे बाबा ? अब मरन है।

उसने दरवाजा खोल झाँक कर देखा।

उधर दरवाजे से होकर आँगन में गायक-मण्डली घुस रही थी।

शिव बन कर महताब नाचता है। लम्बा, चौड़ा बलिष्ठ शरीर है।

शिव उसको अच्छा फब रहा है। दाढ़ी, मुँह और जटाओं से वह पहचाना नहीं जाता है।

गायक-मण्डली ने गाते-गाते प्रवेश किया। वह गाते हैं—गाती हैं पार्वती की सखियाँ, जया-विजया।

शिव हे शिव हे, ओ शिव-शंकर हे !
हाड़माला फूल की फूलमाला पहने हे।
ओ शिव शंकर हे !

हाय-हाय-हाय-हाय
फूल सूख जाय—

गले के विष—ज्वाल से जरजर हे।

शिव—ताथेइ थेइ ता थेइ थेइ—बम बम

हर हर—सब हर हर। (नाचना)

जया-विजया— हाय रे हाय रे—

मदन जल राख रे—

घर में रोवें पार्वती

झर झर हे—!

नाच में नाचे शिव सम्बर हे।

शिव शंकर हे!

गाना समाप्त होते ही शिव-वेषी महताब ने भिक्षा की थाल पसार दी। घर में से निकल कर सिताब बोला, क्या ?

यह सब क्या है ?

बड़ी बहू बोली, तुम ठहरो। मैं ला देती हूँ।

—नहीं, सब बेकाम का काम। हमारे गाँव में गायक-मण्डली नहीं है, तो तीन गाँव से गायक-मण्डली ! दिन-दिन नयी फसाद !

बड़ी बहू फिर आयी। उसने शिव के हाथ से थाली खींच ली और उसमें दो रुपये डाल कर उसे दूसरी ओर बढ़ा दिया।

सिताब बोला, यह क्या ? दो रुपये ? दो रुपये क्या लड़कों का खेल है ?

—ठहरो, बतलाती हूँ। ये रुपये तुम्हारे नहीं हैं। लो, तुम लोग ले जाओ। कह कर शिव के अलावा एक दूसरे के हाथ में दे दिया। इसके साथ ही साथ शिव का हाथ पकड़ कर कहा, नहीं। अब तुम नहीं जाओगे।

बहुत नाच चुके। बहुत भंग खा चुके। देवीपुर जाने के लिये पाँच दिनों से लापता हो। राख मल कर, भस्म मल कर नाचते-फिरते हो! छिः छिः छिः! तुम सब चले जाओ। बहुत मण्डली हो चुकी। जाओ। यह लो अपनी जटा, दाढ़ी, मूँछें लो। उसने दाढ़ी, मूँछें—जटा खोल कर फेंक दी।

महताब ने दो बार कस कर पकड़ा अन्तमें कातर भावसे अनुरोध किया, बड़ी बहू! भाभी! तुम्हारे पैरों पड़ता हूं, मैं पैरों पड़ता हूँ।

मानदा खड़ी-खड़ी देख रही थी। महताब का स्वरूप प्रकाश में आते ही घूँघट काढ़ कर बोली, मरन! कह कर घर में चली गयी।

— इससे मुझे पाप नहीं लगेगा। किन्तु इस प्रकार मण्डली बना कर तुम्हें घूमने नहीं दूँगी।

इसके बाद दलवालों से बोली, तुम लोग चले जाओ। बात क्यों नहीं सुनते? मण्डली दिखाने आकर मण्डली देखने लगे। संसार में मण्डली की कमी है? किसीके घर तो ऐसी मण्डली नहीं है? सबके घरों में होती है—क्या हम लोग उसे देखने जाते हैं?

अब महताब चिल्ला उठा, जाओ, जाओ, सब बाहर चले जाओ। मैं नहीं जाऊँगा, नहीं जाऊँगा। भागो, भागो।

उधर सिताब बरामदे में अपने मन से टहल रहा था और कह रहा था, हुँ, हुँ, इतनी फसाद! हुँ, अब मान-सम्मान नहीं रहा।

धमकी पाकर मण्डली बाहर चली गयी।

रास्ते पर आकर दल में कहा-सुनी शुरू हो गयी। नन्दी ने अपनी जटा खोल कर फेंक दी और क्रोध में भर कर कहा, तभी कहा था, पगले

को दल में न लो। उस समय सबने कहा, दस रुपये चन्दा देगा। चेहरा अच्छा है, गाने का गला अच्छा है। अब हुआ न ?

विजया खिलखिला कर हँसी और बोली, आइ बोचा इस बार शिव नहीं बना, इसलिये क्रोधित है।

—खबरदार कहता हूँ बदमाश छोकरे। एक थप्पड़ में तुम्हारा मुँह टेढ़ा कर दूँगा।

—चुप चुप, झगड़ो मत। चलो, चलें रास्ते में बोचा को शिव बना कर चलेंगे। कौन जानता था कि वह ऐसा करेगा ? यह बात कही—आधुनिक कपड़े-लत्ते पहने हुए मैंट्रिक फेल किसान-पुत्र घोंतन घोष ने।

—कौन जानता है ! क्यों, महताब का सिर बचपन से ही खराब है, इसे कौन नहीं जानता ?

जो लड़का विजया बना था, देखने में कुत्सित, खूब पतला, रंग काला है। उसने फिर हँस कर कहा—बोचा के शिव बनने पर मैं दुर्गा बनूँगा। रमना होगा विजया। मुँह में कपड़ा देकर वह हँसने लगा।

अकस्मात जोर से क्याँ—च शब्द कर मंडल-बाड़ी के बाहर का दरवाजा खुला और गला साफ कर सिताब बाहर निकला।

जनता सन्न हो गयी। एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। दलपति घोंतन ने भौंहे टेढ़ी कर कहा, चलो-चलो। इतना कह कर वह सबसे आगे तेजी से चलने लगा।

उसके पीछे-पीछे सब लोग।

सिताब ने पुकारा घोंतन ! घोंतन !

दल के एक आदमी ने कहा, घोंतन दादा, बड़े मण्डल पुकारते हैं।

—पुकारे। गला फाड़ कर मर जाय। बेटा मुझसे धान पायेगा। चले आओ।

वह तेजी से चलने लगा।

सिताब रास्ते पर चला आया।

घोंतन को अपनी बात अनसुनी करता देख क्रोधित हो गया और चिल्ला कर बोला, मैं नालिश कर दूँगा।

अब घोंतन लौट कर खड़ा हो गया और बोला, करो। महताब पावना धान छोड़ देगा, यही इकरार करा कर मैंने उसे शिव का पार्ट दिया था। लोग साक्षी देंगे। बोल बोंचा यह ठीक नहीं है?

सिताब चौंक पड़ा

कुछ देर तक क्रोधित दृष्टि से देख कर तेजी से घर की ओर चला गया।

घर में जाकर देखा—आंगन में एक चौकी पर महताब बैठा है और किसान नोटन आंगन के कोने के कुँये से जल काढ़ रहा है, चरवाहा सिर पर उँडेल रहा है। महताब खूब आराम से स्नान कर रहा है, बीच-बीच में मुँह में जल भर कर फू-फू कर ऊपर आसपास छोड़ता है। बड़ी बहू बरामदे में खड़ी है। उसके हाथ में गमछा है। पास ही रस्सी पर धोती झूल रही है। बड़ी बहू की गोद में महताब का पाँच वर्ष का हृष्ट-पुष्ट पुत्र-मानिक—है।

बाप के जल फेंकने का ढंग देख कर वह खूब हँस रहा है। उससे कहा, पिता जी क्या करते हैं? बा- माँ?

कादू ने नोटन और चरवाहे से कहा, हो गया, बहुत हो गया। अब रहने दो।

महताब बोला, उहूँ, नहीं हुआ, अब भी नहीं हुआ।

डाल, नोटन डाल। कहकर पानी फेंका—फूः।

मानिक बोला—पिता क्या करते हैं ?

—गंगा गिरती है रे बेटा। शिव के सिर पर गंगा गिरती है। इसके बाद गाने लगा—

झर झर झर झर गंगा झरे
सिर पर गंगाधर के रे।
झर झर झर झर—फूः
मैं शिव हूँ रे बेटा, मैं शिव हूँ।

सिताब खड़ा होकर थोड़ी देर देखता रहा, इसके बाद हुँ, छि-छि-छि! छिः-छिः! कहकर आंगन पार होकर बरामदे में चला गया। घर में जाते समय खड़ा होकर बोला, घर की लक्ष्मी के केश मुट्ठी में पकड़ कर उसे बनवास देने का रास्ता पकड़ा है रे महताब। छिः।

इस बार महताब बिजली छुये हुए के समान उठ कर खड़ा हो गया। — क्या ?

बड़ी बहू कादम्बिनी ने शंकित कण्ठ से पुकारा, महताब!

महताब आगे बढ़ कर बोला, नहीं नहीं नहीं। मैं जानना, चाहता हूँ कि यह मक्खीचूस कृपण क्या कहता है। झूठी बात मैं नहीं सुनूँगा।

अब बड़ी बहू ने महताब के पुत्र को उतार दिया और आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ कर कहा, छिः बड़े भाई बड़े हैं, उनको ऐसी बात कहते हो! मैं कितने दिन मना कर चुकी!

महताब बोला, वह झूठी बात क्यों कहेगा ? मैं तुम्हारा केश पकड़ कर बनवास दूँगा—मैं!

सब अवाक् होगये।

सिताब बोला, तेरा सिर खराब है। बुद्धि कम है। अन्त में बहरा भी होगया क्या ? मैं घर की लक्ष्मी की बात कहता हूँ। बड़ी बहू की बात कब कही ?

—कब कही ? बड़ी बहू ही तो घर की लक्ष्मी है।

बड़ी बहू हँसने लगी, मैं मरी। लो, बहुत हो चुका। अब सिर पोंछ कर धोती छोड़ दो और खाने चलो ! आओ।

—जायगा, इसके पहले थोड़ा ठहर जाओ। महताब रुपये कहाँ पाया ? दस रुपये चन्दा दिया है, गायक-मण्डली में शिव बनने के लिये—तुमने दिया है ?

—नहीं। छोटी बहू, छोटी बहू ने दिया है।

बड़ी बहू ने मुँह की बात काढ़ कर कहा, हाँ हाँ। मैंने छोटी बहू को बाप के पथ्य के लिये दिया था। महापुरुष ने उसीको मण्डली में दान किया है। हाँ, वे रुपये मैंने दिये हैं। तुम्हारे परिवार का एक दाना या एक तांबे का टुकड़ा मेरे लिये विष के समान है। तुम्हारी गृहस्थी की आवश्यकता के अलावा मैं कुछ नहीं छूती, यह तुम जानते हो। मैंने अपनी माँ का गहना पाया है, उसीकी बिक्री के रुपयों में से दिया है। उसको लेकर गोखरू साँप की तरह फुफकारो मत। आओ देवर।

महताब का हाथ पकड़ लिया और उसे खींचते हुए घर में घुसी। घुसते समय सूखी धोती उसके कन्धे पर फेंक दी।

घर में एक ऊँचे किनारे की थाली में बहुत सा भात, एक बड़ी कटोरी

में 'आमानी' अर्थात् माँड़, एक कटोरी में दाल, तरकारी की अनेक कटो-
रियाँ, एक ग्लास जल। मोटा भारी और बड़ा एक लकड़ी का पीढ़ा।
पास ही मानदा सिल-लोढ़ा लेकर मटर पीस रही है। घस-घस शब्द कर
पिसाई हो रही है।

महताब को बड़ी बहू ने लाकर पीढ़े पर खड़ा कर दिया, लो बैठो।

महताब बैठ कर देखने लगा कि क्या-क्या है?

बड़ी बहू बोली, जो तुम्हें अच्छा लगता है, वही है। माड़, तरकारी,
मटर की दाल, खटाई—सब है और उधर तुम्हारी सरस्वती देवी मटर
पीस रही है।

—क्या? सरस्वती देवी मटर पीस रही हैं? क्या पीसती हो सर-
स्वती देवी?

—जब मैं लक्ष्मी हूँ, तो मानू सरस्वती क्यों नहीं? मेरी छोटी
बहिन है न!

—अच्छा! समझदार के समान महताब सिर हिलाने लगा।

—सिर मत हिलाओ। खाओ।

अब महताब खाने पर टूट पड़ा।

उधर सिताब बरामदे में एक हाथ में हुक्का और दूसरे में चिलम पकड़
कर फूँक रहा था। वह आगे की ओर पीछे फिर कर घर की दीवार की
ओर मुँह किये हुए बैठा था। बीच-बीच में विरक्ति से कहता था, हुँ!
लक्ष्मी! साक्षात् अलक्ष्मी! घर की लक्ष्मी भगा देगी। हुँ! दस रुपये!
दस रुपये छोटी चीज है! हुँ!—कहकर चिलम हुक्के पर रखी और कश
खींचते-खींचते घूम कर खड़ा हो गया। अब उसने देखा, कि आँगन

में बाप की चौकी पर बैठ कर मानिक ने शरीर और मुँह में कीचड़ लगा ली है और मुँह में जल डाल कर फू-फू कर रहा है।

सिताब हाँ-हाँ कर उठा यह, यह कैसी विपद है! यह क्या हो रहा है आँय! वह आंगन में आकर मानिक की ओर चला।

मानिक बोला, छिव बनूँगा, छिव। फूँ शब्द कर जल छिड़कने लगा।

—छि-छि-छि: ! अरी बड़ी बहू! सुनती हो! देखो मानिक क्या कर रहा है?

छोटी बहू बाहर निकल आयी और मानिक की अवस्था देख कर उसे गोद में उठा लिया। उसने दबी हुई जबान से क्रोध के साथ कहा, दुष्ट लड़के कहीं के!

—छिव, छिव, मैं छिव।

—छिव? क्यों न होगा? ऐसा न होने पर मेरे सिर की चिता की आग बुझ जायगी न! शिव होगा? शिव होगा? उसने लड़के की पीठ पर चपत जमा दी, मानिक रो पड़ा।

सिताब क्रोधित होकर बोला, छोटी बहू! मारो मत। मानदा ने फिर एक घूँसा जमा दिया।—हरामजादा बदजात—

सिताब ने फिर कहा—छोटी बहू! तुमने गर्भ में धारण किया है, इसीसे मानिक केवल तुम्हारा ही नहीं है। बड़ी बहू, ओ बड़ी बहू!

बड़ी बहू बाहर निकल आयी।—मानू!

मानू ने गर्म होकर ही कहा, क्या?

—भसुर मना करते हैं, फिर भी तुम मारती है?

—मारूँगी नहीं। देखो न क्या किया है? मेरी धोती कैसी हो गयी?

—कपड़ा बदलने से ही काम चलेगा। दे, मुझे दे।

—नहीं। अनुचित प्यार से एक आदमी का सिर फिर गया है। और नहीं!—इतना कह उसे गोद में लेकर घर में चली गयी।

—क्या? क्या कहा छुटकी?

सिताब टहलते-टहलते हुक्का पी रहा था। उल्टे मुँह घूम कर उसने कहा, छोटी बहू ने झूठी बात नहीं कही है बड़ी बहू। महताब का सिर तुमने ही फेर दिया है। छोटी बहू ठीक कहती है।

बड़ी बहू के जवाब देने के पहले ही महताब दाल-भात लगा हुआ दाहिना हाथ चाटते-चाटते बाहर निकल कर बोला, सरस्वती! झगड़ालू सरस्वती—यह दुष्ट सरस्वती—यह दुष्ट सरस्वती है।

बड़ी बहू बोली, सब खा लिया? नहीं, न खाकर झगड़ा करने चले आये, झगड़ालू देवता।

—चटपट! चटपट खा लिया।

—तो हाथ धोओ और जाकर सो जाओ। मैं देखूँ। मानू—ओ मानू! कह कर घर में चली गयी। महताब जल का लोटा लेकर हाथ धोने लगा।

सिताब बोला, तूने मण्डली में केवल दस रुपये चन्दा ही नहीं दिया है, बल्कि घोंतना घोष का पावना धान भी छोड़ दिया है?

महताब उसके मुँह की ओर देखा—हाँ हाँ। कागज पर लिख दिया है। सब धान छोड़ दिया—श्री महताब मण्डल। छोड़ दिया है। घोंतना

के घर गया। उसकी माँ रोने लगी। कहा—बाबा, घोंतना तो कुर्ता-धोती पहन कर घूमता-फिरता है, यात्रा करता है, खेती नहीं करता। भागीदार खेती करके जो कुछ दे जाते हैं, उससे काम नहीं चलता। ऋण कैसे चुकाऊँ ? घोंतना के बच्चों की हालत छिपकली के समान है। इसीसे छोड़ दिया। हाँ, छोड़ दिया। लिख दिया है। एकदम कागज पर लिख दिया है।

—लिख दिया है ?

—हाँ एकदम लिख दिया है।

—इसके बाद ? हम लोगों का क्या होगा ?

मानिक को गोद में देकर मानदा बाहर निकल आयी। वह बोली—उसी घोंतना के बच्चों की तरह छिपकली सी हालत होगी। कह कर जिस घर में बड़ी बहू गयी थी, उसी में चली गयी।

महताब जल उठा।—तेरे पीठ पर धमाधम घूसे लगाऊँगा। अरे ! मेरा लड़का छिपकली के समान होगा ? महताब अपने हाथ खेती करता है। भीम है। महताब भीम है। घोंतना को जितना धान छोड़ दिया है, उतना धान इसबार अधिक छिटूँगा। उसने दम्भ के साथ अपनी छाती ठोंकी।

बड़ी बहू फिर बाहर निकल आयी। वैसा ही करना, वैसा ही छीटना। अब जाकर सो जाओ। जान पड़ता है चार रात आँख नहीं लगी है। जाओ। देवर जाओ।

—जाता हूं। मैं जाता हूं।

महताब घर में जाने लगा।

सिताब बोला, लक्ष्मी अब इस घर में नहीं रहेगी। मण्डलवाड़ी की लक्ष्मी की गर्दन पकड़ कर सब बाहर कर रहे हैं। सब उस समय की बात इतने ही दिनों में भूल गये? हाय रे हाय! हाय रे हाय!

हुक्का और चिलम उतार कर सिताब चला गया। वह हाय रे हाय! हाय रे हाय! कहते-कहते ही गया।

महताब ने हुक्का-चिलम उठा कर बड़े भाई पर ताना कसा—हाय रे हाय! हाय रे हाय! इसने अच्छी बोली सीख ली है।

द्वितीय परिच्छेद

महताब ने बात झूठी नहीं कही है। यह 'हाय रे हाय' सिताब के मुह में लगा ही रहता है। वह उठते-बैठते कहता—उन दिनों की बात इतनी जल्द भूल गये! हाय रे हाय! हाय रे हाय! अर्थात् वह बात सभी भूल गये हैं, अगर नहीं भूला है तो सिताब। इस बात में सिताब के जीवन का परम अहंकार छिपा हुआ है। अधिक दिनों की बात नहीं है, जब सिताब के बाप प्रताप मण्डल मरे, उस समय सिताब की आयु थी बारह और महताब की छः। उनके बीच कोई भाई नहीं था। प्रताप की मृत्यु के कुछ महीने बीतते न बीतते महाजनों ने एक के बाद एक तीन नालिशें कर प्रताप की सम्पत्ति कुर्क करा दी।

प्रताप मण्डल ठाठ-बाट वाला पुरुष था। उसका नाम भी प्रताप था और

काम में भी प्रताप था। गाँव का मुखिया, जमींदार का मण्डल, यूनियन बोर्ड का मेम्बर आदि बहुत कुछ था। गाँव के पास आधे शहर लक्ष्मीपुर के व्यवसायी महाजन बाबुओं के यहाँ भी इज्जत थी। उसका मन उदार था। वह दुर्दान्त मनुष्य था। घर में खेती की धूम थी। लक्ष्मीपुर के बाबू भी अकाल के समय उससे धान उधार लेते थे। हठात् प्रताप मण्डल व्यवसाय में उतर पड़ा। उतरा ऐसे व्यवसाय में जिससे उसका कुछ परिचय न था। उसने यूनियन बोर्ड के सेक्रेटरी जगाई पाठक को शून्य भागीदार बना कर ठीकेदारी का काम प्रारम्भ कर दिया।

उस समय सन् १९२६—२७ ई० थी। सारे देश में यूनियन बोर्ड बन गये थे। प्रताप मण्डल के बोर्ड में हठात् वर्ष के अन्तिम भाग में खबर मिली—सरकार पीने के जल के कुएँ खुदवाने के लिए रुपये देगी, किन्तु यूनियन बोर्ड को उसकी चौथाई रकम देनी होगी। एक-एक कुएँ में पाँच सौ रुपयों का खर्च है, इसलिये यूनियन बोर्ड को एक सौ पचीस के लगभग देना होगा। प्रताप ने अपने गाँव में कुएँ के लिये चन्दा लेने की कोशिश की, किन्तु बहुत दौड़-धूप करने और पैर में धूल लगाने के बाद भी पचीस रुपये कई आने से अधिक न मिले। इसी समय जगाई पाठक ने उसे परामर्श दिया—मण्डल, एक काम करो। तुम कुएँ का ठीका ले लो। ठीकेदारी में लाभ है न, उसीसे वह रुपया निकल आयेगा। मैं देख-सुन कर सब ठीक कर दूँगा।

भय ही भय में प्रताप काम में उतरा। किन्तु कुआँ समाप्त होते ही भय कट गया और वह उत्साह से मतवाला हो गया। ठीके अर्थात् कण्ट्राक्ट में जो लाभ हुआ, वह देय अर्थात् चौथाई रुपयों से कुछ अधिक

ही था । लोकल कण्ट्रीब्यूशन अर्थात् स्थानीय चन्दे से चौथाई अर्थात् पच्चीस प्रतिशत देना था, उसके स्थान में लाभ हुआ पैंतीस प्रतिशत। बिल भुगतान कर प्रताप के हाथ में नगद पचास रुपये रखते हुए सेक्रेटरी पाठक ने कहा—दस रुपये पूजा दो मण्डल, पन्द्रह रुपये मेरे, पच्चीस रुपये तुम्हारे।

प्रताप की दोनों आँखें जल उठीं।

पाठक बोला, फिर भी कुएँ के काम में कम लाभ है। यदि सड़क या पुल का ठीका होता तो देखते आधा खर्च आधा लाभ। रुपये से रुपया आता है। करोगे ठीके का काम? यूनियन बोर्ड नहीं, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का ठीका। लोगे?

प्रताप कुछ नहीं बोल सका, सेक्रेटरी पाठक का मुँह देखता रहा। पाठक चतुर आदमी है, उसकी उपमा देकर लोग कहते हैं, मृगेल मछली। वह डूब कर चलती है और सामने तैरती भी है। प्रताप की दृष्टि का अर्थ समझते उसे देर न लगी। तालाब के जल में बंशी के सामने मछली स्थिर होकर खड़ी है। हँसकर पाठक बोला—सड़क के काम में है पत्थर बिनकर जमा करना, कंकड़ खोद कर निकालना और फिर बैलगाड़ी पर ढोकर फेंक देना। आलमपुर के बाबुओं की जमींदारी ही सड़क के काम के पैसे से खरीदी गयी है। इसमें कच्चा पैसा है। ओवरसियर के पाकेट में दस रुपये डाल देने पर वह माप में बढ़ाकर बीस रुपये तुम्हें कमवा देगा। लग जाओ। मैं तुम्हारा सब देख-सुन दूँगा। मुझे कुछ दे देना। शून्य भागीदार बना लेना।

पाठक ने एक बात भी झूठ नहीं कही थी। आलमपुर के विख्यात

जमींदारबाड़ी का अभ्युदय इसी सड़क के काम की कण्ट्राक्टरी से ही हुआ है। प्रायः एक सौ वर्ष पहले दो जिलों की बड़ी-बड़ी सड़कों के बनाने और मरम्मत पर उनका एकाधिकार था। इसी ठीकेदारी के लाभ से ही आलमपुर के चौधरियों ने तीस हजार रुपये आय की जमींदारी खरीद कर खेती के स्थान में दलीलों-दस्तावेजों में पेशा जमींदारी लिखना शुरू किया था और ओवरसियर के पाकेट में लिफाफे में रख कर रुपये डालने की बात कौन नहीं जानता? बाइसिकिल पर सवार 'हैट कोट' पहने ओवरसियरों को उसने देखा है। यूनियन बोर्ड का मेम्बर होकर उनके साथ आलाप-परिचय भी हुआ है। अतएव—।

अतएव वह उतर पड़ा और उतरते ही लम्बी डगें भरने लगा। पहले वर्ष लाभ हुआ एक हजार रुपयों से कुछ अधिक। प्रताप ने मूलधन लगाया था तीन हजार से कुछ कम। तीन हजार में एक हजार लाभ। दूसरे वर्ष उसने मूलधन बढ़ाकर आठ हजार कर दिया, एक घोड़ा खरीदा, तीन सेकण्ड हैण्ड बाइसिकिलें खरीदीं और पाठक के एक साले और एक भतीजे को तीस रुपये मासिक वेतन पर काम देखने के लिए नौकर रखा। चार-पाँच सन्थाल सरदार अर्थात् गैंग सरदार, तीन बैलगाड़ियों के सरदार और एक राज-मजदूरों का सरदार नियुक्त कर धूम-धाम से काम शुरू कर दिया। अपने घोड़े पर सवार होकर घूमने लगा। पाठक घूमता एक नयी बाइसिकिल पर। पहले तीन वर्षों तक उसके सब कामों का केन्द्र अपने घर पर ही था, बाहर के घर में ही चूना, सिमेण्ट, फावड़े, कुदाल, खाता-पत्र रहते; चौथे वर्ष नवग्राम में भाड़े पर घर लेकर आफिस खोल दिया। खाते-पत्र में बाहर का काम चलने लगा; पाठक को सदर शहर में डिस्ट्रिक्ट

बोर्ड आफिस में बिल हिसाब के लिये महीने में पन्द्रह दिनों से अधिक रहना पड़ता, इसलिये वहाँ एक घर भाड़े पर ले लिया।

प्रताप मण्डल ने मण्डल उपाधि त्याग कर घोष उपाधि धारण कर ली। गाँव की जाति-बिरादरी के साथ झगड़ा न करने पर भी दूसरा बन गया। कपड़े-लत्ते, बात-चीत में वह पराया हो गया। दलील-दस्तावेजों में उसने खेती की जगह 'व्यवसाय' पेशा लिखना शुरू किया। घर में प्रताप की स्त्री को शंका हुई। प्रताप उससे थोड़ा सभ्य होने के लिये प्रायः कहा करता। जब किसान का परिवार था, तब जो किया, जो पहना और जो कहा, सब ठीक था। अब सभ्य लोगों की चाल-ढाल सीखनी पड़ेगी। अब गोबर लीपना, कपड़ा उबालना छोड़ दो। बीच-बीच में कहता 'यहाँ के घर-मकान जो हैं, रहें, नवग्राम में यह मकान बनवायेगा।' दूसरी ओर यूनियन बोर्ड की मेम्बरी पर वक्र व्यंग दृष्टि डाल कर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर बनने का आयोजन किया। इसी समय अकस्मात् एक दिन कहीं से टायफाइड से ग्रस्त होकर बिछौने पर पड़ गया और चौबीस दिनों में मर गया। प्रताप की स्त्री जगाई पाठक को बुला कर बोली—पाठकजी, अब क्या होगा?

पाठक ने कहा—यही तो! मैं तो सिरपर हाथ धर कर बैठ गया। दो हजार रुपये न होने पर सब काम बन्द हो जाँयगे।

प्रताप की स्त्री चौंक पड़ी।

पाठक ने जो कहा वह यह है। एक बड़े पुल का ठीका था, पुल बना भी, किन्तु फट गया। सड़क के ठीके में कंकड़ पत्थर जो मौजूद किया गया था, नये ओवरसियर ने उसकी ठीक माप नहीं दी। प्रायः छः आने के

परिमाण में काट दिया। सब बिल अटके पड़े हैं। इधर गाड़ीवानों, राज-मिस्त्रियों और कुलियों की तीन सप्ताह की मजदूरी बाकी है। तहवील खाली है। "इस समय कम से कम हजार रुपयों की आवश्यकता है। यह विपत्ति का समय है। रुपयों की बात मुँह से नहीं निकलती। किन्तु बिना बोले चलता भी नहीं। गाड़ीवानों, कुलियों और राजमिस्त्रियों की बातें सुन कर मेरे हाथ-पैर पेट में घुस गये हैं। वे बक रहे हैं कि मुझे पकड़ कर मारेंगे और—।"

दो बार थूक घोंट कर बोला—"और कहते हैं कि दल बनाकर आयेंगे और तुम लोगों को दबायेंगे। बिना खाये तो वे काम नहीं कर सकेंगे!"

प्रताप ने जाति-बिरादरी छोड़ दी थी, गाँव के लोग भी अलग खड़े हो गये थे। प्रताप की मृत्यु पर उन्होंने प्रत्यक्ष शत्रुता तो नहीं की, किन्तु सहायता के लिये एक कदम भी आगे न बढ़े। अपने दरवाजों पर बैठ कर अधिकांश लोगों ने कहा—ऐसा होगा, यह तो जानी बात है।

* * * *

उन दिनों की बातें सिताब को याद हैं। बाप प्रताप मण्डल की ठीके-दारी की धूम-धाम के समय उसने भी बाप की तरह अपने को गाँव के सब लड़कों से अलग सोचना शुरू किया था और महताब एकदम लाड़ला गोपाल बन गया था। बचपन से ही महताब सरल चंचल है। बाप की अवस्था अकस्मात् उन्नत हो जाने से वह दुर्दान्त बन गया।

सिताब को सब याद है।

यूनियन बोर्ड के सेक्रेटरी पाठक ने उस दिन जो कहा था गाड़ीवान

और मजदूर दल बनाकर पावने के लिये आयेंगे और गोला तोड़ कर धान बेच कर रुपया वसूल कर लेंगे, यह बात झूठी नहीं थी। एक दिन वे सच-मुच आये। साथ में आया प्रताप का जाति भाई धान का पैकार गोपाल घोष; उसी घोंतन घोष का बाप। सिताब महताब की माँ थी उस समय बहू, उम्र कम, तीस भी नहीं, उस समय वह घूँघट खोल कर मोटा मण्डल के घर जाकर खड़ी हो गयी। मोटा मण्डल धर्म भीरु और भलामानस है। इस समय उसकी प्रताप के साथ अधिक बातचीत नहीं थी। मोटा मण्डल गाँव के सम्बन्ध से बड़ा भाई जानकर प्रताप को कई बार सत्परा-मर्श देने गया था, किन्तु प्रताप ने उसके उत्तर में कहा था—मैं जानता हूँ कि मेरी उन्नति से सबकी छाती फट रही है। मैं किसी का परामर्श नहीं चाहता। मोटे मण्डल को इस उत्तर से आघात लगा, वह उस दिन हरि का स्मरण कर प्रताप के पास से चला आया और उसी दिन से उस ओर और नहीं गया। रास्ते में प्रताप से भेंट होने पर किनारा बचा कर हट जाता। किन्तु प्रताप की विधवा बहू के उस दिन जाकर खड़ी होते ही बोला, यह क्या! चलो-चलो! देखूँ।

उसने आकर खाता देखा और धान बेच कर सबका पावना चुका दिया। पाठक से कहा—हिसाब का खाता एक बार निकालना पड़ेगा पाठक जी!

पाठक आकाश से गिरा—खाता तो मण्डल के घर है। मैं खाता-पत्र नहीं जानता। मोटा मण्डल के बहुत चेष्टा करने पर भी वह पाठक को रास्ते पर न ला सका। गाँव भर के सब लोग एक प्रकार से प्रताप के लड़कों के विरुद्ध खड़े हो गये थे।

अकेला मोटा मण्डल उन्हें किसी प्रकार समझा न पाया। दोषी प्रताप मर गया है, उसके लड़के निर्दोष, निरपराध हैं। यह बात उन्होंने किसी प्रकार भी न समझी। उधर अकस्मात् महाजन ने नालिश ठोंक दी—वह रुपये पायेगा। तीन हजार रुपये।

तीन हजार रुपये? प्रताप मण्डल ने कर्ज लिया है?

पाठक बोला—लिया है। हैण्डनोट मैंने लिखी है और प्रताप ने सही की है। व्यवसाय के लिये रुपयों की जरूरत पड़ी थी। सभी व्यवसायियों को ऋण लेना पड़ता है। पाठक ब्राह्मण-सन्तान होकर झूठ नहीं बोल सकता। किन्तु असली बात दूसरी है। दरख्वास्त आदि के लिये प्रताप ने एक सादे कागज पर सही कर पाठक को दे दिया था, पाठक ने महाजन से षड़यंत्र कर उसी कागज पर हैण्डनोट बनायी है।

इधर छोटा लड़का महताब ज्वर में पड़ गया। टायफाइड ज्वर में। प्रताप के टायफाइड विष ने उसे भी गिरा दिया। यम और मनुष्य में खींचातानी कर महताब बच तो गया सही, किन्तु कैसा बेवकूफ बुद्धिहीन हो गया। पहले पहल बात-चीत में जड़ता आ गयी थी। बात करने पर न समझता, एकटक मनुष्य का मुँह देखा करता।

सिताब को याद पड़ता कि वह भी पृथ्वी की ओर टकटकी लगा कर देखा करता। वह बहुत छोटा नहीं था। समझने-बूझने की उम्र हो गयी थी। बाप के जीते रहते सुनता-पाठक कहता, और दो-चार आदमी कहते, मण्डल, लड़के को अच्छी तरह पढ़ाओ। उसको ओवरसियरी पढ़ाओ। ओवरसियर हो जाने पर यह व्यवसाय दिन दूना रात चौगुना बढ़ेगा।

यह बात फैल कर किसी प्रकार नवग्राम के स्कूल में भी पहुँच गयी

थी। वहाँ घोंतन प्रताप का सहपाठी था। घोंतन पढ़ने-लिखने में अच्छा था और नवग्राम के अधशहरी फैशन और बात-चीत में पक्का था। वह उसकी हँसी करता। उसे 'सर' कहकर पुकारने लगा। उसमें सिताब लज्जा अनुभव करता सही, किन्तु इसमें भी छिपा हुआ अहंकार अनुभव करता। अकस्मात बाप के मरने पर घोंतन का यह मजाक मारात्मक रूप से असह्य हो गया। दूसरी ओर गाँव के राह-बाट में लोग उसे देख कर कहने लगे--लड़का बड़ा हो गया, फिर क्यों पढ़ना-लिखना ? इस अवस्था में ! जो हो, कुल-कर्म करने पर दो मुट्ठी खाना तो मिलेगा ! पढ़ कर ही क्या करेगा ? हुँ !

उधर महाजन ने नालिश कर डिग्री करा ली। प्रायः दस बीघे जमीन बिक गयी। वर्ष के अन्त में किसान मजदूरों ने बचे हुए खेत में जो धान बाँट कर मण्डलबाड़ी का गोला भरा, उससे आँगन का एक चौथाई गोला भी न भरा। आगे के आँगन का आधा पुआल से ही भर गया और सिताब-महताब की लुका-छिपी खेल का आदर्श स्थान बन गया।

सिताब की माँ ने पुआल की ओर देख गहरी साँस छोड़ी और साथ ही साथ उसकी आँखों में जल भर आया। इसके दो वर्ष के भीतर ही और भी असमय आ गया। उसदिन भी सिताबकी माँ रो रही थी। सिताब उस दिन स्कूल से लौट कर चुपचाप बैठा था। वह भी परीक्षा में एक विषय में फेल हो गया है। पहली बार प्रमोशन नहीं हुआ, दूसरी बार होगा कि नहीं, इसमें सन्देह है। इसीसे चुपचाप बैठा था, यह बात उसने माँ से भी नहीं कही। अकस्मात् माँ की आँखों में जल देख वह उठकर खड़ा हो गया। दो बार चक्कर लगाकर बोला—मैं अब नहीं पढ़ूँगा।

—पढ़ेगा नहीं ? माँ अवाक् होकर पुत्र का मुहँ देखने लगी।

—नहीं। इस बार प्रमोशन नहीं मिला।

बाधा देकर माँ बोली—नहीं पाया तो इस बार अच्छी तरह पढ़। आगे अच्छी तरह पास हो जायगा ?

—नहीं। अब नहीं पढ़ूँगा।

—करेगा क्या ? मेरा सिर ?

—नहीं। खेती-बारी करूँगा। नहीं तो जो भी है वह भी नहीं बचेगा। कर्ज लेकर धान खाना पड़ेगा। इससे जमीन बिक जायगी।

सिताब ने पढ़ना छोड़कर उस परिवार की पतवार पकड़ी। उसकी देह दुर्बल थी, इसलिये स्वयं कुछ अधिक नहीं कर पाया, किन्तु रात-दिन की देख-भाल से खेती की उन्नति हुई। वर्षा न होने पर आधी रात के समय खेत में जाता और दूसरों की मेड़ें काटकर अपना खेत सींच लेता। जोतने के पहले रात में खेतों में जाता और दस खेतों से दस टोकरी खाद लेकर अपने खेत में डाल लेता। रास्ता चलते-चलते जब गोबर मिलता तो उसे उठाकर खेत में या अपने घर में डाल देता। दो वर्ष के बाद उसने सोच-विचार कर एक व्यवसाय निकाला। तरकारियों का व्यवसाय, उसके साथ बीजों का व्यवसाय। नदी के किनारे उसकी थोड़ी गोचर भूमि थी। वह बरसात भर बाढ़ के जल में डूबी रहती। बाढ़ घटने पर उसमें खूब घास उगती। बरसात के तीन महीने छोड़ बाकी नौ महीने पशु वहाँ घास चरा करते। वहीं उसमें तरकारी की खेती शुरू की और पहले मौसिम में तरकारी तोड़कर बाजार में बेचने लगा। उसका आलू कार्तिक महीने में निकलता ; उस समय वह आठ आने, छः आने सेर बेचता। टमाटर, बैंगन,

मूली पहले ही पदा होती, वह उन्हें लेकर बाजार में जाकर बेच आता। फिर एक बार इन्हें ऋतु के अन्त में लगाता अर्थात् चैत में आलू खोदता। वह आलू पका कर बालू बिछाकर रखता, उन्हें बरसात में बेचता और कुछ बीज के रूप में बेचता। मूली, बैगन का भी ऐसा ही करता। अन्तिम मौसिम में पकाकर बीज बनाकर रख देता और आगे के मौसिम में गाँव-गाँव घूम कर किसानों में बेच आता। फसल हो जाने पर रुपये वसूल करता। बीज न जमता तो दाम न लेता। इससे अपनी दशा कुछ सुधार दी। केवल इतना ही नहीं, घर की चाल-ढाल भी बदल दी। प्रताप मण्डल ने व्यवसाय शुरू कर घर में चूना लगवा दिया था, उसने उस चूना की हुई दीवारों को मिट्टी से ढँककर लिपवा दिया। प्रताप मण्डल ने कई कुर्सियाँ खरीदी थीं, उसने उन्हें बेच दीं। दो बेंचे थीं, उनपर बीजों की हाँड़ियाँ रख दीं। घर का खाना-पीना कपड़ा-लत्ता सब बदल दिया। उसकी माँ ने उसमें आपत्ति नहीं की। महताब ने आपत्ति की। खाना-पीना अच्छा न होने पर उसका नहीं चलता। वह आं-आं कर चिल्लाता है। दो-तीन वर्ष में उसकी बात की जड़ता कट गयी है, शरीर भी अच्छा हो गया है, उसका शरीर तो पहले के समान सबल हो गया, किन्तु सिर का गोलमाल नहीं गया। बीच-बीच वह लाठी लेकर सिताब को खदेड़ा भी करता है।

सिताब हँसता। उसका भाग्य फिर गया। उसको भाई पर क्रोध न आता।

ठीक इसी समय एक दिन दस वर्ष की चाँपाडाँगा की बहू ने साड़ी पहन कर, हाथ में चाँदी का सरौता, गले में माला झुलाती दोनों पैरों में कड़े बजाती हुई मण्डलबाड़ी में प्रवेश किया।

यह भी एक विचित्र घटना थी। लोगों ने कहा इसी को विधि-विधान कहते हैं। जिस हाँड़ी का चावल है उसी में डाला गया है। नहीं तो इस लड़की का व्याह होने की बात किसके साथ थी—हुआ किसके साथ!

यह बात झूठी नहीं है। इस बालिका का विवाह-सम्बन्ध बचपन में ठीक हुआ था गोपाल घोष के पुत्र घोंतन घोष से। किन्तु अकस्मात् सब उलट-पलट हो गया।

चाँपाडाँगा की बड़ी बहू कादम्बिनी का बाप उमेश पाल वहाँ का सम्भ्रान्त किसान था। सम्भ्रान्त का अर्थ है आधुनिक शिक्षा से शिक्षित नहीं, वरन् विशुद्ध इस देश का किसान ; गले में तुलसी की माला, माथे पर तिलक, कन्धे पर चादर, पैरों में चट्टी थी उसकी पोशाक, बिनीत मीठी बोली, सीधा अकपट मनुष्य, दिन में खेती करता, अपने हाथ से हल जोतता, गो-सेवा करता, सन्ध्या को जोर से हरिनाम लेता, अंग्रेजी पोशाक वाले बाबुओं का आदर करता, उनसे भय करता, किन्तु विश्वास न करता, उनसे घृणा भी न करता। किन्तु जब वे उसके घर वर्षाकाल में धान का अभाव होने पर कर्ज लेने आते, उन पर मन ही मन अनुकम्पा करता। मुहँ से न कहता। वह धान देता है। यहाँ तक कि नहीं मिलेगा जानकर भी किसी-किसी को धान देता है। उस समय मुहँ से बारबार कहता है—हरिबोल—हरिबोल।

इसी उमेश पाल की स्त्री और गोपाल घोष की स्त्री अर्थात् घोंतन की माँ एक गाँव की लड़कियाँ और बालसखियाँ थीं। गोपाल के लड़के घोंतन के जन्म के समय उमेश की स्त्री ने कहा—अगर मुझे लड़की होगी तो तुम्हारे लड़के को दामाद बनाऊँगी। उमेश की पहली दो सन्तानें पुत्र और

तीसरी कन्या कादम्बिनी थी। कादम्बिनी के जन्म लेने पर उमेश की स्त्री ने सन्देश भेजा था कन्या हुई है। बात जिसमें पक्की रहे।

उमेश पाल आनाकानी कर रहा था। कारण गोपाल घोष पैकार अर्थात् दलाल है, धान की दलाली करता है। खेती-बारी भी है किन्तु धान की दलाली पर ही अधिक झोंक है। इसी कारण अधशहरी है। सद्गोप होकर भी खेती नहीं करता, करता है धान की पैकारी अर्थात् धान-चावल की दलाली। दलाली में काम से बात अधिक करनी पड़ती है। जहाँ काम से बात अधिक होती है वहाँ बात प्रायः मिथ्या झूठ होती है। फिर भी उसने स्त्री की बात का प्रतिवाद नहीं किया। जब कन्या की माँ ने बात ही दे दी है तो उसे मान लेने के अलावा उपाय ही क्या है? कन्या के जन्म के पश्चात् बड़े उत्साह के साथ कुछ दिनों तक दोनों घरों में समाचारों का आदान-प्रदान होता रहा। पूछ-ताछ भी चली। इसके बाद धीरे-धीरे कम हो गयी। इसके बाद कादू की उम्र ग्यारह हो गयी। उधर बाजार में अफवाह फैली—नया कानून बन रहा है, कन्या को युवती होने से पहले व्याह देने से जेल होगा। विवाह रद्द हो जायगा। किसी ने कहा चौदह वर्ष, किसी ने कहा सोलह वर्ष, किसी ने कहा अठारह वर्ष उम्र न होने से कन्या का विवाह जायज नहीं माना जायगा। भयंकर कानून है, शारदा कानून न कि कानून है!

उधर गोपाल घोष के पुत्र घोंतन ने मैट्रिक परीक्षा दी है। विवाह के बाजार में लड़कों की दर तेज है। गोपाल घोष नहीं है, मर गया; उमेश ने घोंतन की माँ अर्थात् अपनी स्त्री की सहेली के पास आदमी भेजा। विवाह एक मास के भीतर करने का अनुरोध किया। घोंतन ने उत्तर दिया

उसने कहला भेजा--इस समय उसे विवाह करने की जरा भी इच्छा नहीं है और आगे चलकर जब विवाह करेगा तो पढ़ी-लिखी कन्या से ही करेगा। वह ग्यारह वर्ष की बालिकासे विवाह नहीं करेगा। घोंतन की माँने उस आदमी के सामने झर झर रोते हुए कहा—मेरी दशा देख लो बाबा। सहेली से कहो, उसके पति से कहो मैं निरुपाय हूँ। दिन-रात मेरी आँखों से जल गिरता है। इसमें मेरा हाथ नहीं है।

जवाब पाकर उमेश पाल कुछ देर तक गुम होकर भूमि की ओर देखता रहा। इसके बाद मुँह उठाकर खड़ा होगया। ठीक उसी समय उसके घर में सिताब ने प्रवेश किया। उसके साथ एक बोझिया था। उसके कन्धे पर दोनों ओर बीजों के बोरे थे। उमेश पाल का मुँह प्रसन्न हो उठा। हाँ, उसने वर पा लिया। ठीक हुआ। उस दिन ज्योतिषी ने काद्ू का हाथ देख कर कहा था—इस कन्या का वर अपने पैरों पर चलकर तुम्हारे घर आयेगा पाल। तुम देख लेना।

यह बात सुनकर उमेश पाल भी हँसा था। सोचा था—ये ज्योतिषी बड़े चतुर होते हैं। घोंतन के साथ काद्ू के विवाह की बात साधारणतः सब जानते हैं। उस बात से उसने विचित्रता ला दी है। आज किन्तु उसने उस काले ब्राह्मण को मन ही मन प्रणाम किया। प्रताप मण्डल इस अंचल में नामी पुरुष था। उसी का लड़का है सिताब। ऊँचा वंश। अपनी योग्यता लड़के ने स्वयं प्रमाणित कर दी है। जो लड़का डूबती नाव को खे सकता है, यदि वह मैट्रिक पास नहीं है तो क्या?

उमेश पाल ने दूसरे ही दिन सिताब के घर जाकर उसकी माँ से चर्चा छेड़ी और एक महीने में ही विवाह समाप्त कर निश्चिन्त हो गया।

सिताब की माँ बहू देख कर खुश होगयी महताब ने बहू का घूंघट खोल कर कहा—यही बहू है ? इतनी छोटी लड़की ?

माँ ने कहा था—यही बहू है, यही बहू बड़ी होगी। तुम्हारी बड़ी भावज तुम्हारी माँ के तुल्य होगी। यह हमारे घर की लक्ष्मी है।

इसके बाद सिताब ने जब अपनी मुट्ठी में धूल ली तो वह धूल सोना हो गयी। और सोने की सुधा अब आँखों के सामने धूल में बदलने जा रही है। क्या वह शौक से हाय-हाय करता है।

तृतीय परिच्छेद

कई दिन बाद की बात है।

सबेरे का समय। सूर्य निकल रहा है। गोशाले में बैल की जोड़ी के कन्धे पर हल रखते-रखते महताब गाने लगा था।

उसने फेटाँ बाँध लिया है। सिर पर रंगीन गमछा है। पास ही उस ओर हल रखा है। एक ओर धान के बीज की टोकरी। दो कुदालें। हुक्का-चिलम। एक छोटा टाट का थैला।

हलवाहा नोटन सहायता करता है।

हल जोतने के बाद महताब ने स्नेह के साथ दोनों बैलों के शरीर पर हाथ फेरा। इसके बाद एक छोटी टोकरी में थोड़ा चारा लेकर एक के मुँह में लगा दिया। गाना चल रहा है। एक के मुँह के पास चारा रखते ही दूसरा बैल स्वाभाविक रूप से चंचल हो उठा। महताब ने उसे धमकाया—धत्तेरी की !

इसी बीच घर के भीतर से दोनों बहुयें काँख में दो घड़े लेकर और कन्धे पर गमछा रख कर स्नान के लिये निकलीं।

बड़ी—चाँपाडांगा की बहू जाते-जाते खड़ी हो गयी। उसने हँसते-हँसते कहा—छोटे मण्डल, भला इतने दिनों के बाद घर-द्वार, खेती-बारी की तो याद आयी? चार दिन मण्डली में गाना-नाचना-पाँच दिन सोना।

मानदा बोली-पूछो कितने लोटे भंग पी है?

महताब बोला—फिर बड़बड़ाती हो। कई दिनोंसे एकही बात, बड़बड़-बड़बड़—कितने लोटे भंग पी है? क्या कोई हिसाब करके भंग पीता है?

चाँपाडाँगा की बहू ने कहा—हिसाब करके भंग नहीं खायी जाती, किन्तु बचपन में बीमारी से जिसका शरीर दुर्बल हो गया है, वह भंग क्यों पीता है? बात क्यों याद नहीं रहती?

महताब बोला—लो कान मलता हूँ। समझा कि नहीं? सचमुच उसने कान मल कर कहा—वही घोंतना सुअर और वही बोचा सियार वे ही—वे ही सब बुराइयों की जड़।

बात पर बात कहकर मानदा बोली—वे ही सब बुराइयों की जड़ हैं। नादान बच्चे! उन्होंने जबरदस्ती पिला दी थी?

—देखो भाभी, देखो। तुम देखो। तुम उसे समझा दो—ऐसा क्यों करती है? कैसा करती है देखो! जो घूसा पीठ पर जमाऊँगा कि चिल्लाने लगेगी।

कहकर आगे बढ़ा और हल कन्धे पर उठा लिया—चल रे चल! नोटन!

नोटन इसी बीच तम्बाकू भरने गौशाले में चला गया था। उसको न पा उसने चिल्लाकर पुकारा—नोटना! अरे बूढ़ा बन्दर!

बड़ी बहू ने कहा, ठहरो, ठहरो, मानदा पर क्रोध कर भागने से नहीं चलेगा। मेरी एक बात का जवाब दो। घोंतना को धान छोड़ आये, घोंतना की माँ की बात पर दया आ गयी, यह तो समझ लिया। किन्तु एक बार पूछ भी लेना था न! दादा हैं। क्या, उत्तर क्यों नहीं देते हो?

—क्या उत्तर दूँ। उत्तर देने में तुम्हारे स्वामी की निन्दा करनी पड़ेगी।

—किसकी।

—तुम्हारे दूल्हे की। और किसकी?

इतना सुनकर चाँपाडाँगा की बहू खिलखिलाकर हँस पड़ी।

महताब ने उधर नाक से शब्द कर दोनों बैलों की पीठ पर हाथ रख उन्हें चला दिया।

मकान के बाहरी बरामदे में—रास्ते के सामने—सिताब ढेरा घुमाकर सन की रस्सी कातता था। उसके सामने से महताब हल-बैल लेकर चला जा रहा था। बरामदे में मानिक एक मिट्टी के खिलौने से खेलता था। चरवाहा चिलम में तम्बाकू भर कर फूँक रहा था। एक खूटी में एक बकरी बँधी पत्तियाँ खा रही थी। उसके दो बच्चे पास में घूम रहे थे।

सिताब बोला—कितना बीज आज डालोगे?

—दो दौरे डालूँगा।

—दो दौरे?

—नहीं तो क्या? तुम्हारी तरह मरा हुआ हूँ क्या?

—नहीं तो तुम भीम-भैरव हो। किन्तु एक ही दिन इतना क्यों?

—समय बीत जायगा।

—समय बीतने का ज्ञान अगर भंग पीते समय रहता तो अच्छा होता।

—अधिक झंझट न करो। अरे बैल, चलता क्यों नहीं। फिर नाक का शब्द कर दोनों बैलों की पीठ पर हाथ रखा और चला गया।

सिताब ने पुकारा—मानिक !

—हुँ !

—खबरदार बेटा ! पिता के समान न बनना। लोगों का पावना मत छोड़ देना।

—मैं छिव बनूँगा।

—नहीं। बनना मत। खबरदार !

—क्या बनूँगा ?

—मेरे समान बनेगा।

—नहीं, तुम खाक हो ! रोगी—

—अरे बेटा, बुद्धि में मेरे समान होना। हिसाब सीखना, किसीको एक पैसा न छोड़ना।

—पैसा दो।

—अरे बेटा ; तेरे लिये बहुत पैसे जमा किया है। सब तुम्हारे लिये। समझा ?

—किसी को न दूँगा।

—हाँ। कोई मुझे नहीं देता, कोई नहीं छोड़ता मानिक। बाप ने ऋण लिया था, किसी ने नहीं छोड़ा। समझा ? और कुटुम्बी से रुपये न

लेना। तुम्हारी बड़ी माँ ने ऋण चुकाने के लिये गहने दिये थे। उसका पाप मुझे आज भी भोगना पड़ रहा है। खबरदार मानिक। हाँ।

चरवाहे ने हुक्का-चिलम सिताब के हाथ में दे दी।

सिताब बोला—सुन तू एक बार घोंतन घोष के घर जा और कह कि पंचायत के मण्डलों ने तुम्हें बुलाया है।

चरवाहा बोला—वह नहीं आयेगा। घोंतन बड़ा घाघ है।

—यही सही, तू जायेगा। मैं कहता हूँ–तू जायगा। आये न आये, मैं समझूँगा। यह कागज उसे देना।

चरवाहे ने कहा—तो अभी चला जाऊँ। नहीं तो घोंतन मूढ़ी खाकर बीड़ी पीते-पीते बाहर चला जायगा, और भात खाने के समय तक नहीं लौटेगा।

घोंतन का मकान है गोपडाँगा में। ठीक पास के गाँव में।

इस गाँव और आधेशहर लक्ष्मीपुर के बीच में गोपडाँगा है। यह एक छोटा सा गाँव है। यह लक्ष्मीपुर के ही अधिक निकट है। लक्ष्मीपुर बहुत दिनों से समृद्ध गाँव है। इसमें ब्राह्मण-कायस्थों की अधिक बस्ती है। गोपडाँगा का खिंचाव सदा से उधर ही अधिक है। ब्राह्मण और कायस्थ बुद्धिजीवी भद्र लोग गोपडाँगा के किसानों और ग्वालों की वस्तुओं के पुराने खरीददार हैं। गोपडाँगा की तर-तरकारी और दूध-दही ने लक्ष्मीपुर के अन्न को पचास न सही अनेक प्रकार के व्यंजनों से समृद्ध किया है और दूध और गुड़ के सहयोग से परमानन्द न सही खीर में परिणत किया है। केवल इतना ही नहीं, इसी गाँव के किसान बराबर ब्राह्मण-कायस्थों की भूमि भागीदारी और ठेके पर जोतते आये हैं, और इस समय

इतने से ही दो-चार ने वर्ष में अपने खलिहान में खाता भी बाँधा है और जिस साल फसल नहीं हुई तो ठीके का धान न चुकाने पर सरखत भी लिखा है। सरखत का असल और सूद बढ़ कर उन्हें अपनी पैतृक भूमि बेचने पर बाध्य किया है। ये पुरानी बातें हैं। इसके बाद बीच में एक समय आया था, जब लक्ष्मीपुर के ब्राह्मण-कायस्थों-बनर्जी महाशय, मुखर्जी महाशय, बोस महाशय, घोष महाशय अपनी उपाधियाँ छोड़ कर बाबू हो गये। घर-घर तख्तपोश और बिछौने के स्थान पर चेयर-टेबिल हो गया। टोल-पाठशाला उठ गयी, अंग्रेजी स्कूल खुल गये, बाबू लोग शहर में नौकरी करने लगे। वकील हुए, मुख्तार हुए, डाक्टर हुए। शरबत छोड़ कर चाय पकड़ी। हुक्के साथ सिग्रेट घुसा, उस समय लक्ष्मीपुर में खानसामों की माँग बढ़ गयी। इसी समय गोपडाँगा के बहुत से लोग खेती का गँवारू काम छोड़ कर इन शौकीन कामों में घुसे। इन्होंने ही पहले-पहल छोटा-बड़ा करके केश छँटाये और चादर की जगह कमीज चलायी। इसके पास ही वक्रेश्वर नदी है। इसके बाद वक्रेश्वर नदी से बहुत जल बह गया। केवल बह ही नहीं गया, वरन् बाढ़ ने चारों ओर डुबा भी दिया। खेती की जमीन में कीचड़ भी पड़ी, बालू भी पड़ी। सिताब के गाँव नारायणपुर के किसानों ने बालू पड़ी हुई भूमि की बालू हटा दी और मिट्टी पड़ी हुई जमीन में सोना उगाया। किन्तु गोपडाँगा के किसानों ने खेती एकदम बन्द तो नहीं की, किन्तु उस पर उनका भरोसा न रहा। उन्होंने खेती के साथ उस व्यवसाय में भी हाथ लगाया। किसी ने नवग्राम में दुकान की। मोदी की दुकान, बीड़ी की दुकान आदि और लड़कों को स्कूल में भर्ती करा दिया। दो-चार लड़कों ने मैट्रिक पास किया, एक ने एम० ए०

पास किया, एक बी० एल० हुआ और गोपडाँगा में रहना छोड़ अपने कर्म-स्थान-शहर में रहने लगा। घोंतन के बाप गोपाल घोष ने अपनी खेती-बारी के साथ पैकारी अर्थात् धान की दलाली का काम पकड़ा था। लक्ष्मी-पुर के बनियों से रुपये लेकर गाँव-गाँव धान खरीदता और उसे गाड़ियों पर लाद कर उनकी गद्दियों में पहुँचा देता। कुछ लाभ रहता दर में और कुछ वजन में। खरीददार के घर में हाथ दबाने से जो वजन बढ़ता, उसका दाम मिलता। इस पर भी कुछ रहता ढलता और कुछ होता ईश्वर के नाम पर वृत्ति का भाग। घोंतन के स्कूल में दिया था। घोंतन और सिताब ने कई क्लासों में साथ ही पढ़ा था। घोंतन लड़का बुरा नहीं था, वह सिताब के समान एम को आम, एन को आन और एल को आल न कहता। उसका उच्चारण चुस्त था। वह लक्ष्मीपुर के बाबुओं के लड़कों के साथ फुटबाल खेलता, स्कूल के डिबेटिंग क्लब में डिबेट करता। वह अच्छी तरह कविता-पाठ करता। लक्ष्मीपुर के थियेटर क्लब के रिहर्सल के दिन से अभिनय के दिन तक नियमित रूप से लुक-छिप कर सुनता, सीखता। क्लब की लाइब्रेरी से नाटक-उपन्यास पढ़ता। लोग कहते—इस लड़के का भविष्यत् है। मास्टर भी आशा करते, घोंतन कम से कम सेकेण्ड डिवीजन में पास करेगा। मन लगाकर पढ़ने से फर्स्ट डिवीजन में भी जा सकता है।

शायद जा सकता था। किन्तु गोपाल घोष के मरने से सब गोलमाल हो गया। घोंतन बिना लगाम के घोड़े के समान दौड़ने लगा। और मैट्रिक में पहुँचते ही वह प्रेम में पड़ गया। वह मन ही मन कुछ दिनों से प्रेम कर रहा था। स्थानीय माइनर गर्ल्स स्कूल के माइनर क्लासों की छात्रियों में से प्रत्येक को ही कुछ दिनों के लिये प्रियतमा सोचता था। किन्तु

जाति अथवा अन्य किसी बाधा के कारण वह बात प्रकट न करता। अपनी कापी में उनके नाम लिखता और खूब यत्न से काटता। अकस्मात् प्रकट रूप से प्रेम में पड़ने का अवसर मिल गया। स्थानीय सब रजिस्ट्रार के आफिस में उसीकी जाति का एक क्लर्क आया और उसकी बड़ी लड़की माइनर क्लास में भर्ती हुई। लम्बे कद की श्याम रंग की लड़की, उम्र तेरह-चौदह, किन्तु घोंतन को प्रेम में पड़ने के लिये इतना ही काफी है, माइनर क्लास में पढ़ती है, वेणी झुला कर, पाढ़वाली साड़ी पहन कर स्कूल में जाती है अतएव लक्ष्मीपुर में इससे अधिक आयोजन क्या हो सकता है? घोंतन प्रेम में पड़ा, लड़की के पिता से बातचीत की। उसके घर भर को निमन्त्रण देकर अपने घर लाकर खिलाया। इसी समय उमेश मण्डल ने कादम्बिनी के विवाह के लिये आदमी भेजा। 'घोंतन ने उसे सीधा 'नहीं' कह कर सम्बन्ध तोड़ दिया। सब रजिस्ट्रार आफिस का क्लर्क भीरु था। वह युवती कन्याकी शादी के लिये व्यग्र था। उसने भी घोंतन को पसन्द किया। मास्टरों ने कहा—लड़का बुरा नहीं है। बाहर से तो खूब फुर्तीला-स्मार्ट है। घर-मकान भी खराब नहीं है। अतएव आकार और इंगित से यही इच्छा उन्होंने प्रकट की।

घोंतन बड़े उत्साह से ही परीक्षा दे आया। शहर से परीक्षा देकर लौटते समय सेलून में हजामत बनवा कर एक टिन गोल्डेन वार्डसाई नामक सिग्रेट का मिक्चर खरीद कर घर लौटा और एक दिन शुभ लग्न में क्लर्क बाबू की माइनर पढ़ी हुई चौदह वर्षीया कन्या नीहारिका से विवाह कर डाला। किन्तु परीक्षा-फल बाहर होने पर देखा गया कि गजट में थर्ड डिवीजन में भी घोंतनचन्द्र का नाम नहीं है।

घोंतन बोला—सब साले हैं।

ससुर ने कहा—फिर अच्छी तरह पढ़ो।

घोंतन बोला—नहीं, गुलामी का लिखना-पढ़ना अब नहीं करेगा।

घोंतन ने उस समय लक्ष्मीपुर के थियेटर में पार्ट पाया था। अगले कुछ ही महीनों में अभिनय है। लक्ष्मीपुर के क्लब के नियमानुसार किसी स्कूल का छात्र पार्ट नहीं कर सकता। स्कूल में फिर भर्ती होने पर पार्ट छोड़ना पड़ेगा। अतएव घोंतन किसी प्रकार राजी नहीं हुआ, वरन् ससुर से झगड़ा कर उनके घर के रास्ते से जाना बन्द कर दिया और कुछ जमीन बेच कर लक्ष्मीपुर के गुलाम दर्जी के साथ कटे हुए कपड़ों की एक दुकान की। यूनियन कोर्ट में छोटे मामलों की पैरवी भी शुरू कर दी। कुछ ही दिनों में कटे कपड़े की दुकान के अच्छे कपड़ों का जामा पहन कर उसे गुलाम को बेच दी सही, किन्तु मामले की पैरवी में नाम कमाया। और थियेटर में भी ख्याति मिली।

ससुर है कन्या का पिता, उसकी इच्छा चाहे जो हो, उसको मन की इच्छा मन में दबाकर दामाद के सामने नीचा झुकना पड़ा; उसने दामाद से कहा—तो तुम और एक काम करो। यह मामले की पैरवी के साथ ही चलेगा। मैं सब रजिस्ट्री आफिस में हूँ, तुम वहाँ मुहरिल का काम करो। शिनाख्त देने, दलील लिखने का काम करो। ऐसा होने पर बीच-बीच में जब नकल के लिये एक्स्ट्रा हैण्ड की जरूरत होगी, तो वह काम भी कह-सुनकर करा सकता हूँ।

इस प्रस्ताव पर घोंतन राजी हो गया। और इसमें भी उसने नाम कमाया। कान में कलम खोंस कर बड़तल्ले में घूमने लगा। कुछ दिन बाद

लक्ष्मीपुर के साहों में से पंचानन साहा से मिलकर एक यात्रा का दल भी खोल दिया। पंचानन साहा लक्ष्मीपुर के थियेटर में दूत-पहरेदार को छोड़ दूसरा पार्ट नहीं पाता था, किन्तु उसको लगता था कि अच्छा पार्ट पाने पर अवश्य ख्याति प्राप्त कर सकता है। बीच-बीच में इसी बात पर पंचानन क्लब में झगड़ा-झंझट भी करता। अकस्मात् एक दिन यह झगड़ा सीमा पर पहुँच गया और पंचानन ने क्लब छोड़ दिया। कई दिन बाद सुना गया कि पंचानन साहा यात्रा-दल खोल रहा है। पंचानन के पास पैसा है, काफी पैसा, उसने दो हजार रुपये खर्च कर पोशाक, केश, बाजे आदि खरीदा और घोंतन को बुलाकर कहा—ब्राह्मण-कायस्थों का साथ छोड़ो। वे हमें दूत-पहरेदार बनाकर स्वयं राजा-मन्त्री बनते हैं। मेरे दल में आओ। हमीं सब यहाँ राजा-मन्त्री बनेंगे। घोंतन इसमें आनन्द के साथ जुट गया।

पंचानन के दल ने पहले पहल 'नागयज्ञ' किया, जिसमें नायक तक्षक नाग का पार्ट घोंतन को दिया। घोंतन तक्षक नाग के पार्ट में इस प्रकार फुस-फुसकर फुस-फुसाया कि लोगों ने खूब वाह-वाह की। घोंतन स्वयं भी खूब खुश हुआ, सचमुच नाटक भी खूब जमा।

एक वर्ष बाद पंचानन का शौक मिट गया, एक हजार रुपये के लगभग नुकसान देकर दल उठा दिया। दल उठाते समय घोंतन बोला—पंचानन दादा! दल उठा दोगे? किन्तु—

—किन्तु क्या? मेरा शौक मिट गया।

—तो सब चीजें मुझे दे दो। मुझे अब भी शौक है।

—किन्तु रुपये तो बहुत लगे हैं घोंतन।

—लगे तो हैं, किन्तु पंचानन अपेरा में तुम्हारा नाम तो रहेगा। मैं कुछ रुपये दूँगा। अढ़ाई सौ।

अन्त में चार सौ रुपये में तय कर पंचानन साहा को ही दो बीघे जमीन सात सौ रुपये में लिखकर घोंतन ने दल का सामान खरीदा। और मकान में खेती के घर की फर्श पक्की करायी, दीवारों पर सफेदी घुमायी और बाहर पंचानन अपेरा का साइन बोर्ड लटका कर देख-सुन कर बोला—ठीक है।

पहले दो-तीन वर्षों तक घोंतन की महफिल जमी थी। उस समय युद्ध बन्द हो गया था, किन्तु बाजार में हलचल थी। इसके बाद मन्दी आयी। घोंतन के यात्रा-दल को नुकसान लगने लगा। उधर रजिस्ट्री आफिस भी मन्दा पड़ा। घोंतन की स्त्री ने चार-पाँच वर्षों में तीन सन्तान पैदा कर परिवार बढ़ाया, और खुद रोगी हो गयी। दो बहनें बड़ी होकर पन्द्रह पार कर सोलह में पहुँची। माँ के बहनों के व्याह के लिये तकाजा करने पर भी घोंतन चंचल नहीं हुआ। स्पष्ट कह दिया—मेरे पास रुपये नहीं हैं। इसी बीच और तीन बीघे जमीन नीलाम होगयी। घोंतन ने अपील की है। इसके बाद लगातार दो वर्षों तक अनावृष्टि से फसल नहीं हुई। घोंतन का चारा ही क्या था? पिछले साल सिताब से धान लिया था। उसे उसी पागल महताब का भरोसा था। पागल को यात्रा दल में लेने पर पार्ट का लोभ दिखा कर कम से कम वर्ष भर की खुराकी धान का इन्तजाम हो जाता। किन्तु महताब यात्रा-यात्रा नहीं समझता। इससे तो वह गायक-मण्डली पसन्द करता है, संकीर्तन पसन्द करता है। बाँयें तबले से मृदंग

बजाने में उसे अधिक आनन्द मिलता है। इसीलिये इस बार गायक-मण्डली में महताब को शिव बनाया। दस रुपये चन्दा भी लिया और धान छोड़ दिया ऐसा लिखा लिया था।

*　　　*　　　*　　　*

चरवाहा जब वहाँ पहुँचा, उस समय घोंतन को माँ घर का बरामदा मिट्टी से लीप रही थी। घोंतन चाय की एक कटोरी लेकर तख्तपोश पर बैठा है। एक हाथ में एक जलती बीड़ी है। रूखे केश उड़ते हैं। आंखों में उदास दृष्टि। वह पार्ट की बात सोच रहा था।

चरवाहे ने आकर कहा—घोष बाबू!

—कौन? उधर घोंतन ने देखा।—तू सिताब मण्डल का चरवाहा है न?

—हाँ। मालिक ने यह कागज दिया है। तुमको एक बार जाने को कहा है।

कागज देख कर दाँत पीसते हुए क्रोध के साथ घोंतन बोला—एक घूसे से बेटे के कई दाँत तोड़ दूँगा। नोटिस लाया है, पंचायत की नोटिस भाग जा, जल्द भाग जा।

चरवाहा बोला—तो मैं क्या करूँ? उन्होंने मुझे भेजा है, उन्होंने—कहते-कहते ही वह पीछे हटने लगा।

घोंतन चाय की कटोरी हाथ में लेकर खड़ा हो गया। बोला—बेटा छछूँदर, गुलाम, कंजूस—

घोंतन की माँ डर कर बोली,अरे घोंतन, क्या हुआ रे!

—कृपण कंजूस सिताब का चरवाहा नोटिस लेकर आया है, पंचायत की नोटिस। I do not care—अरे बेटा, बोल देना, घोंतन घोष do not care—I mean does not care.

माँ फिर बोली—घोंतन !

घोंतन ने कहा, मैं मछली में कीड़े डाल दूँगा। हुँ-हुँ मैं हूँ घोंतन घोष। मैं हट-हट कर हल नहीं जोतता। मैं बिलकुल मूर्ख नहीं हूँ। सिताब मण्डल के घर की करतूत खोल दूँगा, गुप्त बृन्दावन का हाल लिख कर छोड़ दूँगा।

इस बार माँ ने कठोर स्वर में कहा, घोंतन तेरा मुँह खिसक जायगा, यह बात मत कह। घोंतन क्या कहना चाहता था, यह बात मुँह खोलते ही वह समझ गयी थी।

घोंतन जोर से बोला, उसके दर्द में मर रही हो।

—तू जो कहता है मैं समझती हूँ। चापाडाँगा की बहू सती लक्ष्मी है। महताब बेवकूफ हो, मूर्ख हो, तेरी तरह फैशन दुरुस्त भद्र लोग न बने, किन्तु है बहुत अच्छा लड़का। मैंने आँखों में आँसू भर कर अपनी विपत-गाथा सुनायी, उसने एक ही बात पर पावना धान छोड़ दिया।

—छोड़ दिया ? यही तो सिताब मण्डल ने पंचायत की नोटिस दी है।

—देने दो। वह जब कहेगा तो सिताब उसकी बात कभी नहीं टालेगा। इस पर कादू है। वह मेरी सहेली की कन्या है।

—नहीं ! नहीं टालेगा। एक अधपगले मूर्ख, एक उल्लू, एक बकरे में और महताब में कुछ अन्तर नहीं है। घर में भोजन है, सम्पत्ति है, उसीके जोर से मुझसे उसकी इज्जत अधिक है ! सब कलंक छिप गया है।

माँ इस बार मिट्टी घोलने की हाँड़ी हाथ में लेकर खड़ी होगयी।

मीठे किन्तु कठोर स्वर में बोली, देख घोंतन अनुचित बात न कह। तेरा मन जैसा पापी है, वैसी ही है कूट बुद्धि। मनमें इतनी ईर्ष्या है। तू अमृत को विष कहता है! छिः! छिः!

—जाओ, जाओ, अधिक चीं चापड़ न करो। घोंतन ने बीड़ी पीकर थोड़ा सा धुँआ छोड़ दिया।—मैं हाट में हाड़ी, 'ब्रेक' कर दूँगा बाबा। हुँ! हुँ!

कहकर वह घुटने हिलाने लगा।

माँ का बरामदा लीपना खतम हो गया था। मिट्टी घोलनेवाली हाँड़ी हाथ में लेकर वह बरामदे से उतरी और घेरे के सदर दरवाजे से होकर मकान में घुस रही थी, कि घोंतन की बात पूरी होते ही घूम कर खड़ी हो गयी। बोली—तुम्हारी हाँड़ी तो टूट कर आठ टुकड़े हो गयी है बाबा। चाँपाडाँगा की कन्या कादू के साथ तुम्हारे विवाह का सम्बन्ध बचपन से था, तुमने बाबा सच्ची लक्ष्मी को लौटा कर अपने पसन्द से व्याह किया। बहू अच्छी है, मैं निन्दा नहीं करूँगी बाबा, किन्तु सभी के तो दोष हैं—भाग्य हैं, तुम्हारे बहू में भाग्य नाम की चीज नहीं है। इसके अतिरिक्त धन्य बाप की बेटी! बाप वही जो आलता की डिबिया और शंख की चूड़ी देकर विवाह करके यहाँ से चला गया और फिर खोज नहीं ली, और कादू का बाप मरते समय दे गया इतने गहने। आज कादू को देख कर दस गाँवों के लोगों की आँखें शीतल हो जाती हैं। कहते हैं, बलिहारी है, कैसी सुन्दरता है! इस क्रोध की बात—लोग न जानें, मैं जानती हूँ। इससे तुम्हारा अमंगल होगा बाबा। मेरी सहेली की लड़की

अपनी लड़की के समान है। जब व्याह नहीं हुआ—तो उसे तुम्हें बहिन समझना उचित है। किन्तु, तुम—। प्रौढ़ा ने आक्षेप के साथ गर्दन हिला कर गहरी साँस छोड़ी।

घोंतन ने अब क्रोधित होकर हाथ की चाय की कटोरी फेंक दी। और बरामदे से रास्ते में उतर कर तेजी से चला गया। अकस्मात् खड़ा होकर घूम कर बोला—तुम सदा से घरजलानी और परसुखारी हो। कादू है तुम्हारी सहेली की लड़की—वह तुम्हारे पेट के लड़के से भी अपनी है! उसके लिये मुझ पर क्रोध! फू—फू—फू!

रास्ते में उतर कर थोड़ी दूर चलकर ही देखा, सिताब का चरवाहा छोकरा एक आम के नीचे खड़ा होकर ढेले से आम तोड़ रहा है। घोंतना ने उसे देखकर पुकारा, अरे छोकरे! सुन तो। उसके सिर में एक बात आ गयी। छोकरे के भागने के लिये तैयार होते ही एक ढेला उठाकर बोला, अगर भागेगा तो ढेला मारकर तेरा पैर तोड़ दूँगा। सुन!

छोकरा खड़ा हो गया। घोंतन आगे बढ़कर बोला, तेरा छोटा मालिक कहाँ है? एकबार बुला सकता है?

—छोटे मालिक खेत में हैं।

—खेत में?

—हुँ। बीज बोने गये हैं।

घोंतन जाने के लिये तैयार हो गया। कई कदम चलने के बाद घूमकर बोला, बीड़ी लेगा?

—बीड़ी? आप देंगे? सचमुच?

—यह ले न।

एक बीड़ी उसको देकर एक अपने मुहँ में डाल ली और दियासलाई जलाकर पकड़ा ली। फिर अपनी बीड़ी से चरवाहे की बीड़ी सटाकर बोला—खींच।

चरवाहे ने फक से धुआँ छोड़ दिया।

घोंतन बोला, हाँ! रे तेरे छोटे और बड़े मालिक में झगड़ा होता है क्या?

—दिन-रात। वही जो कहते हैं, साँप-नेवले का बैर।

—क्यों, बतला तो?

—छोटे मालिक कैसे आदमी हैं! लोगों से ठगा जाते हैं। लोगों को पावना छोड़ देते हैं। रुपया हाथ में पाते ही खर्च कर देते हैं। इसी से बड़े मालिक क्रोध करते हैं और छोटे मालिक क्रोध करते हैं कि बड़े मालिक कृपण हैं। बड़े मालिक बकते हैं। सबसे अधिक क्रोध इसलिये है कि बड़ी मालकिन से बक-झक करते हैं।

हुँ। बड़ी मालकिन के साथ महताब का खूब मेल-जोल है न!

—अरे बाप! छोटे मालिक बड़ी मालकिन छोड़ बात ही नहीं करते। वे जो कहेंगी वही वेद वाक्य।

—तुम्हारी छोटी मालकिन क्रोध नहीं करती!

—करती क्यों नहीं? करती हैं बीच-बीच में फुसफुसाती हैं। इसपर छोटे मालिक कहते हैं,—नहीं माँगता, बाप के घर चली जाओ। बड़ी मालकिन छोटे मालिक पर बिगड़ती हैं। छोटी मालकिन को भी बकती हैं।

—हुँ। थोड़ा सोचकर घोंतन बोला—तू अच्छा लड़का है—तुझे अपने यात्रा-दल में एक पार्ट दूँगा, समझा? करेगा न?

उसने बार-बार गर्दन हिलायी। मन ही मन माँ पर व्यंग किया। चाँपाडाँगा की बहू पर माँ को बड़ा दर्द है। किन्तु चरवाहा छोकरा क्या कह गया है? इसका क्या अर्थ है? नारायणपुर के सब लोग भेड़ हैं—सिताब-महताब की अवस्था से डरकर मुहँ खोलने का साहस नहीं करता! देवर-भौजाई के मिलने-जुलने की एक सीमा है! वह चरवाहे को मुट्ठी में कर ठीक खबर मालूम करेगा। आजकल के अच्छे अच्छे उपन्यासों से नर-नारी-तत्वों के जीवन का रहस्य वह पानी के समान समझ गया है!

छोकरे ने खुश होकर गर्दन हिलायी।

घोंतन ने फिर प्रश्न किया, बतला तो इस समय तेरा छोटा मालिक किस खेत में बीज छींटता है?

—उसी में तो, जो आपसे खरीदा है। काड़ाजोल उसीके टेढ़े-मेढ़े बाकुड़ी के सिरे पर।

काँड़ाजोल का खेत। यहाँ-वहाँ लोग हल चलाते हैं। बैशाख महीना बीज बोने का समय है। महताब हल जोत रहा है। उसने अपने बलिष्ठ शरीर की सारी शक्ति से हल का मूठा दबा रखा है। दोनों बैल धीमी चाल से चल रहे हैं।

हलवाहा कुदाल से मेंड़ काटकर जल बाहर होने का रास्ता बना रहा है।

इसी समय घोंतन आकर खड़ा हो गया। पुकारा—महताब!

महताब ने मुहँ उठाकर देखा और कहा, मैं भंग पीने वालों के दल में नहीं हूँ। जाओ।

—एक बोड़ी पी लो।

—बक मत, मेरे पास समय नहीं है। आज दो दौरे बीज बोना है।

साथ ही साथ नाक और तालू से घड़ाम् शब्द कर दोनों बैलों को हाँकते हुए कहा—अरे, अरे बेवकूफ, बेहूदे, बैल कहीं के !

घोंतन बोला—अरे, रुककर सुन। उसने धमकाने के स्वर में ही बात कही।

—क्या ?

—कहता हूँ कि मनुष्य की बातें कितनी होती हैं रे ?

—क्यों ? बात एक। महताब दो बातवाला आदमी नहीं है।

—तो फिर ?

—तो फिर क्या ? इस बार महताब ने हल छोड़ दिया।

—तू तो दाता कर्ण बनकर माँ को धान छोड़ आया—

—हाँ, हाँ। वह तो तेरी माँ के लिये छोड़ दिया, तेरे लिये नहीं।

—समझा। फिर तेरा भाई धान क्यों माँगता है ?

—क्या ?

—तेरा भाई, कृपण सिताब—

—एक थप्पड़ में तेरे दाँत तोड़ दूँगा घोंतना। वह कृपण है तो अपने घर, तू क्यों कृपण कहेगा ?

—वह धान चाहता है क्यों ? पंचायत बुलाता है क्यों ?

—जा जा, घर जा। वह मैं बड़ी बहू से कह दूँगा। सब ठीक कर दूँगा।

—बड़ी बहू से कहकर ठीक करा देगा। घोंतन ठठाकर हँस पड़ा। गर्दन हिलाकर खूब रसिक के समान ही हँस कर बोला—हाँ, हाँ, वैसा ही करना। बात कहकर वह फिर थोड़ा हँसा।

महताब उसे हँसता देख चिढ़ गया, बोला—तू हँसता है रे, तू हँसता है ?

घोंतन ज्ञानी के समान बोला, हँसा। किन्तु तू चिढ़ता क्यों है ?

—तू हँसेगा क्यों ? महताब और दो कदम आगे बढ़ा।

—अरे ! अरे ! वह पीछे जाने लगा।

महताब ने झट से उसका हाथ दबाकर पकड़ लिया, बोल—बेटा, हँसा क्यों ? इस प्रकार क्यों हँसा ?

—छोड़, छोड़, छोड़—अरे बाप रे !

नोटन दौड़कर आकर बोला—छोटे मण्डल, छोड़ दो, छोड़ दो।

दूर से एक कण्ठस्वर लहराता आया—देवर !

दूर पर एक पेड़ के नीचे बड़ी बहू कादम्बिनी हाथ में गमछे से बँधा हुआ कलेवा लेकर खड़ी थी, सिर के बीड़े पर पानी का लोटा। खेत में काम करते समय किसानों की बहुयें भी खेत में स्वामी-पुत्र के लिये कलेवा ले जाती हैं। सिताब फसल तैयार होने के अलावा खेती का काम नहीं करता। हिसाब करना, देना-पावना, बीज का व्यवसाय आदि उसे बहुत काम हैं। महताब खेती में मतवाला रहता है। छोटी बहू को आदर कर काद खेत में बाहर निकलने नहीं देती। इस पर पागल का भी तो विश्वास नहीं, कहीं खेत में ही मानू से झगड़ा न कर दे। यदि उसको लगा कि गुड़ कम है या पूड़ी नरम है—तो एक कादू को छोड़ किसी का साध्य नहीं है कि उसको समझा-बुझाकर खिला सके। महताब के लिये कलेवा लेकर आने पर पेड़ के नीचे खड़ी होते ही उसकी नजर पड़ी कि घोंतन खड़ा है और कुछ कह रहा है। उसे यह समझने में कष्ट नहीं हुआ कि वह

धान की ही बात कर रहा है। एक क्षण बाद ही महताब के ऊँचे स्वर से चौंक पड़ी। इसके भी एक क्षण बाद महताब को युद्धोद्यत देखकर चिल्लाकर पुकारे बिना न रह सकी।

महताब ने चौंककर उसकी ओर देखा।

नोटन बोला, बड़ी मालकिन!

दूर से ही कादू बोली, छोड़ दो देवर! छोड़ दो।

महताब ने घोंतन को छोड़ दिया, जा बेटा, धोखेबाज, आज तुझे छोड़ दिया। दूसरे दिन तुम्हें घूसों से कटहल की तरह पका दूँगा।

घोंतन हाथ से हाथ सहलाता चला गया।

महताब पेड़ के नीचे जाकर बोला, बेटा हँसता है। देखो तो तमाशा!

कादम्बिनी बोली—इससे क्या? हँसना तो अच्छा है।

—अच्छा है। ऐसी हँसी अच्छी है? अगर अच्छी है तो मेरा शरीर क्यों जलने लगता है?

—लो, भींगे गमछे से शरीर पोंछ डालो। जलन ठण्डी हो जायगी। थोड़ा समझो। सब से मारपीट अच्छी नहीं है।

—तुम ऐसा कहती हो? तुम्हारी बात से कभी चिढ़ता हूँ मैं?

बड़ी बहू ने पानी का लोटा बढ़ा दिया। मुहँ धोओ। हाथ धोओ।

महताब हाथ-मुहँ धोने लगा।

बड़ी बहू बोली, मेरी बात से नहीं चिढ़ते यह तो कोई बात नहीं है। दूसरी की बात से ही क्यों चिढ़ोगे? छिः, क्या हुआ?

घोंतन हँसा ही क्यों?

—क्यों ! अब महताब ने चिल्लाकर कहा—क्यों ! तुम्हारा नाम लेकर हँसा क्यों ?

बड़ी बहू ने उसके मुहँ की ओर देखकर भौंहें टेढ़ी कर बोली—मेरा नाम लेकर ?

—हाँ। फिर ऐसा हँसता है जैसे शराब पीकर हँसता हो, दो, मूड़ी दो।

कहकर मूड़ी का कटोरा खींच लिया। उसमें जल डाल लिया। गुड़ की कटोरी से एक चम्मच गुड़ निकाल कर उसमें मिला दिया। इसके बाद बोला, बेटे का हाथ तोड़ देता।

बड़ी बहू कादम्बिनी विचित्र हँसी हँसी।—अच्छा वे हँसे, उन्हें हँसने दो। दूसरे का हाथ तोड़कर तुम्हें झंझट बढ़ानी न होगी।

अपने हाथ में मूड़ी का बड़ा कौर लेकर महताब बोला—इसी तरह हँसेगा घोंतना ?

—जिन पर न्याय का भार है, वे ही न्याय करेंगे। उससे मेरे शरीर पर फोड़ा नहीं पड़ेगा। किन्तु वह फिर तुम्हारे पास क्यों आया था ?

—यह देखो। अभी भूल जाता। तुम उस कृपण से कहो कि मैंने घोंतन को जो धान छोड़ दिया है, उसको इस बार खेती में पैदा कर दूँगा —कर दूँगा—कर दूँगा।

कह कर वह बड़े-बड़े कौर खाने लगा।

चाँपाडाँगा की बहू ने हँस कर कहा, कहता है कि बड़े मण्डल नहीं छोड़ेंगे ?

खाते-खाते महताब बोला, पंचायत बुलाया है। आज ही शाम को।

चाँपाडाँगा की बहू ने गर्दन हिला कर कहा—नहीं-नहीं-नहीं। वह घोंतन के लिये नहीं है। आज पंचायत बैठेगी, शिवकृष्ण-रामकृष्ण की हाँड़ी अलग होगी। सम्पत्ति का बँटवारा होगा।

—उहूँ, घोतना कह गया है। कृपणों के सरदार ने आदमी भेजा था।

चाँपाडाँगा की बहू ने भी भौंहे टेढ़ी कर सोच लिया।

महताब ने उत्तर की प्रतीक्षा कर कहा, तुम कह देना।

—कहूँगी। कहूँगी। तुम खाओ।

—बस। निश्चिन्त रहूं न ?

—हाँ जी, हाँ।

—इस बार ऐसा जोतूँगा—देखोगी।

—जोतना। इस समय खा लो।

महताब बड़े-बड़े कौर में मूड़ी खाने लगा।

यह मामला समझने में चाँपाडाँगा की बहू को देर न लगी। वह मंडलबाड़ी की गृहिणी है और सिताब भी सम्पन्न होने के कारण यहाँ के पंचायत का एक मण्डल है। इसलिये गाँव का सब समाचार जानना उसके लिये स्वाभाविक है। रामकृष्ण और शिवकृष्ण दोनों भाइयों में बहुत दिनों से बन-बनाव नहीं हो रहा था। इससे वे अलग होने जा रहे हैं। इसीलिये आज सन्ध्या समय पंचायत बैठने वाली है।

इसी अवसर पर सिताब ने घोंतन का मामला भी पंचायत के सामने उपस्थित करने की व्यवस्था की है। यह बात कादम्बिनी ने तुरन्त समझ ली। यह उसे अच्छी नहीं लगी।

वह सिताब से चिढ़ गयी। यह क्या ? क्या उसकी यह आदत कभी

न छूटेगी ? एक दिन जब अवस्था खराब थी, उस समय की कृपणता समझ में आती है, किन्तु आज इतनी कृपणता क्यों ? इसके अतिरिक्त महताब मूर्ख भले ही हो, किन्तु है तो घर के आधे का मालिक ! इसमें उसका जो अपमान है। वह महताब से स्नेह करती है। महताब सरल, निर्बोध है, उसके सिर में भी एक गोलमाल है, इसपर भंग पीता है, लोगों से मार-पीट कर आता है, जानवरों से लड़ाई कर आता है, सब कुछ सत्य है; किन्तु सिताब को मृत्युशय्या पर पड़ी हुई माँ की बात क्या याद नहीं आती ? उस समय चाँपाडाँगा की बहू की उम्र थी पन्द्रह-सोलह वर्ष महताब की चौदह-पन्द्रह। मृत्युशय्या पर सास ने बहू को बुला कर कहा था – बहू, इस पागल को तुम्हारे हाथ देती हूँ, तुम इसे देखना।

महताब को बुला कर माँ बोली थी—बड़ी भौजाई और माँ समान होती हैं। चाँपाडाँगा की बहू की बात कभी अमान्य न करना। वह मेरी साक्षात् लक्ष्मी है।

सिताब को बुला कर कहा था— सबका भार तुम पर है बाबा। बहू का अनादर न करना, वही इस घर की लक्ष्मी है। तुम बहू का ध्यान रखो, महताब का ध्यान रखो।

चाँपाडाँगा की बहू ने अपने वचन का पालन किया है। उस बचन की रक्षा में केवल उसने कर्तव्य का पालन ही नहीं किया है, वरन उसमें उसके साथ अकृत्रिम स्नेह का भी योग है। बुद्धिहीन महताब आज भी उसी बचपन के समान ही चाँपाडाँगा की बहू को जकड़ कर पकड़ना चाहता है। जब उसे क्रोध आता है, तो भयंकर हो जाता है। जब बदला नहीं ले पाता तो फर्श पर सिर पटकता है। उस समय उसके सामने कोई नहीं

जाता। जाती है चाँपाडाँगा की बहू। चाँपाडाँगा की बहू के सामने जाते ही महताब के क्रोध की मात्रा कम हो जाती है। वह मुँह उठा कर उसकी ओर देखने लगता है। चाँपाडाँगा की बहू कहती है, छिः! छिः!

पहले महताब प्रतिवाद करता है।

बड़ी बहू फिर कहती है—छिः! छिः! तुम्हारे लिये छिः-छिः कर मर गई। क्या तुम सदा बच्चे ही रहोगे?

अब महताब अपनी ओर न्याय को प्रबल करने की चेष्टा करता है।

बड़ी बहू कहती है, सब समझती हूँ। अन्याय उन्हीं का है। किन्तु संसार में जो सहता है, वही महापुरुष है!

महताब शान्त हो जाता है।

उसी ने महताब का विवाह भी कराया है। मानदा उसकी ही जाति की कन्या है।

मानदा देखने में बहुत अच्छी है। इसके अतिरिक्त काम-काज में इतनी चतुर स्त्री किसान के घर खूब कम मिलती है। केवल सिताब ही क्या सब भूल गया है? केवल पैसा-पैसा रटते-रटते कैसा होता जा रहा है।

चाँपाडाँगा की बहू का सदा हँसमुख मुँह उदास हो गया। वह स्वामीके इस आचरण के समाचारसे मर्माहत हो गयी। महताब इस घर के आधे का मालिक है, उसमें बुद्धि नहीं है, किन्तु उसके सबल शरीर के परिश्रम से ही धान की जमीन और घर का खलिहान भर जाता है। केवल इतना ही नहीं—उनको सन्तान नहीं है, इसी महताब का लड़का मानिक ही तो इस वंश का उत्तराधिकारी है।

उदास मन लेकर ही वह घर लौटी।

खलिहान-घर में बहुत-सी कुम्हड़े की लतायें ऊपर चढ़ने वाली हैं। सिताब एक कुदाल से उनकी जड़में गड्ढा कर रहा है। घेरे से सट कर हुक्का चिलम खड़ी है।

उससे थोड़ा ही दूर पर रामकृष्ण और शिवकृष्ण की दो विधवा काकियाँ बैठी हैं। उम्र में चालीस-बयालिस के लगभग—इन्दास और टिकुरी की बहुयें। दोनों ही पैर मोड़ कर बैठी हैं और आधा घूँघट काढ़ कर बात कर रही हैं। एक एक लकड़ी से मिट्टी पर दाग खींच रही है।

एक कह रही है, शिवकृष्ण-रामकृष्ण अलग होंगे बाबा, तुम लोग पंचायत कर बाँट देते हो, किन्तु हमारा क्या होगा ?

सिताब ने थोड़े रूखे स्वर में कहा, तो अकेले मुझसे कहने से क्या होगा ?

—मोटे मण्डल ने तुमसे ही कहने को कहा है बाबा। कहा—तुम लोग सिताब के पास जाओ। अवस्था में छोटा होने पर भी उसी की बात चलेगी। उसकी अवस्था अच्छी है। कोई ऐसा नहीं है, जिसने सिताब से रुपया या धान कर्ज न लिया हो। शिवकृष्ण आदि को भी देना है, सिताब ने कुदाल रख दी। बोला, झूठी बात काकी, झूठी बात है। दुनिया नमकहराम हो गयी है। समझो काकी। नमकहराम हो गयी है। यह देखो, वही घोंतन, वही यात्रा दल वाला धोखेबाज, उसको पंचायत में आने को कहा तो बोला, नहीं आऊँगा।

दोनों बहुओं में एक ने कहा—शिवकृष्ण—रामकृष्ण ऐसा नहीं कह सकेंगे बाबा। तुम्हारे घर में जायदाद बन्धक है। तुम्हारा कहना वे नहीं टाल सकेंगे।

सिताब ने जाकर हुक्का-चिलम उठा ली। और खींचते-खींचते आकर बोला, तो तुम लोग क्या कहती हो ? क्या बात है ?

चाँपाडाँगा की बहू इसी बीच न जाने कब घर में आ गयी थी। उसने आगे बढ़ कर कहा, और क्या बात है ? विधवाओं के खाने की व्यवस्था कर देनी होगी ! ऐसा न करने से चलेगा कैसे ? नहीं तो तुम्हारी पंचायत कैसी ? एक विधवा बोली—ठीक है। बहू आ गयी। तुम बतला दो तो बहू। तुम सिताब को बतला दो।

सिताब ने जल्दी से कहा, यही तो कहता हूँ, यही। तुम लोग क्या चाहती हो ? बतलाओ अलग रहना चाहती हो, या उनके परिवार में रहोगी ? बतलाना होगा न।

एक बिधवा ने कहा—अलग रहने से अच्छा होता बाबा। आजादी से रहती।

सिताब ने उत्साहपूर्वक ही कहा, ऐसा ही होगा। अलग ही रहोगी। दोनों भाइयों को थोड़ी थोड़ी सी जमीन तुम दोनों को देनी पड़ेगी।

दूसरी बिधवा बोली, इसमें मोटा मण्डल की राय नहीं है। कहा है कि ऐसा मैं नहीं कर सकूँगा। तुम लोग दो दिन बाद अगर किसी को जमीन बेच दो—

सिताब बोल उठा—बेचे, तो बेच दे।

चाँपाडाँगा की बहू ने कहा, नहीं। मोटा ससुर ठीक कहते हैं। इससे परिवार नष्ट हो जायगा। काकियों को भी सोचना होगा—यह परिवार ससुर का परिवार है, स्वामी का परिवार है। रामकृष्ण--शिवकृष्ण ही तो काकियों को जल देंगे। तुम लोग ऐसा न करो काकी। तुम्हें अधर्म होगा।

—किन्तु अगर दुःख देंगे तो बहू ?

—कोई अपने मन से किसी को दुःख नहीं देता काकी, दुःख लेना पड़ता है। तुम जिसके घर रहोगी अगर उससे पेट के लड़के की तरह प्रेम करो, उसके परिवार को अपना परिवार जान कर परिश्रम करो, तो दुःख देकर वह कहाँ जायगा ?

सिताब इसी बीच हुक्का कई बार व्यर्थ खींच कर धुआँ न निकाल सका। वह बैठ कर चिलम झाड़ कर तम्बाकू भरने लगा और बीच-बीच में विरक्ति के साथ हुं-हुं-कर रहा था। चाँपाडांगा की बहू की बात समाप्त होते ही वह बोला, तो जो होगा, होगा। काकी जो होगा, पाँच आदमियों की राय से होगा। सन्ध्या समय आओ! वह तुम्हारे कहने से भी न होगा, चाँपाडाँगा की बहू के कहने से भी न होगा। हम पाँच आदमी समझ-बूझ कर जैसा होगा, करेंगे। हाँ, जो होना होगा, होगा। सन्ध्या समय चण्डीमण्डप में आओ।

अच्छा आऊँगी बावा।

दोनों विधवायें चली गयीं। उनके जाते ही सिताब ने उनकी ओर देख कर अपने आप कहा, इन स्त्रियों का मण्डलपना मैं फूटी आँखों नहीं देखना चाहता।

बड़ी बहू दोनों विधवाओं के पीछे-पीछे दरवाजा बन्द करने गयी थी। दरवाजा बन्द कर लौट कर बोली तुम कैसे देखोगे ? काकियों को जमीनें बाँट कर उनकी जमीनें खरीदने के मतलब में बाधा पड़ रही है न ? यही मतलब मन में आया है ? छिः-छिः-छिः !

सिताब पकड़ा गया। अकस्मात् यही बात उसके मन में आयी थी,

जान पड़ता है कि यह मतलब स्वयं उसको भी स्पष्ट नहीं हुआ था। ठीक जैसे रोग संक्रामित शरीर की पहली अवस्था के समान। किसी के कहने से मालूम करता है, हाँ, शरीर अस्वस्थ ही तो हुआ है। चाँपाडांगा की बहू ने तीक्ष्ण दृष्टि से ठीक पकड़ा है। वह चौंक पड़ा। इस चौंकने के धक्के से हाथ की चिलम उलट गयी, हुक्का गिर पड़ा। वह चाँपाडांगा की बहू की ओर देख कर बोला, तुम्हारी शपथ, यह हुक्का छूकर कहता हूँ।

चाँपाडांगा की बहू बोली, मेरे मरने से ही तुम्हारा क्या? और हुक्का छूकर झूठ बोलने से ही क्या होता है?

सिताब ने अप्रतिभ होकर कहा, हुक्का छूकर बोलने से ही क्या होता है? तुम्हारे मर जाने से ही मेरा क्या?

—हाँ जी। बतलाओ न, क्या होता है?

सिताब ने पटक कर हुक्का फोड़ दिया और बोला, तुम कहती हो हुक्का कुछ नहीं है! यह लो।

—अब कुदाल से मेरा सिर काट दो!

सिताब ने चिल्ला कर कहा, चाँपाडांगा की बहू अनाप-शनाप मत बको।

चाँपाडांगा की बहू ने खूब गम्भीर होकर कहा, दूसरे का घर फोड़ने न जाओ। तुम्हारा अपना घर फूट जायगा।

अब सिताब ने हाथ जोड़ कर कहा, हाथ जोड़ कर कहता हूँ चाँपा-डांगा की बहू, तुम रुको, तुम रुको।

चाँपाडांगा की बहू ने साथ ही साथ बैठ कर प्रणाम किया और

बोली, तुमने हाथ जोड़ा, मैं तुम्हें प्रणाम करती हूँ। प्रणाम करने के बाद उठ कर कहा, और एक बात तुमसे कहती हूं। घोंतन घोष का धान महताब ने छोड़ दिया है, फिर भी तुमने आदमी भेज कर उसे पंचायत में बोला है। अच्छा नहीं किया, अब वह बात न उठाओ।

सिताब चंचल हो उठा, बोला, कौन कहता है ऐसा। यह तो बड़ा फसाद खड़ा कर दिया। पावना धान छोड़ दूँ ?

चाँपाडांगा की बहू ने कहा, महताब के मान से धान बड़ा है ? उसका अपमान होगा।

—बेवकूफ जान कर ठग लिया, इसमें अपमान न होगा और—

—नहीं, नहीं होगा। जो दान करता है, वही दाता है। दाता में बेवकूफ-बुद्धिमान नहीं होता। महताब ने दान किया है। अगर तुम न मानोगे तो है कह देती हूँ, उपवास करूँगी।

इतना कह तेजी से मकान के भीतर चली गयी।

सिताब अपने सिर के केश पकड़ कर बैठा रहा। अकस्मात् चिल्ला कर बोल उठा, मैं नहीं मानता। मैं नहीं मानता। मैं किसी की बात नहीं मानता। मैं हूँ सिताब मण्डल यह कह कर वह भी बाहर चला गया।

वह चाँपाडांगा की बहू से डरता है और उसके बिना उसका एक क्षण भी नहीं चलता।

चाँपाडांगा की बहू जैसे उसका दिल देख पाती है। कोई बात उससे छिपी नहीं रहती। इसके ऊपर उसकी कटी-कटी बातें। सिताब को पता नहीं चलता। चाँपाडांगा की बहू और भी विचित्र है, उसने अपने बाप के मरते समय दिये हुए हजार रुपये के····गहनों को सिताब के हाथ में

देकर बोली—रुपयों की कमी से तुम लक्ष्मीपुर के बाबुओं की चरभूमि को नहीं खरीद पाते हो, उसके न मिलने से तुम्हें दुःख होगा। उसे खरीद लो। मुझे पीछे रुपये देना।

लक्ष्मीपुर के बाबुओं के चरकी जमीन सोना पैदा करनेवाली है। उसमें एक-एक तरबूज पाँच-पाँच सेर का होता है। उस जमीन के खरीदने के बाद मण्डलवाड़ी ने फिर अपनी पूर्वश्री प्राप्त कर ली है। अपनी पहले की अवस्था को पार कर गयी है। किन्तु—। किन्तु क्या इसी कारण उसके हुक्म से उस घोंतन के समान पाषण्डी उद्धत शैतान को पावना धान छोड़ देना होगा। वह घोंतन को फूटी आँखों नहीं देख पाता। उसी स्कूल जीवन से ही! महताब का अपमान होगा? महताब उसकी अपनी माँ के पेट का भाई है। धन-दौलत, इस भूत का बेगार करना किसके लिये? खुद अपने लिये? वह कितनी मुट्ठियाँ खाता है? पहनता ही क्या है? क्या उसे अपनी सन्तान है? वह मण्डलवाड़ी के लिये परिश्रम करता है। सब कुछ पायेगा महताब का लड़का मानिक। मानिक के जो भाई उसके बाद होंगे वे। चाँपाडाँगा की बहू छोड़ अगर कोई दूसरी स्त्री होती, तो वंश रक्षा के लिये फिर विवाह करती। किन्तु सिताब ने वैसा नहीं किया। तुम वह नहीं मानते! घोंतन को पावना छोड़ देना होगा। रामकृष्ण शिवकृष्ण की जमीन वह नहीं खरीद सकेगा। तुम्हारी बात पर? प्रताप-मण्डल के मरने पर जमीन नीलाम पर चढ़ी थी—रामकृष्ण—शिवकृष्ण के बाप हरेकृष्ण मण्डल ने चादर शरीर पर ओढ़ और चट्टी पैर में पहन सदर जाकर प्रताप मण्डल के घरके सामने के तालाब का भाग खरीदा था। अभी वे उस तालाब के हिस्सेदार हैं। तुम्हारी बात पर उसे चुप रहना

होगा ! तुम सिताब को धर्म-अधर्म सिखाने आयी हो। क्रोध से अपने केश उखाड़ फेंकने की इच्छा होती है।

बाहर आकर गोशाले में खड़ा हो गया। पुकारा, गोविन्द, अरे गोविन्द ! गोविन्द !

गोविन्द गोशाले से बाहर निकल आया। क्या कहते हैं ? वह आँख मींचने लगा।

—सोया था ?

—सोया नहीं था। बैठा-बैठा ऊँघ रहा था।

—ऊँघ रहा था ?

—क्या करूँ ? बड़ी मालकिन के आये बिना दूध नहीं दुहा जायगा।

—तू एक काम कर। रामकृष्ण के घर दौड़ा जा। समझा ?

—गर्दन हिला कर गोविन्द बोला, हाँ।

—रामकृष्ण की दोनों काकियों को जानता है न ?

—जो अभी थोड़ी देर पहले आयी थीं, वे ही न ?

—हाँ। उनमें से जिसको पाना, बुला लेना। आड़ में बुला कर कहना—कोई जिसमें सुन न पावे। समझा ?

—हाँ। चुपचाप कहूँगा।

—हाँ। कहना—बड़े मालिक ने कहा है, तुम लोग जमीन माँगना। बस, इतना कह कर चले आना।

इतना कह कर अपने आप बोला, इसके बाद मैं देखूँगा। मैं किसी की बात नहीं सुनता। किसी की नहीं मानता। सब बहुत बढ़ गये हैं।

कहते-कहते गोशाला-घर से भी बाहर चला गया।

चण्डीमण्डप की पंचायत में सिताब सबके अन्त में आया। पंचायत में सब उसका इन्तजार कर रहे थे। प्रायः दस-बारह आदमी बैठे हैं। पंचायत का प्रधान मोटा मुखिया विपिन मण्डल स्थूलकाय है। उसके गले में तुलसी की माला और सिर में तिलक है। वह देखने में शान्त है। उसीके आस-पास बाकी लोग बैठे हैं। रामकृष्ण और शिवकृष्ण दोनों भाई दो विपरीत दिशाओं में बैठे हैं। कुछ दूर पर बैठी हैं, उनकी दोनों विधवा काकियाँ। बीच में एक लालटेन जल रही है।

चण्डीमण्डप के सामने चार-पाँच छोकरे अँधेरे में बीड़ियाँ खींच रहे हैं। एक कह रहा है जमीन तो कुल तीस बीघे हैं। इसमें से काकियों को जमीन देने से उनके पास रह ही क्या जायगी? दूसरे ने कहा, उनकी जिद है, कि वे जमीन ही लेंगी। परिवार में रहने का अर्थ है अधीन हो कर रहना। वे अधीन क्यों रहेंगी?

—ऐसा कहने से कैसे चलेगा, इन दोनों भाइयों की बात भी सोचनी पड़ेगी न?

—पंचायत क्या कहती है?

—मोटा मण्डल-नहीं कहता है और सब चुप हैं। सिताब के न आने पर मुहँ न खोलेंगे।

ठीक इसी समय गला साफ करने का शब्द सुनाई पड़ा। एक ने कहा, कौन है?

रास्ते के मोड़ से लालटेन हाथ में लेकर सिताब बाहर निकला। सब-ने एक दूसरे के मुहँ की ओर देखा। एक ने कहा, सिताब दादा!

सिताब बोला, और सिताब दादा का काम नहीं है, रास्ता छोड़ दो।

एक ने हँस कर कहा, क्या हुआ, मिजाज इतना खराब क्यों है ?

सिताब उनको पार कर चण्डीमण्डप की ताड़ के टुकड़ों से बनी हुई सीढ़ियों पर पैर रखकर बोला—समझते हो, सिताब किसी की बात नहीं मानता, समझते हो ? वह पक्का कृपण है। वह उचित बात कहेगा ही और उचितपावना तोला, माशा भी किसी को नहीं छोड़ेगा।

वह फट-फट ऊपर चला गया।

सचमुच उसका मिजाज खराब हो गया है।

महताब ने सन्ध्या समय कन्धे पर मृदंग लेकर संकीर्तन दल में योग देने जाते समय मकान के दरवाजे पर एक बड़ा गोहुअन साँप मारा है। वैशाख का महीना है, उसके पूर्व पुरुष गोहुअन साँप को ब्राह्मण कहते थे, इसके अलावा बहुत से साँप घर के लक्ष्मी के पहरेदार होते हैं। साँप बाहरी दरवाजे के पास से जा रहा था। महताब तो महताब है ही, इस पर तीसरे पहर भंग पी थी। साँप को देखते ही मृदंग उतार दिया और गुदाम से एक बाँस लेकर फट-फट दो तीन चोट में ही काम खतम कर दिया। उसने तिरस्कार कर कहा—हुँ, साँप यदि लक्ष्मी का पहरेदार हो तो महताब भी दिग्गज पण्डित है।

इसके बाद दोनों अगूँठे नचाकर बोला, तुम खाक जानते हो ? इस घर की लक्ष्मी का पहरेदार साँप नहीं महताब है। इस घर की लक्ष्मी हैं बड़ी बहू और महताब है पहरेदार। साँप को दिखा कर कहा, यह बेटा लक्ष्मी को काटने आया था। अभी बड़ी बहू दीपक जला कर जल देने आती। बस फन फैला कर काट लेता।

इतना कह कर मृदंग लेकर बाहर चला गया।

इसके अलावा पंचायत में आने के लिये हाथ में लालटेन लेकर पैर बढ़ाते ही आदरिणी बड़ी बहू ने पुकारा। पुकारने का कैसा ढंग है ?

—पीछे नहीं पुकारती हूँ। किन्तु याद करा देती हूँ। मेरे सिर की कसम है।

सिताब चौक पड़ा—। भौंहें टेढ़ो कर बोला—इसके माने ? हँस कर कादू ने कहा— इसमें और भी माने होती हैं क्या ? सिर की कसम के माने हैं सिर की कसम।

—यह तो समझा। किन्तु किसलिये ?

कादू ने उत्तर दिया—यदि सचमुच मुझसे प्रेम है, तो पंचायत में जाते-जाते किसलिये ठीक याद पड़ जायगा।

सिताब चिढ़ गया—उसे अहंकार अच्छा नहीं लगता, समझ भी नहीं पाता। किन्तु कादू को इसका अभ्यास है। कादू की स्पर्धा बढ़कर एकदम आकाश छूने लगी है। गाँव की बहुत सी स्त्रियाँ आड़ में कहती हैं मंडलवाड़ी में चाँपाडांगा की बहू अहंकार से फूली नहीं समाती। हँसकर इस प्रकार बात कहती है जैसे वृन्दाबन की राधा। सिताब को लगा कि वे झूठ नहीं बोलतीं। उसने उत्तर दिया— मैं किसी से प्रेम नहीं करता; हाँ।

सुन कर कादू को अपार हँसी आयी— अच्छा, फिर एक बार कहो, परीक्षा हो जाय।

—क्यों व्यर्थ परीक्षा करोगी ? क्या मुसीबत आयी है ?

रास्ते भर सिताब अपने मन ही मन क्रोध करता आ रहा है। मज-

लिस के आँगन में जाकर लालटेन रखकर प्रणाम किया। इसके बाद पंचायत में जा बैठा। बिपिन ने उसको देखते ही कहा, आओ बाबा। तुम्हारी ही इन्तजार में बैठा हूँ। लो, तम्बाकू पियो। उसने एक दूसरे आदमी को हुक्का दिया। सिताब हुक्का लेकर मजलिस से पीछे घूमकर पीने लगा। पीते-पीते ही बोला, इसके बाद ? क्या तय हुआ ?

विपिन बोला, इधर तो कुछ गड़बड़ नहीं है। एक प्रकार से जमीन का माप-जोख, हिसाब-किताब तो हो ही चुका है। रामकृष्ण-शिवकृष्ण ने अपनी-अपनी पसन्द भी कर ली है। बर्तन-टर्तन का हिस्सा कल सबेरे होगा। इस समय दोनों काकियाँ कहती हैं कि हमारे खाने के लिये जमीन बाहर कर दो।

शिवकृष्ण बोला, खाना देने पर हम राजी हैं, किन्तु जमीन देने पर हमारे पास रह ही क्या जायगा ?

एक काकी बोली, बाबा, तुम्हारे साथ या तुम्हारी बहुओं के साथ हमारा न बने तो ?

विपिन बोला, यह बात बहुत हो चुकी बहू। अब रहने दो। मैं जमीन देने की राय नहीं देता।

जिस बूढ़े ने हुक्का सिताब को दिया था, उसने कहा, कि कुछ धान बाँध दिया जाय, दोनों काकियों को देगें। और दोनों काकियों को रहने के लिये दो घर और रसोईघर देंगे।

विपिन बोला, यह भी बुरा नहीं है। बोलो सिताब क्या कहते हो ?

सिताब हुक्का लेकर मजलिस में आकर बोला, लीजिये पीजिये।

विपिन ने हुक्का ले लिया। सिताब बोला, आप लोगों के सामने मेरा कहना ठीक नहीं है। फिर भी न कहने पर भी नहीं चलता।

एक बिधवा बोली, बोलो बाबा, तुम न्याय की बात बोलो।

—न्याय की बात ही कहूँगा, किन्तु कोई क्रोध-बोध न करे।

धान-घर आदि देने की मेरी राय नहीं है। देखिये, दो वर्ष बाद अगर कोई धान बन्द कर दे, या किसी वर्ष अगर अच्छी फसल न हो? अगर न दे सके?

विधवा टिकुरी काकी बोली, यही बात है। बुद्धि-गुण से ही भात पर भी आफत रहती है और बुद्धि-गुण से ही पैसा रखने की जगह नहीं होती। पंचायत विचार कर देखे।

इन्दास की काकी ने साथ ही साथ हठ किया, इससे तो अच्छा है कि हम दोनों को पाँच बीघे के हिसाब से दस बीघे जमीन अलग कर दो बाबा। हम भी निश्चिन्त, तुम लोग भी निश्चिन्त। हम सात खाट की रस्सियों में नहीं रहेंगी।

उहूँ-उहूँ।—सिताब ने गर्दन हिलायी।—सात खाट की रस्सियों में नहीं रहेंगी, बोलने से क्या होता है काकी? वे तुम्हारे मुँह में आग देंगे, वे तुम्हारे मुँह में जल देंगे, वे तुम्हारा श्राद्ध करेंगे। बुढ़ापे में बीमार होने पर उन्हें ही तुम्हारी सेवा करनी होगी। वे तुम्हारे ससुर के वंश के, भसुर के लड़के और स्वामी के भतीजे हैं। तुम लोगों के पेट की सन्तान नहीं है, वे ही हैं तुम्हारी सन्तान। मैं कहता हूं कि जमीन भी न दी जाय, धान भी न दिया जाय, दोनों काकियाँ दोनों भतीजों के घरों में माँ के समान रहें, उसी प्रकार सब देखे-भालें, नाती-नातिनों को लेकर घर करें। ये सेवा करेंगे, श्रद्धा-भक्ति करेंगे, बस।

बिपिन बोल उठा—अच्छा है—अच्छा है—अच्छा है। इससे और अच्छी बात नहीं हो सकती। गोबिन्द! गोबिन्द! हरि बोल! हरि बोल!

सिताब बोला—पृथक होने से ही पृथक होता है। माँ-बेटा अलग होने पर माँ-बेटा पराये हो जाते हैं। और पराये को अपना बनाने पर पराया अपना हो जाता है। शिवकृष्ण-रामकृष्ण अलग हो रहे हैं, क्यों हो रहे हैं, नहीं जानता। वे होते हैं, तो हों। किन्तु तुम काकी लोग दो-भागों का चार भाग बना कर परिवार का सर्वनाश न करो।

दूसरे एक आदमी ने कहा,—बस बस। इसपर और कुछ बात नहीं। हरि बोल! हरि बोल!

और एक ने कहा, यही ठीक है। हरि बोल! हरि बोल!

मजलिस में कानाफूँसी होने लगी।

उधर ठीक इसी समय बाहर रास्ते पर से किसी एक आदमी की चिल्लाहट सुन पड़ी—न्याय करे पंचायत, इसका न्याय करे। क्या गरीब होने से मेरी मान-इज्जत नहीं है? पंचायत—कहते-कहते ही शरीर की चादर कमर में बाँधते-बाँधते राखाल पाल आकर उपस्थित हो गया। विश्वामित्र के समान क्रोधी दुबले राखाल पाल ने आकर बैठते ही भूमि पर एक मुक्का मार कर कहा, पंचायत इसका न्याय करे। मजलिस में सन्नाटा छा गया।

सिताब बोला, किसका न्याय रे बापू? अकस्मात् एकदम आकाश फाड़ कर चिल्लाने लगा!

राखाल बोला—चिल्लाऊँगा नहीं? जरूर चिल्लाऊँगा, पंचायत न्याय करेगी कि नहीं, बतला दे।

अब विपिन मण्डल ने कहा, क्या हुआ है, यही बतला ?

—मुझे मारा है। धम से एक थप्पड़। इस गाल पर देखो, पाँचों उँगलियों के दाग हैं।

उसने लालटेन उठा कर अपने गाल के पास रखी।

—आह ! ठीक है रे; किसने मारा है ?

—उसीका भाई। उसने उँगली से सिताब को दिखा दिया।

—महताब ? सिताब ने पूछा।

—हाँ—हाँ—हाँ।

सिताब ने सिर नीचा कर कहा, मैं कैसी विपत्ति में हूँ !

बिपिन ने पूछा—क्या यों ही तुमको महताब ने मारा ? महताब क्रोधी है, थोड़ा अबोध भी है, किन्तु योंही तुम्हें क्यों मारेगा राखाल ?

—नाम संकीर्तन दल में मैं मृदंग बजा रहा था। पंचायत बतलाये राखाल पाल के साथ मृदंग में कौन हाथ दे सकता है ! मैं ललकार कर कहता हूँ बतलाइये पाँच गाँवों में कौन है ?

—नहीं है। ऐसा ही सही। यह बात रहने दे। जो हुआ, वही कह।

राखाल बोला, इसीसे न होगा। बुलाओ कौन है ? बुलाओ। वह कुछ देर चुप रहा। वह इसीलिये चुप हो गया था कि देखें कोई उसकी आत्मश्लाघा का समर्थन करता है कि नहीं। इसके बाद बोला मुझे कहता है कि ताल काटा है ! वह स्वयं भंग पीकर ताल काटता है। उसका ठीक नहीं है। मैंने कहा, तुमने काटा है। वह शरीर के बल के कारण कहता है, नहीं तू काटता है। मैंने कहा, महताब पागलपन करना अपनी बहू से,

अपनी बड़ी बहू से, यहाँ मत करो। इस पर मेरे गाल पर एक थप्पड़ जड़ दिया।

बिपिन बोला, तू ने बड़ी बहू का नाम क्यों लिया ?

—तो क्या हुआ ? कहता हूँ इससे क्या हो गया ? कहता हूँ तुम लोग न्याय करोगे कि नहीं, बतला दो ?

सिताब बोला, होगा, न्याय होगा। अवश्य होगा। तू बैठ। पहले यह काम हो जाय, इसके बाद होगा।

—इसके बाद होगा ?

—हाँ ! तू बैठ।

—बैठूँ ? बैठना पड़ेगा ?

—हाँ रे, तम्बाकू पी।

—नहीं मांगता हूँ। मुझे न्याय नहीं चाहिये। नहीं चाहिये।

इतना कह कर राखाल तेजी से चला गया। बाहर जाकर बोला, बड़ा आदमी है न ? अपना भाई है न ? बेमौका थप्पड़ खाकर अगर मैं मर जाता तो ?

बिपिन ने कहा, गाँजा पी-पी कर राखाल के मिजाज में आग लगी हुई है ! महताब को थोड़ा सावधान कर दो सिताब। उसको भंग पीने न दो।

सिताब ने गहरी साँस छोड़ कर कहा, मेरा मरण है ! समझते हैं न ? मेरी बात क्या सुनता है ?

—चाँपाडांगा की बहू से कहो, सुना है उसे बहुत मानता है !

हठात् सिताब बोला, मैं जाऊँ, अभागे को एक बार देखूँ—

—बैठो, बैठो। सिर खराब मत करो। इनका काम खतम कर दो बाबा।

सिताब फिर बैठ गया। बोला, इससे अधिक साफ क्या कहूँ? दो काकियाँ दोनों भाइयों के हिस्से। कौन किसे लेगा, बोलें। काकियाँ भी कहें।

जिस व्यक्ति ने सिताब को हुक्का दिया था उसने कहा, छोटी काकी इन्दास की बहू तो छोटे भाई रामकृष्ण की सम्बन्ध में सास होती है। रामकृष्ण की बहू उसकी भतीजी है।

रामकृष्ण बोला, यह तो है। छोटी काकी का खिंचाव भैया के लड़के पर है। भाई की लड़की को दस कड़ी बात न कह कर जल नहीं पीतीं।

इन्दास की बहू बोल उठी, और तुम्हारी बहू मुँह में मैदा लेप कर सुनती है न? एकदम भलमनसाहत की प्रतिमा है! मुझसे न कहो। अपनी भौजाई के गुण सुनो। चुरा कर धान-चावल बेच कर पैसा जमा करती है। मैं कहती हूँ, साझे का परिवार है, चोरी मत कर। हिस्सेदार को धोखा देकर नहीं खाना चाहिये। इसीसे क्रोध करती है बाबा। उस दिन अपने लड़के को एक बाँसुरी खरीद दी। इस पर शिवकृष्ण का छोटा लड़का रोने लगा। मैंने कहा, उसे भी एक खरीद दो। पैसा तो साझे का ही है, मुँह टेढ़ा कर चली गयी। मैंने बाबा, एक बाँसुरी खरीद दी है। हाँ, खरीद दी है। वह लड़का मेरे पास रहना पसन्द करता है। इसीसे क्रोध है।

सिताब बोला, अच्छा, अच्छा। तो छोटी काकी शिवकृष्ण के परिवार में ही रहेगी।

—मैं रहूंगी। यही अच्छा है।

और मँझली काकी टिकुरी की बहू रामकृष्ण के परिवार में रहेगी। समझती हो काकी लोग ?

टिकुरी की बहू बोली, समझती हूँ बाबा, खूब समझती हूं। मैंने कभी इतना नहीं समझा था। आः मर जाऊँ, मर जाऊँ, मर जाऊँ।

—इसके माने ?

—माने ? तुम बाबा दुमुँहा साँप हो। एक मुँह से काटते हो, एक मुँह से झाड़ते हो। वही होगा। तुम पंचायत के लोग जो कहोगे, वही होगा।

कह कर वह उठ कर चली गयी।

सिताब ने पुकारा, काकी ! ओ काकी !

विपिन बोला, उँहूँ, पुकारो मत। जाने दो। बँटवारा करने में सब सन्तुष्ट नहीं हो सकते। जाने दो। अब शिवकृष्ण, रामकृष्ण, इन्दास की बहू बतलाओ, जो कुछ हुआ, उससे खुश हो न ?

शिवकृष्ण बोला, मुझे आपत्ति नहीं है।

—रामकृष्ण ?

—आप लोग जो कर देंगे, उसी पर राजी हूं।

इन्दास की बहू बोली, मैंने मान लिया है बाबा, मैंने मान लिया है।

सिताब खड़ा हो गया। तो मैं जाता हूँ ताऊ ?

बिपिन बोला, तो तुम्हारा वह कैसे होगा ? घोंतन का फैसला। घोंतन तो आया नहीं।

सिताब बोला, वह—वह मैंने छोड़ दिया। समझे न ? वह छोड़ दिया। महताब ने जब छोड़ दिया, तो वह बात रहने दो। किन्तु मैं कहना चाहता

था कि घोंतन मेरी ओर उँगली क्यों उठाता है ? समझे न ? और पागल को शिव बनाने का लोभ दिखा कर दस रुपये चन्दा क्यों लिया ? इसी-लिये । दस आदमी कहें, यह जुआचोरी है कि नहीं । अच्छा मैं चला, ताऊ ।

उसने बाहर निकल कर फिर प्रणाम किया और लालटेन हाथ में लेकर चला गया ।

सिताब ने मकान के दरवाजे पर पहुँचते ही चाँपाडांगा की बहू का उच्च स्वर सुन पाया । मकान के भीतर चाँपाडांगा की बहू किसी का तिर-स्कार कर रही है ।

—तुम दोनों भाइयों की जलन से मेरी हड्डी में स्याही पड़ गयी । तुम्हारी निन्दा सुन कर कान सड़ गया ।

सिताब ने दरवाजा खोल कर गोशाले में प्रवेश किया, इसके बाद खलिहान घर में गया । अब महताब की आवाज सुन पड़ी । मैं तुम्हें जलाता हूँ ? मैंने तुम्हारी हड्डी में स्याही डाली है ?

—नहीं डाला है ?

—कभी नहीं । वह तुम्हारा स्वामी डालता है—वही कंजूस, कृपण ।

—छिः छिः महताब ।

—और वही छोटी बहू । वही झगड़ालू, वही चनचनही, वही दुष्टा सरस्वती ।

मानदा की आवाज सुनाई पड़ी, अरी माँ रे, कहा है कि दरबार में हारने पर बहू को पकड़ कर मारे । तुम मुझे क्यों समेटते हो ?

सिताब मकान में न जाकर प्रकाश कम करके खलिहान-घर में चुप चाप बैठ गया ।

उस समय मानदा मकान के भीतर थी, घर से बाहर आकर बोली, खबरदार कहे देती हूं, मेरे विषय में बात न करो।

चाँपाडांगा की बहू बोली, मानू, तू चुप रह।

—क्यों चुप रहूं? मुझे क्यों समेटा इसमें?

महताब बोला—समेटूँगा नहीं। तू ने ही तो आज मुझे भंग पिलायी है। तू खरीद कर लाती है और पीस कर शरबत बना कर नहीं रखती? बोलती क्यों नहीं? तूने कहा कि सारे दिन भूत की तरह काम करते हो, जिसका बराबर अभ्यास है, उसे न खाने पर जियोगे कैसे? भंग पीने पर मुझे झट क्रोध आ जाता है। मैंने राखाल के गाल पर थप्पड़ जमा दिया।

—अब जाकर सुनो, राखाल की बहू गालियाँ दे रही है। वह मानिक को शाप दे रही है। तुमने क्यों इस प्रकार मारा?

—अपने पथभ्रष्ट होकर मुझे क्यों पथभ्रष्ट कहेगा? मैं पथभ्रष्ट हूँ? उसने मुझे कहा। क्या मैं पथभ्रष्ट हूँ?

—हाँ, तुम्हीं पथ-भ्रष्ट हो, तुमने ही रास्ता छोड़ा है। मैं कहती हूं। लो, अब मारो मुझे।

—बड़ी बहू! अच्छा नहीं होगा।

—लो, मारो न।

—अगर तुम छोटी बहू होती, तो अब तक पीट देता।

मानदा गरज उठी, मारो तो देखूँ?

—देखोगी?

बड़ी बहू बरामदे से आँगन में चली आयी। कल सबेरे मैं तुम्हारे

यहाँ से चली जाऊँगी। तुम दोनों भाइयों की मनोवांछा पूरी हो जायगी। उसकी भी होगी। दोनों भाई जो खुशी होगी, करोगे।

यही रात-दिन दोनों ओर दोनों भाइयों पर गालियाँ पड़ रही हैं। उधर रामकृष्ण के घर से, इधर राखाल की बहू। मैं और नहीं सकूँगी। मैं और नहीं सकूँगी।

इतना कह कर चाँपाडाँगा की बहू घर में चली गयी।

मानदा बोली, लो हुआ न! कोपभवन में कुण्डी लगी न!

अब न तो खायेगी, न जवाब देगी, लकड़ी बन कर पड़ी रहेगी।

सिताब घर में घुसा, वह अब न रह सका। वह यह कहते-कहते ही घुसा, इसको कहते हैं, यह तो बड़ा फसाद है। इसको कहते हैं, घुमाने पर लाठी, फिराने पर मुग्दर। वही हाल है! अरे भाई, मैंने क्या अन्याय किया है? तुमने जो कहा था, वही कर आया। जमीन, धान सब देना छोड़ कर दोनों बहुओं को दोनों भाइयों के हिस्से कर दिया। इसीसे टिकुरी की बहू गालियाँ दे रही है। रामकृष्ण आदि नहीं। तो मैं क्या करूँ? घोंतना पर से नालिश उठा लिया।

महताब आँगन में काठ बन कर खड़ा था, वह हठात् बोल उठा, तुम्हारी ही मनोवांछा पूरी हो—मैं अब चला।

सिताब व्यस्त होकर बोला, अरे, अरे, चला कहाँ? अरे, इस गँवार गोविन्द को लेकर क्या करूँ? अरे, सिताब भी बाहर निकल पड़ा।

बाहर निकल कर महताब बोला, उसी राखाल के पास जाता हूँ। उसके पैर पकड़ कर उसके पैरों पर नाक रगड़ते-रगड़ते चमड़ा छुड़ा आता हूँ।

मानदा व्यस्त होकर बोली, दीदी ! दीदी ! सुनती हो ?

बड़ी बहू फिर बाहर निकल आयी।

मानू बोली—वह फिर गया। मना करो।

—नहीं रहने दो। राखाल चतुर है, वह गाँजा पीता है, किन्तु कभी किसी की बुराई नहीं करता। धार्मिक आदमी है। उससे माफी माँग आवे। राखाल की बहू का शाप मैं और नहीं सुन पाती हूं।

मानदा बोल उठी—और टिकुरी की बहू का शाप ? बड़े मण्डल को पैर पकड़ने भेजो।

चाँपाडाँगा की बहू ने कहा—बड़े मण्डल न्याय कर आये हैं मानू। अन्याय नहीं किया है। टिकुरी काकी ही अन्याय से शाप दे रही है। वह शाप हमें नहीं लगेगा। और वह तो गालियाँ दे रही है, बड़े मण्डल को और मुझे। वह देवे। मानिक का अकल्याण न होने से ही हुआ।

शिवकृष्ण-रामकृष्ण पाल के मकान में एक ओर रास्ते के पास बरामदे में बैठकर टिकुरी की बहू जोर जोर से गालियाँ दे रही थी। कुछ दूर पर शिवकृष्ण-रामकृष्ण खड़े हैं। और कुछ लोग जमा हो गये हैं। उनमें घोंतन भी है। वह भीड़ में खड़ा होकर बीड़ी पी रहा है।

गँवई गाँव में उसी लोरी के समान बँधी हुई गाली- गलौज—शाप देना ! उसकी बनावट विचित्र है ! उसका स्वर विचित्र है ! टिकुरी की बहू कह रही थी, सर्वनाश हो जायगा, रास्ते में खड़ा होगा, फकीर हो जायगा जमींदार- महाजन डुगडुगी बजा कर सब कुछ नीलाम करा लें। टिन की छाजन आँधी में उड़ जायगी, पक्की फर्श फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जायगी। साँप-बिच्छू का बसेरा होगा। अकाल में मरेगा, अकाल में मरेगा,

बिना रोग के धड़ाधड़ चला जायगा। उस परिवार की चाँपाडाँगा की बहू की दशा मेरी जैसी होगी। उस ओर से घोंतन बोल उठा, ऐसा न होगा काकी, ऐसा नहीं होगा। यह शाप मत दो। फलेगा नहीं। फलेगा नहीं।

टिकुरी की बहू गरज कर बोली, तू कौन है रे, तू कौन है मुहँजला तू? कौन है?

घोंतन हँसता हुआ आकर खड़ा होगया।—मेरा मुहँ काला है काकी, किन्तु जला नहीं है, धब्बा पड़ा है। मैं हूँ घोंतन।

—ओ। अंग्रेजी पढ़ा बाबू। यात्रा दल का ठग। तू तो कहेगा ही रे! तुझे धान छोड़ दिया है, नालिश उठा ली है।

—अपने मन से उठाया। मैं हूँ घोंतन घोष। इड इट कर हल चलाने की बुद्धि नहीं है मेरी। मैं कल पुर्जा दबाना जानता हूँ। मछली के पेट के केचुये के घर की खबर रखता हूँ। जानती हो। मेरे नाम नालिश करेगा।

—तू मेरी ओर से एक नालिश ठोंक सकता है? पापर की दरख्वास्त या क्या कहते हैं उसको। गरीब-अनाथ जान कर जिसमें रुपया पैसा-नहीं लगता।

—कहने से कर सकता हूँ। घोंतन किसी से डरता नहीं।

—तो बैठ जा। मैं गाली दे लूँ। मन की जलन मिटा लूँ।

—सो कर लो। उधर रारवाल की बहू भी खूब मीड़ गयी है—रोग होगा, नहीं तो खाँसी होगी। लोहे की धरन टूट जायगी। लड़का मर जायगा। बहू भीख माँगेगी।

राग मिलाकर टिकुरी की बहू ने भी शुरू किया, माँगेगी भीख माँगेगी हर द्वार पर हरिबोल कह कर वह चाँपाडांगा की बहू—हठात् चौक कर टिकुरी–बहू बोली, कौन है रे ?

अँधेरे में सिर पर एक दोन लेकर नोटन जा रहा था।

—मैं हूँ, नोटन !

—नोटना ! तेरे सिर पर क्या है रे ? दोन है क्या ? इतनी रात को दोन लेकर क्या करेगा ?

—हाँ। ईख की जमीन सींचनी होगी।

शिवकृष्ण बोला—चुप रहो काकी। सिताब का हलवाहा नोटन, सब कुछ सुन गया। वह मालिक के घर जाकर सब कह देगा।

दोनों हाथों के अंगूठे को नचाकर काकी बोली, बह गई, बह गई। मेरी बैगनबाड़ी बह गयी। सुनेगा, सुनने के लिये ही तो कहती हूं। क्या मैं किसी से डरती हूं ?

उस समय सिताब के मकान के बरामदे में पीढ़े पर बैठ कर राखाल भात खारहा है। साथ में बैठे हैं-महताब और सिताब। चाँपाडाँगा की बहू परोस रही है। वह खटाई परोस रही थी। सब तालू चट-चटा कर खा रहे थे और साथ ही साथ कह रहे थे, आह !

राखाल बोला, और थोड़ा दो बहूजी। थोड़ा और ! खूब पका है। अच्छा हुआ है।

सिताब ने कहा—इससे क्या होगा ! कच्चे तेल की गंध निकल रही है। इतना तेल डाला जाता है। हुँ।

महताब बोला, तेल अधिक पड़ा है, तेल अधिक पड़ा है। बिना तेल के खाना पकाया जाता है क्या ?

राखाल बोला, अरे वही तेल तो खटाई का सौरभ········सुवास है। नशे में ऐसा लगता है, जैसे अमृत हो। वैसी ही रसोई भी कितनी अच्छी है! बचो रहो माँ सुख से रहो। परिवार का कल्याण हो! खाकर मुहँ ठण्डा हो गया। जला, लगा, कच्चा तथा अधिक नमकदार चीजों को खाकर जीभ में जैसे छाला पड़ गया था।

चाँपाडांगा की बहू ने कहा, सब हमारी छोटी बहू का बनाया है। —वाह—वाह—वाह! बलिहारी! बलिहारी! ऐसा होगा नहीं क्यों? महताब लड़का बड़ा अच्छा है बड़ा अच्छा है! भंग के नशे में मुझे थप्पड़ मारा था। मारे। भूल की है। और जाकर बोला—राखाल दादा, भूल हो गयी। मैंने भी कहा, बस, बस, ठीक है। सौभाग्य से पंचायत में नालिश नहीं की है! हाथ का तीर छोड़ना ठीक नहीं, छोड़ने से जाकर बिधँ जायगा। इसी से तो अपनी स्त्री से उसी समय से कहता हूँ—इस प्रकार गालियाँ न दो, न दो, किन्तु वह मुझे मनुष्य ही नहीं समझती। तुम लोग कुछ ध्यान मत दो—उसकी बात से कुछ नहीं होता। फिर वह भी ठंडी हो गयी है। महताब बोला, खाना होगा, आज ही रात में। मैंने आनाकानी की किन्तु उसी ने कहा, यह क्या, हाथ पकड़ कर बुला रहा है, जाओगे क्यों नहीं? पेट खूब भर गया। खूब।

मानदा ने लाकर दूध का कटोरा रख दिया।

—और क्या?

—दूध।

इसी समय बाहर धम से एक शब्द हुआ। सब चौंक पड़े महताब ˚जन छोड़कर कूद पड़ा।

—कौन ?

उधर से उत्तर आया, मैं हूँ छोटे मालिक।

महताब बाहर चला गया।

खलिहान घर में नोटन ने दोन जोर से पटकी है, उसी का शब्द है।

महताब बोला—दोन लाया है ?

—नहीं लाया ? तुम्हारा मन तो है वृन्दाबन, यदि बाँसुरी बजी तो रात को ही कहोगे; चलो दोन चलायें। तुम्हारे थप्पड़ से बहुत डरता हूँ।

—खड़ा रह बाबा, खली कूट कर रखी है कि नहीं देखूँ!

—बड़ी मालकिन ने ठीक रखा है। वह काम में भूल नहीं करतीं।

—अरे खली तो आयी है कल तीसरे पहर। आज कूटी कब ? बड़ी बहू—ओ बड़ी बहू!

वहाँ लौटकर मकान में घुसा। उस समय सिताब-राखाल खा चुके थे। वे हाथ पोंछते थे।

राखाल कहता है, तुमने पाल के घर बँटवारा कर अच्छा किया है सिताब। ठीक किया है। दोनों बहुओं को दोनों के घर कर दिया है, न्याय किया है। ऐसा न करने पर जमीन बेच-खोंच कर भाग जातीं। अच्छा किया। तो अब मैं चलूं। और मेरी स्त्री की गालियों पर ध्यान

न देना। मैं ठण्डा तो वह भी ठण्डी। मैं जाता हूँ। वह आयेगी, कल महताब के स्त्री-पुत्र को आशीर्वाद देने आयेगी। वह इतना कहकर पुलकित हँसा और मुस्कराहट से उठ खड़ा हुआ।

वह चला गया। उस ओर से आकर महताब घर में घुसा। महताब ने चिल्लाकर पुकारा, बड़ी मालकिन, कान में कितने भरी सोना पहना है? पूछता हूं, ईख की जड़ में देने की खली कूटी गयी है?

मानदा बोल उठी, तमाशा देखो! साँड़ के समान चिल्लाना देखो! उसने यह बात धीरे से ही कही थी, क्योंकि ससुर थे। किन्तु वह किसी के कान में पड़ने से बाकी न रही, उसने बाकी के लिये कही भी नहीं थी।

महताब फट पड़ा, आऊँ। मार कर दाँत तोड़ दूँगा। वह आगे बढ़ भी गया।

बड़ी बहू बाहर नहीं थी। उसने घर से बाहर आकर महताब के सामने खड़ी होकर कहा, क्या होता है? होता है क्या?

महताब ठिठक कर खड़ा हो गया। बड़ी बहू बोली—मारोगे! सुनूँ क्यों मारोगे?

महताब—तुम्हें नहीं। उसी दुष्टा सरस्वती को।

मानदा बोली, अच्छा! मैं जैसे बाढ़ में बह कर आयी हूँ।

—अरे तुमने मुझे साँड़ क्यों कहा,?

बड़ी बहू ने कहा, और तुमने उसे दुष्टा सरस्वती क्यों कहा; और साँड़ तो अच्छी बात है। बाबा शिव का बाहन है। माँ दुर्गा का सिंह उससे नहीं जीतता।

—मुझे बेवकूफ बनाती हो?

—नहीं। ऐसा कर सकती हूँ? ठंडा होकर बैठो। अभी क्या कह रहे थे? कान में कितना भारी सोना पहने हूँ, नहीं—क्या?

मानदा बोली, पूछो न, कितनी भरी दी है ?

महताब बोला, यह तो उस कृपण से कहो। केवल धान बेचा है, गुड़ बेचा है और रुपया जमा किया है।

सिताब अब अपने को रोक न सका। बोला, तुम दाता कर्ण बन कर लोगों को पावना छोड़ आते हो। ऐसा करने पर खाओगे—दो हाथ के बदले चार हाथ से खाओगे।

महताब उत्तर न पाकर अकस्मात् भूमि पर हाथ पटक कर चिल्ला उठा, मेरी खली क्यों नहीं कूटी गयी ? ईख का खेत सींचना पड़ेगा। इसके पहले खली न देने से, फिर एक महीने बाद रंग नहीं बदलेगा। खली क्यों नहीं कूटी गयी ?

सिताब बोला, कूट दी जायगी रे कूट दी जायगी। हैरान मत हो। दो-तीन दिन देर हो जाने से महाभारत अशुद्ध नहीं हो जायगा।

कादम्बिनी बोली, कल-परसों दो दिनों में मैं कूट दूँगी। तुम क्रोध मत करो। और सींचने में जल्दी न करो। जल बरसेगा, दो-तीन दिन में ही बरसेगा।

—बरसेगा। तुम्हारे हुक्म से बरसेगा। आकाश खाँ-खाँ कर रहा है। सब जला जा रहा है।

—बरसेगा। गरम नहीं देखते ? इसके बाद यह देखो ? लालटेन हाथ में लेकर उसने दीवार पर प्रकाश डाला और हाथ की उँगली से दिखा कर बोली, जमीन से चींटियाँ मुँह में अण्डे लेकर ऊपर चढ़ रही हैं।

देखा गया, लाखों चींटियाँ कतार बना कर ऊपर चढ़ रही हैं।

बड़ी बहू बोली, केवल एक जगह नहीं, आज मैंने पाँच-सात जगह देखी है।

—आ तेरी, तब क्या ! कहकर महताब उछल पड़ा। इसके बाद बोला, दादा बैठो, बैठो। तम्बाकू भर दूँ। इतना कह कर चिलम लेकर तम्बाकू भरने बैठा।

बड़ी बहू ने पुकारा, मानू आकर खा ले।

बड़ी बहू ने देखने में भूल नहीं की। सचमुच रात में पानी बरसा। जोर-जोर शब्द करने से मेघ गरजने से महताब की नींद टूट गयी। वह झटपट उठ कर बैठ गया।

मानू इस समय उठ गयी है। वह घर की खिड़कियाँ बन्द करने में व्यस्त है।

महताब तुरन्त नींद टूटी हुई आँखों से विह्वल के समान बोला, जल ? मेघ गरजता है ?

मानू बोली, छींटे से सब भींग गया।

महताब बोला, भींगने दे, भींगने दे। बन्द न कर मानू, बन्द न कर।

—बन्द न करूँ ?

—नहीं। देखूँ कैसा जल बरस रहा है !

उठ कर मानू का हाथ पकड़ लिया। बोला; यहीं बैठो। बैठे-बैठे जल देखें।

मानू ने ओठ टेढ़ा कर कहा, जल देखोगे ?

—हाँ। मेरी गोद में सिर रख कर सो। मैं जल देखूँ और तुझे देखूँ। हठात् इस बरसात की रंगत में उसका आवेग उमड़ पड़ा। उसने दोनों हाथों से मानू का मुँह पकड़ कर कहा, पगली पगली पगली ! तुझे मैं खूब चाहता हूँ।

—खाक चाहते हो। दिन रात मारूँगा, मारूँगा, और न कहने लायक बुरी बातें कहते हो।

—अरे वह बात तुझे नहीं कहता मानू, तुझे नहीं कहता। तेरी जली-भुनी बातों को—

—हुँ। बड़ी मालकिन की बातें मीठी लगती हैं। उसकी बार ?

—अरे बापरे ! दोनों हाथ जोड़ कर सिर से लगाते हुए महताब बोला, अरे बाप रे ! बड़ी बहू, वह तो घर की लक्ष्मी है।

महताब ने मानदा को जोर से छाती में चिपका कर जैसे पीस डाला।

उधर चाँपाडाँगा की बहू घर में अकेली बैठकर बाहर की वर्षा देख रही है।

सिताब सिकुड़ कर सो रहा है। दुर्बल शरीरवाले सिताब को थोड़े में ही शीत लग जाता है। गर्मी में भी वह एक चादर पैर के नीचे रख कर सोता है। चाँपाडाँगा की बहू स्वामी का सिकुड़ना देख कर हँसी और उसके शरीर पर चादर डाल दिया। उस घर में मानिक रो उठा। चाँपा-डाँगा की बहू ने एक लम्बी साँस छोड़ी।

चतुर्थ परिच्छेद

देखते-देखते वर्षा होने लगी। जेठ मास के अन्त में ही। दिन-मौसम में क्या हो गया है—यह बात खेती करने वाले साधारण मनुष्य नहीं समझ पाते हैं। बहुत दिनों की कहावत है—"चैत में मथर-मथर (धीमी-धीमी), वैसाख में आँधी-पत्थर, जेठ में माटी फाटे, तब जानो वर्षा बाटे।" अर्थात् चैत में आधा गर्म आधा ठण्डा, वैसाख में आँधी-तूफान, जेठ में तेज धूप ऐसा होने पर अच्छी वर्षा अवश्यम्भावी जानना। और यह फागुन के अन्त से ही गर्मी पड़ रही है, चैत-बैशाख में प्रचण्ड धूप, आँधी-तूफान नहीं! कभी-कभी एक-दो बार पानी बरसा, पत्थर नहीं पड़ा। इसके बाद जेठ मासके अन्तमें वर्षा के बादल गरजते हुए चले आ रहे हैं। किसान बीज नहीं छींटते हैं। वर्षा जैसे उनको बेवकूफ बनाकर बिजली की मीठी-मीठी चमक से कौतुकपूर्वक हँस कर तमाशा कर रही है। महताब वर्षा के बादलों को रोज गालियाँ देता है। वह बड़े विक्रम से खेतों में कूद पड़ा है। सूखी धूल में थोड़े ही बीज बोये गये हैं। बाकी बीजों को जोत कर छींटना होगा। दस-दिनों में वह काम खतम कर महताब खेतों में पानी बाँध कर उन्हें जोत रहा है। इस समय सिताब भी खेत में है। वह कभी थोड़ी कुदाल चलाता है, और कभी एक आध बार हल की मुठिया पकड़ता है। वह मेंड़ पर बैठ कर तम्बाकू भरता है और पीता है। वह महताब को बुला कर हुक्का देता है और हल पकड़ लेता है।

महताब कहता है, पागलपन न करो। भैंसों की पूँछों के झटके से घर में पड़ जाओगे। महताब दो बड़े-बड़े शरीर वाले भैंसों से हल चलाता है।

नोटन हलवाहा मुँह दबा कर हँसता है। छोटा मालिक झूठ नहीं कहते। उसके बड़े मालिक ताड़ के पत्ते के सिपाही हैं।

उस दिन आषाढ़ की पन्द्रहवीं तारीख है। गत दो दिनों से मूसलाधार वृष्टि हो रही थी। खेत-घाट प्रायः बह रहे हैं। सवेरे भी घन घटा छायी हुई है। रिमझिम वर्षा हो रही है। चाँपाडांगा की बहू बरामदे में आँचल बिछा कर सोयी है, और अलस दृष्टि से मेघ पूर्ण आकाश की ओर देख रही है। मानिक कटोरी में मूड़ी खा रहा है।

मानदा भींगते-भींगते एक ढेर बर्तन लेकर घर में घुसी। धम से फर्श पर रख कर फिर दौड़ती हुई बाहर जाने को तैयार होगयी।

चाँपाडांगा की बहू बोली, मानू—

—आती हूं।

—जाती हो कहाँ नाचते-नाचते ?

—मछली।

—मछली !

—तालाब से मछलियाँ निकल रही हैं। छोटे-छोटे रोहू।

—रोहू निकले जा रहे हैं? गोविन्द को तालाब का मुँह बाँधने को कहो।

—तुम बोलो। मैं मछलियाँ पकड़ लाऊँ। सों-सों कर नाले के जल में कतार बाँध कर दौड़ रही हैं।

वह बाहर चली गयी।

मानिक खड़ा हो गया—मैं जाऊँगा। उसने अपनी प्यारी बाँसुरी लेकर एक बार बजायी—पू!

बड़ी बहू उसको गोद में लेकर आँगन में उतरी। नहीं तो यह ढीठ लड़का—जल में भींग कर नाच-कूद कर एकाकार कर देगा। महताब का ही पुत्र है न! खलिहान घर में आकर पुकारा—गोविन्द! गोविन्द!

मानिक ने बाँसुरी बजायी—पू-पू। वहाँ गोविन्द नहीं है। अवश्य ही वर्षा के आराम में गोशाले के बरामदे में घास के गद्दे पर सो रहा है। यह छोकरा आज कल काम में बहुत फाँकी दे रहा है। किसी दिन संध्या समय नहीं रहता।

सन्ध्या के पहले ही जानवरों को गोशाले में घुसेड़ कर भाग जाता है। वह भी दो-एक बछड़े बाहर छोड़ जाता है।

वह गोशाले में आकर घुस गयी।

गोविन्द सोया नहीं है। वह गाय घर में खड़ा होकर कमर पर हाथ रख कर नाच का अभ्यास कर रहा है। वह इसी बीच घोंतन के यात्रा-दल में भर्ती हो गया है। अपने मन से ही वह एक दो तीन, एक दो तीन चार गिन-गिन कर नाच रहा है।

चाँपाडांगा की बहू ने पुकारा—गोविन्द!

ताल भंग के अपराध के अपराधी के समान गोविन्द खड़ा हो गया।

चाँपाडांगा की बहू बोली—यह क्या होता है? आँय?

गोविन्द ने जीभ काट कर सिर नीचा कर लिया। मानिक ने बाँसुरी बजा दी—पू।

—पागल हो गया है क्या? अपने मन से नाचता है?

—यह कुछ नहीं है। क्या कहती हो ? वह सिर खुजलाने लगा।

—कुछ नहीं है! एक दो तीन, एक दो तीन, कह कर नाच रहा है, और कहता है, कुछ नहीं है।

अब गोविन्द बोला, नाच सीख रहा था। अब यात्रा में सखी बनूँगा न ? बोलो, क्या कहती हो ?

—यात्रा दल में सखी बनेगा ? तब तो वह खूब यात्रा-दल है।

—उहूँ। घोंतन घोष का दल। अबकी देखना कैसा गाता है ? हूँ।

—घोंतन घोष के दल में भर्ती हुआ है ?

बड़ी बहू स्थिर दृष्टि से छोकरे के मुँह की ओर देखती रही। उसने मामला समझने की चेष्टा की। उसके मनमें जैसे एक सन्देह होगया।

चरवाहा घबराहट में पड़ गया। उसने कहा, क्या कहती हो ?

चाँपाडांगा की बहू बोली, सावन महीने से तेरा जवाब हो गया गोविन्द। तुझे और काम करना नहीं होगा। मास के अन्तमें वेतन—

इतना कहते ही याद पड़ा कि गोविन्द वेतन नहीं पायेगा। उसने पूजा तक पेशगी ले ली है।

फिर उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देख कर बोली, इसीलिये तू संध्या के पहले ही भाग जाता है ? फिर थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोली—घोंतन तुझसे हमारे घर की बातें पूछता है न गोविन्द ? क्या पूछता है ?

गोविन्द के कुछ कहने के पहले ही छोटी बहू ने एक आँचल मछली लेकर प्रवेश किया। ओ दीदी! पाढ़े के साथ सब लड़कों ने जुट कर मछलियाँ पकड़ लीं। वे झुण्ड की झुण्ड निकल रही हैं—एक सौ, दो सौ

—पकड़ने दो। तू पानी—कीचड़ में नाच कूद आयी।

—यह देखो, कितनी मछलियाँ पकड़ी हैं ?

आँचल खोल कर उसने झर झर मछलियाँ गिरा दीं। मानिक ने बाँसुरी बजा दी। बहुत छोटे नहीं हैं, पिछले साल के रोहू हैं। कोई एक पाव, कोई तीन छटाँक। कतली पाँच पौवे की हैं।

चाँपाडाँगा की बहू ने घोंतन की बात छोड़ कर गोविन्द से कहा, गोविन्द जल्द जा। जब तक है, काम करना होगा न,। जा!

तालाब साझे का है। फिर भी सिताब का ही भाग अधिक है। सिताब ने खरीद-खरीद कर अपना भाग दस आने के लगभग कर लिया है। तालाब उसके मकान के पास है। इसलिये वह उसकी हिफाजत करता है। सिताब के बाद बड़ा भाग है विपिन पाल का, अर्थात सवा तीन आने या पाँच भागों में एक भाग। बाकी ग्यारह पैसे के भागों में हैं कई लोग। रामकृष्ण-शिवकृष्ण का हिस्सा तीन पैसे के लगभग है। वह भी सिताब के पास कर्ज में बन्धक है। शिवकृष्ण के हिस्से की चाची-टिकुरी बहू-मछलियाँ चढ़ रही हैं, और लड़के मछलियाँ पकड़ रहे हैं, सम्बाद पाकर दौड़ी आयी। और कमर में गमछा बाँध कर रास्ते पर खड़ी होगयी। उसने लड़कों पर गाली-गलौज की वर्षा शुरू कर दी।

—ओ छोकरो! अरे अभागो। अभागियों के पूतो! दूसरों को लूट-पाट कर खाने से कितने दिन चलेगा रे! हैजा आयेगा और छटपटा कर मर जाओगे रे! तालाब में शिवकृष्ण का डेढ़ पैसा भाग है, मेरा डेढ़ पैसा भाग देते जाओ। भागते हो रे! मैं क्या देखती नहीं हूँ ? मेरी आँखें नहीं हैं। ढेला फेंक कर मारूँगी, ढेला फेंक कर मारूँगी। दूसरे के तालाब में मछलियाँ निकलती हैं,—बड़ा मजा रहेगा। तल कर

खाओगे, अम्बल खाओगे औंर खाकर मरोगे। हैजा होगा, अम्बल शूल होगा —

कई लड़के रास्ते के किनारे के पेड़ की आड़ से झांक रहे थे। उनको देख कर टिकुरी बहू बोली—जाओगे कहाँ? रास्ता रोक कर खड़ी हूं। मेरे भाग की मछलियाँ दे दो। एक लड़के ने अपनी जीभ काट कर मटका कर कहाँ—देना कहने से ही दे दूँगा? मैंने मैदान में मछलियाँ पकड़ी हैं, कौन कहेगा कि वे तुम्हारे तालाब की हैं? उन पर लिखा है क्या?

—अरे बदमाश! लिखा नहीं है तो क्या मछलियाँ आकाश से गिरी हैं?

—कौन जाने? बड़े मण्डल का बड़ा भाग है किन्तु उनकी छोटी बहू ने तो कुछ नहीं कहा?

दूसरे लड़के ने कहा, वह एक आंचल भर कर ले गयी एक सेर के लगभग।

टिकुरी की बहू इस बार जल उठी,—वह ले गयी? जाऊँ, मैं भी एक बार जाऊँ। पहले तुम लोग मछलियाँ दे दो। दो, जल्द दे दो।

अकस्मात् एक पेड़ की आड़ से राखाल पाल बाहर निकला और अपनी झोली से कई मछलियाँ फेंक कर बोला, यह ले। ये तेरी मछलियाँ हैं।

टिकुरी की बहू ने झटपट पर सिर पर कपड़ा देने की चेष्टा की, किन्तु फेटा बँधा हुआ कपड़ा नहीं खुला। वह घूम कर खड़ी होगयी। अरी माँ रे! यह कौन? पालों का फाकला?

—फाकला! मेरा नाम फाकला? राखाल बिगड़ उठा।

—तो ससुर का नाम लूं क्या ? ········तू सम्बन्ध में ससुर होता है। बूढ़ा आदमी लड़कों के साथ मछली पकड़ने आया है। जाकर अपनी जीभ छौंको।

राखाल ने क्षण भर में ध्वनि-प्रतिध्वनि के समान जवाब दिया—गरम गरम तली हुई मछलियाँ खाकर तुम जीभ छौंकना बहू। तुम जीभ छौंकना। जीभ से और गालियाँ निकलेंगी। तप्त खपड़ी की खोंई की तरह फूटेगी।

तेजी से जाते-जाते राखाल फिर लौट कर खड़ा होगया और बोला, तुम मर कर मछुये की स्त्री होगी और मछली-मछली कर तालाब-तालाब पोखर-पोखर घूमोगी। सारे शरीर में जोंक लगेगी। यह मैं कह देता हूँ। इतना कह कर वह चला गया।

लड़के भी इसी बीच भाग रहे हैं। टिकुरी की बहू अब घूम कर खड़ी होगयी, उसने सिर पर घूँघट काढ़ लिया था। वह राखाल पाल के जाने के रास्ते की ओर देख कर बोली, तुम मर जाओ, तुम मर जाओ। अपघात से मरो। किन्तु मछली के बदले साँप पकड़ो और साँप काटने से छटपटा कर मरो। प्रेत बनो और अपनी जलन से जलते-जलते घूमो।

किन्तु वह मछलियाँ उठाने से न चूकी। वह जब मछलियाँ उठा रही थी, उसी समय बड़ी बहू खेत में खाना ले जाने के लिये घर से निकली और ठिठक कर खड़ी होगयी। वह बोली, क्या हुआ है टिकुरी काकी ?

मछलियाँ उठाते-उठाते सिर उठा कर चाँपाडांगा की बहू को देख कर टिकुरी-काकी बोली, अरे, मण्डल गृहिणी ! मेरी भामिनी !

मछलियाँ उठा कर सीधी खड़ी होगयी। बोली, तुम्हारी छोटी बहू साझे के तालाब की पाँच सेर मछलियाँ पकड़ कर घर चली गयी है ?

चाँपाडांगा की बहू अवाक् हो गयी, उसने कौतुक के साथ हँस कर कहा, पाँच सेर ? काँटे-तराजू से किसने वजन किया काकी ?

—काँटे-तराजू से किसने वजन किया काकी ! कौन वजन करेगा ? वजन कौन करेगा ? मैं क्या मछुआ की स्त्री हूँ ?

चाँपाडांगा की बहू अब परेशान होगयी। वह जानती है कि इसका सिलसिला बहुत दूर तक जायगा। इसीसे वह बोली—यह मैंने कब कहा है तुम्हें ?

—कहा नहीं है ? तब क्या कहा ? उस बात का अर्थ क्या होता है ?

—मैं नहीं जानती। छोटी बहू कुछ मछलियाँ पकड़ ले गयी है। वे मैदान में फैल गयी थीं। घर में हैं, तुम अपना भाग ले जाओ।

—जरूर ले जाऊँगी। हिस्से का भाग न्याय का धन है। यह अपने भाई को धोखा देकर जोड़ा हुआ धन नहीं है। मैं भाग जरूर लूँगी।

—अनाप-शनाप क्या कहती हो काकी ?

—ठीक कहती हूँ। देवर-प्रेमी, क्या हम देवर के प्रेम का अर्थ नहीं जानती ? किन्तु उससे अपने ही को धोखा होता है। कहती हूँ ठग कर जोड़ा धन कौन भोगेगा ? क्या गोद में कुछ हुआ ? इसीलिये सन्तान नहीं है। जैसा सिताब, वैसी तुम।

अब चाँपाडांगा की बहू ने गम्भीर स्वर में कहा, रुक जाओ टिकुरी काकी।

टिकुरी काकी रुक गयी। चौंक कर रुक गयी। चाँपाडांगा की बहू

की आवाज में जैसे क्या था, वह थी जैसी अलंघनीय वैसी ही भर्त्सनापूर्ण।

उसी कण्ठ स्वर में चाँपाडांगा की बहू कहने लगी, तुमने जो कहा है, वह अगर सत्य हो, तो भगवान मेरे सिर पर वज्र गिरा दें। और यदि झूठ हो तो उसका भी वे विचार करें। मैं कोई शाप न दूँगी।

वह लौट आयी, लौट कर ऊँचे स्वर से पुकारा—मानू, मानू।

मानू ने मकान के भीतर से उत्तर दिया, क्या कहती हो?

—इस टिकुरी काकी को इसके भाग की मछलियाँ दे दे। जाओ काकी, अपना भाग ले लो। मानू भी वह मूर्ति देख कर अवाक् होगयी। मुँह से कोई बात भी न निकली। वह मछलियाँ बहुत पसन्द करती है। उन्हीं मछलियों के देने के विरुद्ध भी कोई बात मुँह से न निकली।

इतना कह कर चाँपाडांगा की बहू फिर लौटी और गरीबिनी के समान अपने रास्ते पर चली गयी।

गाँव के रास्ते पर उस समय किसानों के घरों की स्त्रियाँ स्वामी-पुत्रों, बाप-भाइयों का भोजन लेकर खेतों में जा रही हैं। कमर पर टोकरियों में काँसे की कटोरियों में मूड़ी गुड़ आदि। पानी में वे भींग न जाय, इसलिये उनपर और एक टोकरी ढँकी हुई है। एक हाथ में पानी का लोटा। वे आगे जा रही हैं। चाँपाडांगा की बहू को आज देर होगयी है। किन्तु फिर भी वह चलने की गति तेज नहीं कर पाती है। उसकी छाती के भीतर कैसा हो गया है, शरीर जैसे भारी हो गया है। टिकुरी काकी ने उसकी छाती में जैसे बरछी भोंक दी है। इस आघात से उसका सारा अंग काँप रहा है। सब जैसे खतम हो गया है। वह गाँव के किनारे पर एक पेड़ के नीचे खड़ी हो गयी। वह और नहीं चल सकेगी।

पीछे से एक स्त्री आयी और उसे देख कर खड़ी हो गयी। चाँपा-डांगा की बहू खेतों की ओर मुँह कर खड़ी थी। वेदना भरे हुए हृदय के साथ विस्तृत मैदान का जान पड़ता है घनिष्ट सम्बन्ध है। ऐसी अवस्था में मन शून्य विस्तार की ओर देख कर सान्त्वना पाता है। काद-म्बिनी ने एक लम्बी साँस छोड़ी। यह विस्तृत पानी से भरा हुआ मैदान भी एक मास में हरी फसल में भर जायगा। किन्तु उसका मन हरा नहीं होगा!

उस स्त्री ने उसे देख कर कहा, बड़ी मालकिन!

चाँपाडांगा की बहू ने मुँह फेरा। इसी बीच न जाने कब उसकी आँखों से जल की धारा निकल पड़ी है।

उस स्त्री ने विस्मय से कहा, तुम रोती हो बड़ी मालकिन?

चाँपाडांगा की बहू को ख्याल नहीं था कि उसकी आँखों से जल निकल रहा है। यह सुन कर उसने लम्बी साँस छोड़ कर आँख पोंछने की चेष्टा की। दोनों हाथ फँसे हैं, इसलिये अपने मुँह को कन्धे के कपड़े में रगड़ कर आँखों के जल को पोंछने की चेष्टा की।

स्त्री ने पूछा—क्या हुआ है मालकिन?

उदास होकर चाँपाडांगा की बहू बोली, सिर बहुत पकड़ लिया है। मेरा शरीर कैसा कर रहा है?

सामने ही विस्तृत खेत हैं। वर्षा के बीच जुताई हो रही है। खेत-खेत में हल, बैल, मनुष्य हैं, किसानों के पेशियों से बलवान शरीर सामने झुक गये हैं, बैल कन्धे के जोर से हल खींच रहे हैं। कितने आदमी मेड़ों पर कुदाल से खोद रहे हैं। बीज के खेतों में घुटने गड़ा कर बीज के चारे उखाड़ रहे हैं।

बीच-बीचमें बीजों के बोझ सिर पर लेकर किसान रोपने के खेतों की ओर जा रहे हैं। कायदे से कीचड़ जोती हुई जमीन में स्त्री-पुरुष मिलकर धान के चारे रोप रहे हैं। चारों ओर मेढ़क कोलाहल कर रहे हैं। कीचड़ में जुती हुई जमीन के चारों ओर कीड़े-मकोड़ों की आशा से कौए उतरे हुए हैं। दो एक पक्षी इधर-उधर घूम रहे हैं। बीच-बीच में काले बादलों में सफेद बगलों की पाँतियाँ उड़ती जा रही हैं। मेघ से धुँधले दिन के साथ चाँपाडाँगा की बहू जैसे एकात्मता अनुभव कर रही है।

जो स्त्री चाँपाडाँगा की बहू के साथ बात कर रही थी वह उसके मुँह की ओर देख कर सहानुभूति से बोली, जब शरीर अच्छा नहीं है तो पानी में भींगती हुई आयी क्यों? छोटकी को भेज देती।

चाँपाडांगा की बहू बोली, नयन की माँ अगर अमरकुड़ी की ओर जाओ तो वहाँ कह देना—मैं यहाँ खड़ी हूं। और नहीं चल पाती हूँ।

--कह दूँगी-कह दूँगी। मैं छू नहीं सकती, नहीं तो मैं ही ले जाती।

-- बड़े मण्डल से कहना। महताब जोतना छोड़ कर आने से क्रोध करेगा। बड़े को बोल देना, आकर ले जाँयेगे।

अमरकुड़ी माने अमर कुण्ड। धान वहाँ नहीं मरता। वहीं उस समय सिताब का हल चल रहा था।

जुताई के समय सिताब भी खेत में काम करता है। वह कड़ा काम नहीं कर पाता, दूसरे सब काम करता है। कुदाल से खोदता है, धान रोपता है, कीचड़ में जुती हुई जमीन अगर कहीं ऊँची रहती है तो उसे पैरों से ठेल कर बराबर कर देता है।

सिताब की खेती बड़ी है। दो हल हैं। दोनों हलों का काम खतम

हो गया है, हल खुल जाने पर जुआ कन्धे पर लेकर चारों बैल घास खा रहे हैं। कई सन्थाल स्त्रियाँ धान रोप रही हैं। महताब कुदाल चला रहा है। सिताब हुक्का हाथ में लेकर खेत के एक ओर से दूसरी ओर तक घूम कर ऊँची जगहों को नीची कर रहा है।

नयन की माँ खेत के पास जाकर खड़ी हो गयी।

चाँपाडांगा की बहू का शरीर खराब है, वह नहीं आ सकेगी, सुनकर सिताब उद्विग्न चित्त से मेड़ों पर चल रहा था। पेड़ के नीचे आकर उसने देखा, चाँपाडांगा की बहू चुप होकर मिट्टी की मूर्ति के समान बैठी हुई है।

सिताब बोला, नयन की माँ ने कहा, तुम्हारा शरीर अच्छा नहीं है?

चाँपाडाँगा की बहू बोली—हाँ। साथ ही साथ आँखों के जल का बाँध टूट गया।

—अरे अरे, तो जल में भींग कर क्यों आयी? मलेरिया का समय है—देखूँ, सिर देखूँ। वह सिर पर हाथ रखने गया।

चाँपाडांगा की बहू ने सिर हटा कर कहा, नहीं।

—यह देखो, नहीं क्यों? देखूँ!

—नहीं, मुझे कुछ नहीं हुआ है।

—इसको कहते हैं, यह तो अच्छी विपत्ति है रे बाबा!

—लोगों की बातें मैं अब नहीं सहन कर पाती हूँ।

—यह देखो। किसने तुम्हें बात कही है? कौन? किसकी गर्दन पर तीन सिर हैं? बोलो, मैं उसे देखूँगा। महताब से कहने पर—

—नहीं। वह सुन लेगा, इसीलिये तो तुम्हें यहाँ बुलाया है। लोग

कहते हैं, महताब को ठग कर तुम पूँजी करते हो। तुम महताब से सब क्यों नहीं कह देते ?

—क्या मैं तुम्हें ही बतलाता हूं ?

—इससे हानि नहीं। किन्तु—

—वह मैं समझूँगा। वह मेरी माँ के पेट का भाई है। उससे कहूँ और वह सारे गाँव—सारे पाढ़े में कहता फिरे। किन्तु किसने क्या कहा है—मैं अपनी शपथ देकर कहता हूँ, तुम्हें बतलाना पड़ेगा।

—शपथ दिया है ?

—हाँ दिया है।

—कहा है टिकुरी काकी ने।

टिकुरी काकी उस समय सिताब के मकान के बरामदे में बैठकर मछली बाँटने में मानदा के साथ झगड़ा खड़ा कर दिया था। आँगन में मछलियाँ बाँट कर पड़ी हैं। एक ओर बहुत हैं, वह है सिताब का भाग, एक जगह है विपिन अर्थात् मोटे मण्डल का भाग, वह सिताब के भाग से कम होने पर भी बहुत कम नहीं है और कई भाग हैं, किसी में दो किसी में तीन मछलियाँ हैं।

मानिक के हाथ में एक मछली है। वह उसे दबा रहा है। टिकुरी काकी का भाग उन तीन मछलियों के भागों में से एक है। वह तीनों मछलियाँ उठाते-उठाते बोली, भागदार को धोखा देकर नहीं खाया जाता बचा, इससे कल्याण नहीं होता। समझी ? खाना मत। तुम्हारे एक लड़का है। भसुर से और उसकी स्त्री से यह विद्या मत सीखो। फल देख रही हो न ? तुम स्वामी-स्त्री को ठग कर छिपा कर पूँजी जमा कर ली है।

किन्तु क्या हुआ ! क्या चाँपाडांगा की बहू को सन्तान हुई ? उसने मछली सहित हाथ मानदा के मुँह के पास नचा दिया ?

मानदा ने समझ न पाया कि क्या कहें, उसने कहा, झूठी बात क्यों कहती हो ?

—झूठी बात ! झूठी बात ! गाँव के लोगों से पूछो। देवर सोहागी मेरी ! देवीपुर की बहू, तेरा मरन है। तू कुछ नहीं समझती। सुन लो। घोंतन लिखना-पढ़ना जानता है—भद्र लोग है—वह क्या कहता है सुनो। ऐसी देवर-भौजाई मैंने कभी नहीं देखा है। नया देखा है। तू मर जा छोकरी ! तू मर जा !

वह चली जा रही थी।

गोविन्द ने इस बार कहा, अरे, अरे तुमने राखाल पाल से जो कई मछलियाँ ली हैं, उनका हिस्सा करो। अरे मालकिन ! अरे मानिक की माँ, ओ छोटी मालकिन ! अभी उसका आँचल भरा हुआ है।

मानदा थर-थर काँप रही थी। उसका गला भर आया था। फिर भी वह स्थिर दृष्टि से टिकुरी बहू के जाने का रास्ता देख रही थी।

किन्तु टिकुरी काकी मछलियाँ लेकर शिवकृष्ण के घर नहीं गयी। इसी वर्षा में ही वह घोंतन के मकान पर पहुँची। घोंतन ने उसका मामला करने को कहा है। वही जमीन के बाँटने का मामला।

उस दिन सब रजिस्ट्री का आफिस बन्द था। उस पर वर्षा का दिन। घोंतन बरामदे में बैठ कर बायाँ तबला लेकर पीट रहा था। उसे गाना नहीं आता। तबला से ही उसकी संगीत-प्रियता का आवेग समाप्त होता है। धातिन—धा-धातिन-धा। वह मुँह से बोलता है और तबला

बजाता है। किन्तु बात-चीत में चतुर है। शकुनि, कालि, तक्षक आदि के पाटों में उसका खूब नाम है। काकी घोंतन के बरामदे में मछलियाँ गिरा कर बोली—ले बाबा घोंतन, तल कर खा। काकी जम कर बैठ गयी। घोंतन ने बजाना बन्द कर खुशी होकर कहा—अरे रोहू है काकी ?

—हाँ बाबा। पाया, सोचा कि घोंतन को दे आऊँ। हाँ, मेरे मामले में क्या हुआ बाबा ?

—हुआ है काकी। दरख्वास्त ठोंक दी है। लिख दिया है कि सिताब मण्डल, विपिन मण्डल आदि पंचों ने घूस खाकर विधवाओं की सम्पत्ति धोखा देकर शिवकृष्ण-रामकृष्ण आदि को दे दी है। एकदम मजिस्ट्रेट के यहाँ। अंग्रेजी में दरख्वास्त लिखी है।

कहते ही कहते झुक कर एक मछली उठा कर बोला, शायद तालाब से मछलियाँ बाहर निकली हैं ? बड़ी टटकी हैं। अच्छी भाजी होगी ! पुटी, ओ पुटी।

काकी बोली, साझे के तालाब की मछलियाँ हैं, मैदान में एकदम बाढ़ आ गयी है। महताब की बहू टोकरी में पकड़ कर घर में लेकर चली गयी थी। उससे मैं कहने गयी, तो इसमें चाँपाडांगा की बहू का क्या हर्ज था ? मैं भी हूँ टिकुरी की बेटी, मैंने खूब सुना दिया है। मैंने मुँह पर ही कह दिया है—मेरी देवर-सोहागी, घर के साझेदार का हिस्सा धोखा देकर खाने से तुम्हें एक भी नहीं हुआ। अब अन्तमें पाढ़े के साझीदारों को धोखा ! उसकी छोटी बहू से कह आयी हूँ। तेरे गले में रस्सी है। क्या देवर-भौजाई पृथ्वी पर और नहीं हैं ? वह किससे कहती हो ? झगड़ालू छोकरी ?

घोंतन बोला, तुम भी झगड़ालू हो काकी, तुम भी झगड़ालू हो।

—मैं झगड़ालू हूँ ?

ठीक इसी समय पुटी—घोंतन की अविवाहिता युवती बहिन घर का दरवाजा खोल निकल आयी।—क्या कहते हो ?

—इन कई मछलियों को ले जा। अच्छी तरह भाजी या शोरवा बनाना।

टिकुरी काकी बोली, अरी मॉरी ? पुटी ? तुम्हारी बहिन। यह तो हाथी हो गयी है ?

काकी की बात अनसुनी कर पुटी ने कहा, मैं नहीं कर सकूँगी। हाड़ी चढ़ती नहीं, फिर मछली भाँजना ? इस घर में तुम्हारी माँ ज्वर से कराह रही है, उस घर में तुम्हारी बहू कराह रही है। तुम बैठे-बैठे तबला पीटते हो ? मैं इतना नहीं कर सकती। तुम सबने मेरा हाथी सा डील ही देखा है।

—पुटी ! कड़ी आवाज में घोंतन ने शासन किया।

पुटी ने जाते-जाते लौट कर मछलियाँ उठा लीं और कहा, भाज नहीं सकूँगी। भून देती हूँ, खाना। घर में तेल नहीं है, और डाक्टर-कविराज जिसे हो बुलाओ—माँ को खूब ज्वर है।

—मलेरिया ज्वर, इसमें डाक्टर-कविराज क्या होगा ? तेजी से आता है और थोड़ी देर बाद उतर जायगा। यूनियन बोर्ड से मेपाक्रिन ला दूँगा, खाते ही छूट जायगा।

—अच्छा, उधर हिस्सेदार नेपाल कहार की बहू आकर बैठी है।

—मैं धान-पान नहीं दे सकूँगा। मैं कह दूँगा। धान नहीं है, तो दूँगा कहाँ से ?

—धान पीछे की बात है, इस समय धान का चारा नहीं है। जमीन रोपी नहीं जायगी। धान का चारा ला दो।

—धान का चारा? धान का चारा ही कहाँ मिलेगा मुझे? तो तुम्हारी जमीन पड़ी रह जायगी।—कह कर पुटी घर में चली गयी।

—रह जाय। मेरी बला से—कह कर घोंतन ने अंगूठा दिखला दिया। इसके बाद काकी से बोला—जैसे मैं अकेले ही खाता हूँ काकी, समझी काकी? हुँ। कह कर अकारण तबला ठोंक दिया।

—मैं चली बाबा। थोड़ा जल्दी करो, समझे न? कह कर काकी उठ पड़ी।

और इसके पन्द्रह दिन बाद तीसरे पहर बेचारी पुटी आकर विपिन मण्डल के घर पर उपस्थित हुई।

मोटा मण्डल पैरों में सरसों का तेल मल रहा था। एक किसान तम्बाकू भर रहा था। पुटी आकर एक ओर खड़ी हो गयी। कहा, मैं आपके पास आयी हूं ताऊजी!

— कौन? तुम कौन हो बिटिया? पहचानी-पहचानी सी लगती हो, किन्तु ठीक पहचान—

—मैं नवग्राम के गोपाल घोष की कन्या—

—गोपाल की कन्या? तुम घोंतन घोष की बहिन हो?

—हाँ।

—देखो तमाशा! बड़ी हो गयी हो। पहचान नहीं पाता हूं।

—माँ ने आपके पास भेजा है?

—बतलाओ, किसलिये भेजा है?

—कहा, पंचों के रहते धान के चारे के अभाव से मेरा खेत रोपा नहीं जायगा।

—तुम्हारे धान का चारा नहीं है? क्या हुआ? तो तुम क्यों आयी? घोंतन कहाँ है? छि-छि-छि!

—उसको तो जानते हैं। वह यह सब नहीं देखेगा। और उसे समय भी नहीं है।

रजिस्ट्री आफिस और यूनियन आफिस में दिन भर काम रहता है न! पुटी ने क्षीण युक्ति से भाई की रक्षा करने की चेष्टा की।

—हुँ। तो कितनी जमीन के लिये चारा चाहिये?

—दस बीघा जमीन है, जिसमें छः बीघा रोपी गयी है, चार बीघा पड़ी है—चारा नहीं है।

—यही तो बिटिया! मेरे पास थोड़ा चारा है, बचेगा किन्तु ऊसर जमीन के लिये रखना पड़ेगा।—इससे...

—तो हमारा क्या होगा?

—घोंतन होने पर कहता, उपवास कर मरो। किन्तु यह बात तो तुमसे कह नहीं सकता। देखें, सिताब का चारा बचता है, सिताब का हिसाब, महताब का बल—किन्तु सिताब की गर्दन पकड़ने से होगा। तुम बिटिया उनकी बड़ी बहू को पकड़ो। नहीं, चलो मैं चलता हूं।

मोटा मण्डल रास्ते पर उतरा। अपने मन से ही कहने लगा, समझती हो बिटिया, इस सिताब के पितामह का नाम था दयाल मण्डल, लोग उन्हें दल्लू मण्डल कहते। मेरे पिता का नाम था परेश। दोनों गंजे थे। नवग्राम में उस समय नया फैशन चला था। दोनों को देख-सुन कर

परामर्श करते और कहते—दल्लू माने हल और परशा माने फरसा। तो भी हमने कायम रखा। उन्होंने सब कुछ छोड़ दिया। अंग्रेजी स्कूल में घुस कर-फेल होकर घर में घुसते हैं, और जमीन बेच-बेचकर बैठे खाते हैं।

रास्ते भर बकते-बकते सिताब के दरवाजे पर हाजिर हुआ। दरवाजे पर से पुकारा—सिताब है!

सिताब! ओ सिताब!

मकान के बाहरी दरवाजे से महताब निकल आया। उसके हाथ में हुक्का था। फड़क-फड़क हुक्का खींचते-खींचते बाहर निकला और आदरणीय चाचा मोटे मण्डल को देख कर चंचल हो गया। झट से हुक्का सहित हाथ पीछे कर लिया।

विपिन बोला, सिताब कहाँ है?

महताब के पेट में तम्बाकू का धुँआ भरा था, उसने दम रोक कर कहा, तम्बाकू पीजिये। कह कर हुक्का बिपिन के हाथ में दे दिया और पीछे घूम कर फक से धुआँ छोड़ दिया। इतनी देर में शान्त होकर बोला, बैठिये। ऊपर आकर बैठिये।

बरामदे में जाकर मोढ़ा सरका दिया। पुटी पास ही रास्ते के किनारे खड़ी थी।

विपिन मण्डल ने बरामदे में जाकर मोढ़े पर बैठ कर पुकारा, इधर आओ बिटिया, ओ पुटी।

महताब ने विस्मय से कहा—पुटी! यह लो, घोंतना ने निकाल दिया क्या?

पुटी धीरे-धीरे आगे आयी।

महताब विपिन से बोला, तुम लोग हुक्म दो ताऊ, मैं घोंतन को घूँसों से सीधा कर दूँ। बड़ा बदजात है। वह नीच बड़ा बदजात है। यह लड़की अच्छी है। वह इसे गालियाँ देता और मारता है—मैं चैत पर्व के समय मण्डली में देख आया हूँ।

विपिन ने कहा, तुम ठहरो महताब! यह इसलिये नहीं आई है।

महताब आगे बढ़कर बोला, इसके लिये नहीं आयी है। पुटी कहे, काली माता की शपथ खाकर कहे, धम-धम पीट देता है कि नहीं! बतलाये।

पुटी असमंजस में पड़ गयी। वह न तो स्वीकार कर पाती है और न प्रतिवाद कर पाती है। स्वीकार करने में लज्जा है, प्रतिवाद में कुण्ठा है, आशंका है, महताब तो स्वयं ही काली की शपथ खाकर आँखों देखी बात चिल्ला कर कहेगा और शायद अन्तमें "चारा न दूँगा" कह बैठेगा।

विपिन मण्डल प्रवीण व्यक्ति है। उसने पुटी को सिर नीचा किये देख कर बोला, नहीं, भाई नहीं। आज यह दूसरे काम से आयी है। इसके जमीन के लिये चारा नहीं है, चारा खोजने आयी है।

हरिबोल! हरिबोल! महताब हँसने लगा।

—हँसता क्यों है?

—चारा नहीं हुआ! यह मैं जानता था। वह बड़े कौतुक से हँसने लगा। भूसी छींटने से बीज होता है ताऊ? मैं जानता था। घोंतन के भागीदार नेपाल ने जिस दिन बीज छींटा, मैंने कहा था। मैंने कहा, क्यों रे, यह सब भूसो है! इससे बीज क्यों होगा? नेपाल बोला—मैं क्या करूँ? घोंतन घोष ने कहा है, जो हो, उसीसे काम चलाओ।

मैंने कहा—तो उसे छींट दे। महताब खूब हँसने लगा।

बिपिन बोला, कुछ चारा देना होगा। तेरे पास तो अवश्य है।

—हाँ। अहंकार से महताब बोला, जरूर है, अवश्य है। किन्तु घोंतन को नहीं दूँगा।

—नहीं दूँगा कहने से काम कैसे चलेगा? देना पड़ेगा। बुला, सिताब को बुला।

सिताब! महताब को क्रोध आ गया—सिताब क्या करेगा? सिताब! खेत में जब तक चारा है, तब तक सिताब का एक भी चारा नहीं है बाबा, सब महताब का है। बिल्कुल। हाँ, धान काटेगा, घर में लायेगा, झड़ाई करेगा, खाते में रखेगा, तो वह जो करेगा, करेगा। खेत का मालिक मैं हूं, मैं। एक बार घोंतना की माँ की बात पर धान छोड़ दिया है, सभी मुझे बकते हैं। महादेव का पार्ट लेकर दस रुपये चन्दा दिया है। उहूं, अब नहीं दूँगा।

अब पुटी बोली, मेरी माँ ने मुझे भेजा है महताब भैया। जमीन न रोपी जाने से हम लोग क्या खायेंगी।

—खाओगी क्या! केवल तुम लोग ही खाओगी? घोंतन नहीं खायगा? पहले तो भात उसे ही दोगी?

अकस्मात् विपिन मण्डल ने पुटी से कहा, चल मकान के भीतर चल। पुकार चाँपाडांगा की बहू को पुकार। बहू तो तुम्हारी अपनी हैं। बहू की माँ और तुम्हारी माँ तो सहेलियाँ थीं।

महताब गर्दन हिला कर बोला, उहूँ, बड़ी बहू का शरीर खराब है। वह सोयी हैं। उहूं।

सचमुच बड़ी बहू घर में सोयी थी। शरीर खराब होने से सोयी है।

असल में टिकुरी-काकी की उन मर्मान्तक बातों ने विषाक्त वाण के समान उसके मर्मस्थल को बेंध कर उसको उदासीन और क्लान्त कर दिया है। इन बातों के विष से उसका हृदय ऐसा जर्जर हो गया है कि संसार के जीवन में रुचि भी जाती रही है। दूसरों से बात छिपाने के अभिप्राय से वह शरीर खराब होने का बहाना कर सोयी हुई है। वह चुपचाप सो रही थी। सिरहाने की ओर खिड़की के पास बैठ कर सिताब तम्बाकू पी रहा था और धीरे-धीरे बक रहा था।

—इसको कहते हैं यह तो तुमने भारी विपत्ति में डाल दिया। यह तो बड़ा फसाद है। टिकुरी-काकी ने क्या कहा और तुम आकर बिछौने पर पड़ गयी! उठो, उठो।

—नहीं। मुझे न जलाओ। जाकर अपना काम देखो—

—अरे, तुम बिना खाये पड़ी रहोगी और मैं काम देखूँगा? उठो, उठो। कुत्ते की काट घुटने के नीचे। टिकुरी काकी ने कहा कि भागीदार को धोखा देने से तुम्हें बच्चा नहीं हुआ। टिकुरी-काकी एकदम साक्षात् वेदव्यास है। ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है—लड़का नहीं, तो न सही—

—क्या कहा? बड़ी बहू उठ बैठी। सिताब भय पाकर ठहर गया। चाँपाडांगा की बहू के मुँह की ओर देख कर बोला, क्या कहा था?

—लड़का नहीं है नहीं सही। तुम पुरुष हो। तुम्हारी बात अलाहदा है। किन्तु—

बड़ी बहू विचित्र हँसी हँसी।

सिताब वह हँसी देख कर जल-भुन गया। बड़ी बहू की हँसी में जो आग थी, वही आग उसके हृदय में संचित सन्तान-कामना के छिपे हुए

क्षोभ की सूखी हुई जलने वाली वस्तु में लग गयी। यह बात दोनों ने एक दूसरे से छिपा रखी थी। सिताब ने चाँपाडांगा की बहू के मुँह की ओर स्थिर दृष्टि से देखा—बड़ी बहू के समान विचित्र दृष्टि से। इसके बाद हुक्का रख कर बोला, अलाहदा ? पुरुषों की बात अलाहदा ? नहीं ? अकस्मात् खड़ा होकर बोला, एक समय लगता है—वह ठहर गया और चले जाने को तैयार होगया।

बड़ी बहू उठ कर खड़ी हो गयी। उसने सिताब के शरीर के कपड़े का किनारा पकड़ कर कहा, क्या लगता है ? बतला दो।

सिताब बोला, इच्छा होती है, घर-द्वार, धन-धान सब में आग लगा कर चला जाऊँ।

बड़ी बहू का हाथ खिसक पड़ा।

—क्या लड़के की बात मुझे याद नहीं होती ? क्या मुझे उसकी लालसा नहीं है ? क्या मुझे नहीं लगता कि यह सब मैं क्यों करता हूँ ? किसके लिये करता हूं ? कौन भोगेगा ? क्या मुझे जल देने वाले की साध नहीं है ? क्या मुझे जल के लिये हा-हा कर प्रेत होकर नहीं घूमना पड़ेगा ? फिर भी करूँ क्या ?

सिताब चला गया।

चाँपाडांगा की बहू एक अस्फुट कातर शब्द निकाल कर चुप होगयी! जान पड़ा आकाश टूट रहा है, पृथ्वी फट रही है। फटे। वही फटे। वह उसी में घुस जायगी।

ठीक इसी समय नीचे से विपिन की पुकार सुन पड़ी—

बड़ी बहू! चौंक उठी चाँपाडांगा की बहू। वह ठीक समझ सकी,

फिर भी सिर पर घूँघट खींच लिया—कौन है ? पास के घर की खिड़की खोल मानदा ने मुँह बढ़ा कर कहा—शिव मण्डल—मोटे मण्डल आये हैं दीदी।

चाँपाडांगा की बहू किसी प्रकार उठ कर सीढ़ी की ओर बढ़ी।

विपिन नीचे के बरामदे में ही जम कर बैठ गया था। तम्बाकू पी रहा था। पुटी एक ओर एक खूँटी पकड़ कर खड़ी थी। सिताब तेजी से नीचे उतरा और पुटी को देख कर अवाक् हो गया। वह पुटी को ठीक नहीं पहचानता। इतनी काली, किन्तु श्रीमती, इतनी बड़ी एक युवती, माँग में सेंदुर नहीं विधवा है या कुमारी ठीक जान नहीं जाती, यह कौन है ? किन्तु कितनी सुन्दरी है ! उसको देख कर स्वभावतः विस्मय होगा ही।

महताब आँगन में बैठ कर एक लकड़ी से निशान बना रहा था और कह रहा था—वह नहीं होगा, कभी नहीं होगा।

सिताब बोला, क्या है काका ?

विपिन ने कहा, अरे तुम घर में ही हो ! तुमको यहाँ नहीं जान कर विवश होकर पुकारा था।

सिताब ने हुक्का लेकर खींचा नहीं। वह पुटी को ही देख रहा था। हाथ में काँच की चूड़ी और लोहा देख कर समझ लिया कि युवती अभी कुमारी है। किन्तु इतनी बड़ी कुमारी कन्या ? किसके घर की है ? बोला, यह लड़की ?

महताब ने उत्तर दिया, घोंतना—घोंतना की बहिन है।

—घोंतन की बहिन है ?

बिपिन बोला, हाँ, गोपाल की कन्या। बेचारी आयी है, उसके पास

चारा नहीं है। खेत पड़ा हुआ है। चार-पांच बीघे के लिये चारा नहीं है। घोंतन ने कह दिया है, वह कुछ नहीं जानता। क्या करती? उसको ही आना पड़ा है। इतनी बड़ी कुमारी लड़की, एक गाँव से दूसरे गाँव—। इस पर पागल कहता है—नहीं दूँगा। तुम सबने उसे घोंतन को धान छोड़ देने के लिये फटकारा है, इसीलिये वह चारा नहीं देगा।

सिताब बोला, तुम जानते हो काका, गोपाल घोष ने हमारी बड़ी हानि की है। किन्तु मैं मन में नहीं रखता। घोंतन को पिछली बार धान दिया था। वह वृत्तान्त भी जानते हो। फिर चारा भी दूँगा। चारा पायेगी। पुटी आयी है, समझता हूं, उसकी माँ ने भेजा है। गोपाल घोष जो करे, घोतन जो करे, घोंतन की माँ बड़ी बहू की सहेली माँ है। मेरी पूजनीया है। देना ही पड़ेगा, दूँगा चारा। बड़ी बहू क्या कहेगी, चारा दूँगा। पायेगी, चारा पायेगी।

महताब अवाक् होगया। सिताब के मुँह की ओर देखते हुए बोला, चारा दोगे?

—हाँ। जमीन तो रोपनी पड़ेगी न?

महताब बोला, अब नहीं बचेगा। मर जायगा। जरूर मर जायगा।

सिताब बोला, क्या बकता है? भंग खायी है?

—क्या कहता हूँ? अहा हा तुमने एक बात में बीज खराब कर दिया? तू मक्खीचूस, तू कृपण, तू दाता कर्ण बन गया। तू नहीं बचेगा। किन्तु मैं चारा नहीं दूँगा। कभी नहीं दूँगा। सुअर घोंतना अगर अपनी पीठ में मेरा एक घूँसा खाय, तो दूँगा। नहीं तो कभी न दूँगा।

वह बाहर चला गया।

पुटी हँसने लगी।

बड़ी बहू अब बाहर निकल कर बोली, चारा पायेगी काका मैं उसे समझा दूँगी।

इसके बाद पुटी से बोली, अरे तू कितनी बड़ी हो गयी पुटी ? इतने दिन में चारे के लिये दीदी याद पड़ी ? सहेली माँ कैसी हैं ?

उसको लेकर वह घर में चली गयी।

—माँ को खूब ज्वर है दीदी। माँ तुम्हारी चर्चा प्रायः करती है।

—क्या कहती है रे ?

—कितनी बातें कहती है। अधिक कहती है—कादू मेरी भाग्यवती, गुणवती, रूपवती है—माँ के लिए तुम सब कुछ हो।

कादम्बिनी ने एक गहरी साँस लेकर कहा, सहेली माँ मुझसे बहुत प्रेम करती हैं।

—उस दिन सुन्दरता का वर्णन करते हुए कहा था, जैसो मुँह-नेत्र वैसे ही गठन आकृति। अहा हा ! अब भी जैसे कन्या बहू है।

—मेरे रूप का मरन है ! मेरे कन्या बहू के चित्र का मरण हो। जैसे कोईकादू के हृदय में आर्तनाद कर उठा।

पुटी ने उसे समझ नहीं पाया। उसने उत्साह से कहा, सुनो यही अन्त है क्या ? मेरी एक फूफी बोली, बाँझ स्त्रियों के शरीर की गठन ठीक रहती है। माँ बोली—क्या हुआ दीदी ? दीदी ?

कादम्बिनी पास की दीवार पकड़ कर खड़ी हो गयी थी। उसका मुँह कैसा हो गया था। वह बोली, सिर में चक्कर आ गया।

उसने अनजान में ही एक हाथ से गले का कवच पकड़ लिया था।

पंचम परिच्छेद

भादों का महीना लग गया था।

आज छठ है। किसानों के गाँव के पाढ़े-पाढ़े में हुलुध्वनि उठ रही है। स्त्रियाँ छठ की व्रतकथा सुन कर पूजा कर रही हैं। धूप में शरद् की रंगत आ गयी है। अच्छे किसानों की खेती के काम खतम हो गये हैं। महताब ने रोपना समाप्त कर घास निकालना शुरू कर दिया है।

सिताब के मकान में भी स्त्रियाँ बैठ कर छठ की व्रत-कथा सुन रही हैं।

सिताब गोशाले में खड़ा था। चरवाहा दूध दुह रहा था। गोशाले के आँगन में धान के चारे का एक बोझ पड़ा हुआ है। यह चारे का बोझ घौंतन के खेतों के लिये उखाड़ कर लाया गया है।

पुटी ने घर में प्रवेश किया।

सिताब ने उसे देख कर खूब प्रसन्न होकर ही कहा—देखो, चारा उखाड़ कर आज तीन दिनों से पड़ा हुआ है।

पुटी ने लज्जित होकर कहा, क्या करूँ। जमीन जोती नहीं गयी है। मजदूर नहीं हैं। नेपाल अकेला काम करता है। इसके अलावा साझे का काम है।

सिताब आगे बढ़ आया। बोला, आज फिर छठ है। आज भी सोच रहा था—। वह हँस पड़ा।

पुटी ने चारे के बोझ को हिलाने की चेष्टा की।

सिताब बोला, अरे—अरे ! इसको कहते हैं, क्या इस बोझ को तुम उठा सकोगी ? चारा लेगा कौन ? नेपाल कहाँ है ?

—नेपाल खेत में सरावन दे रहा है। छठ का दिन है, नेपाल की बहू नहीं आयी।

—तो फिर ?

—मैं ही ले जाऊँगी।

—यह देखो। क्या ऐसा हो सकता है ?

पुटी ने अब पुकारा, भैया, ओ भैया !

बाहर से घोंतन ने उत्तर दिया, क्या है ? आओ न बोझ उठाकर।

सिताब बोला, घोंतन आया है ! कहाँ है ? ओ घोंतन, घोंतन।

अब घोंतन घर में आया। वह एक लुंगी और हाफशर्ट पहने हुए था। दोनों पुरानी थीं। उसके घर में आते ही सिताब बोला, बाहर क्यों खड़ा है रे ! तेरा मजदूर कहाँ है ? यह बोझ लेगा कौन ?

घोंतन ने एक बीड़ी सुलगा कर कहा, यह पुटी से पूछो। कहा था, आज छठ है, कल नेपाल की बहू आयेगी, कल वही ले जायगी। वह बोली—तुम उठा देना, मैं ले आऊँगी। मैंने कहा—ऐसा है तो चल ! मेरा क्या ?

पुटी बोली—तो उठा दो न, पकड़ो।

सिताब व्यस्त होकर बोला, अरे ! अरे नोटन ! नोटन ! जा तो, जा तो, चारे का बोझ खेत में दे आ तो।

ठीक इसी समय मकान के भीतर में उलूध्वनि उठी।

मकान के भीतर आँगन में ५-७ स्त्रियाँ हाथों में सुपारी लेकर व्रत-कथा सुनने बैठी हैं। सब स्नान कर खुले केश गोलाकार बैठी हैं।

उलू देकर प्रणाम कर सब उठीं।

एक प्रवीणा व्रतकथा कह रही थी, वह बोली—यह व्रत करने से क्या होता है ?

स्वयं ही उत्तर दिया—निस्सन्तानों को सन्तान होती है। सन्तान मरने पर वह जी जाती है। रन और बन में माँ षष्ठी रक्षा करती हैं।

चाँपाडाँगा की बहूं एक गहरी साँस छोड़ कर उठ खड़ी हुई। और दरवाजे की चौखट पर एक टीका दिया।

वह षष्ठी का प्रसाद—हल्दी और तेल का एक टीका था।

एक स्त्री बोली, दरवाजे के ऊपर किसको टीका दे रही हो, चाँपा-डांगा की बहू ?

उदास हँसी हँस कर बहू ने कहा—देवर को बहिन। वह खेत में हैं। सास कह गयी हैं—बहू तुम उसे सदा टीका देना।

स्त्रियाँ बाहर निकल कर चली गयीं।

अब चाँपाडाँगा की बहू ने पुकारा—मानिक ! मानू, मानिक कहाँ है ?

मानू पास आकर बोली, उसे घर में बन्द कर रखा है। कहीं निकल कर भाग जायगा। इतना कह कर चाँपाडाँगा की बहू के हाथ की हल्दी-तेल की कटोरी में से थोड़ा सा हाथ के तलवे पर लेकर बन्द घर का दर-वाजा खोल भीतर गयी।

बड़ी बहू ने आश्चर्य से आँखें फाड़ कर उसकी ओर देखा। उसके मन में एक सन्देह पैदा हो गया। शायद पहले वह मानिक का टीका दे, क्या इसीके लिये उसने यह कौशल अवलम्बन किया है ?

मानू मानिक को गोद में लेकर बाहर आयी और बड़ी बहू के सामने खड़ी हो गयी।

बड़ी बहू मानिक के मुँह की ओर देख कर विचित्र हँसी हँसते हुए बोली, तू ने जो यह टीका दिया है ? कह कर उसने भी मानिक के माथे में टीका लगाया।

मानू ने भौंहें टेढ़ी कर पूछा, किन्तु तुम हँसी क्यों बड़ी दीदी ?

--मैं पीछे टीका दूँ, इसीलिये तुमने उसे घर में बन्द कर रखा था। इसी से हँसी। यह मुझसे पहले ही कह देती ! मानू उसके मुँह की ओर देख कर थोड़ी देर चुप रही। इसके बाद बोली, तुम और ससुर उस दिन घर में जो बातें कर रहे थे, वे मैंने सुनी हैं बड़ी दीदी। मानिक को लेकर भी तो तुम्हारा दिल नहीं भरता।

मानू मानिक को लेकर घर में चली गयी।

चाँपाडाँगा की बहू दीवार के सहारे खड़ी हो गयी। उसका शरीर अवश हो गया है। वह अपने गले में सूत के डोरों से बँधी हुई कई तावीजें लेकर हिलाने-डुलाने लगी।

कई दिन बाद सिताब मकान में आया। वह तेजी से मकान के भीतर चला गया। एक मिनट बाद ही बोला—

सुनो तो एक बार ! सुनती हो ?

बड़ी बहू घर में चली आयी।

सिताब अपने फेंटे में कुछ घुसेड़ रहा था। देखकर जानने में कष्ट नहीं होता कि वह रुपया था। बड़ी बहू के आकर खड़ा होते ही सिताब बोला, देखो घोंतन घोष आया है। समझती हो ? इसको कहते हैं—कहता है, नवग्राम के राखहरि दत्त का लड़का चार-पाँच भरी का सोने का हार बन्धक रख कर रुपया लेगा। वह तीन सौ माँगता है, मैं दो सौ

देता हूं। मार-पीट कर ढाई सौ। सूद रुपये पर महीने में छः पैसे। दे दूँ ? उसे आने को कह दूँ ?

बड़ी बहू बोली, महताब से पूछो।

—तुम पागल हो गयी हो क्या ?

—नहीं। उससे बिना पूछे तुम कोई काम न कर सकोगे। कुछ देर तक स्त्री के मुँह की ओर देख कर सिताब बोला, यह तो अच्छा लड़कपन है रे बाबा। तुमने महताब, महताब, महताब कर मुझे जला खाया। कहता हूँ, महताब तो मेरी माँ का पेट का भाई है। नहीं है ? तुम इतना क्यों हाँफती हो ?

इतना कह कर ही वह बाहर चला गया।

वह जब बरामदे में निकला, उस समय मानदा एक ओर से दूसरी ओर चली जा रही थी।

बाहर बरामदे में मोढ़े पर बैठ कर घोंतन पैर नचाता था और एक छोटा शीशा-कंघी निकाल कर केश सँवार रहा था। साथ ही साथ सिसकारी मार रहा था।

पास में खड़ा था गोविन्द—वही चरवाहा छोकरा।

सिताब के आते ही गोविन्द भाग गया।

सिताब बोला, यह लो। कह कर पाँच रुपये घोंतन को दिये और कहा, दूँगा। उतना ही दूँगा। समझा, कह देना।

घोंतन ने शीशा-कंघी पाकेट में रखी और पाँच रुपये रुमाल निकाल कर उसकी खूँट में बाँध लिये फिर कहा, समझते हो, तुमको लोग खराब आदमी कहते हैं, मैं भी कहता था। किन्तु तुम वैसे नहीं हो। समझते हो

न, यह मैंने समझ लिया है। समझते हो, मूर्ख वैसा कहेंगे, किन्तु मैं मूर्ख नहीं हूँ। तुम गुडमैन (अच्छे आदमी) हो, किन्तु हाँ, स्ट्रिक्टमैन (कड़े आदमी) हो।

सिताब बहुत सोचता है, वह ओछा नहीं है। इसपर है पंचायत का मण्डल। वह बोला, तू बड़ा फालतू है घोंतन। बहुत अधिक बकता है। जा, घर जा। राखहरि के लड़के को भेज देना। और सुन। और एक बात कहता हूँ। खुद थोड़ा काम कर। इतनी बड़ी बहिन से इस तरह काम न ले। समझा ?

घोंतन विचित्र मुख-बना कर बोला, अरे, बनाता है रे। तू एक काम कर न। साथ ही साथ आवाज नीची कर कहा, तुम पुटी से ब्याह करो न। तुम्हें तो लड़का-बाला नहीं हुआ।

सिताब पहले तो बहुत चंचल हो उठा—इसे कहते हैं—इसे कहते हैं—। इसके बाद अकस्मात् चिल्लाया—घों-त-ना।

—यह देखो, क्रोध क्यों करते हो ? घोंतन हँसा।—उस बहू से तुम्हारे लड़के-पड़के न होंगे। और उसका तुम पर खिंचाव भी नहीं है। वह जो कुछ—

सिताब और जोर से चिल्ला उठा, घों-त-ना।

घोंतन और भी कहने जा रहा था, किन्तु इसी समय रास्ते की मोड़ पर महताब का गला सुनाई पड़ा। वह गाता-गाता आ रहा था—

कजली, कजली, ओ मेरे ईख,
बनकी आदरी, काली बरन कजली।

तेरे दूध से होगी मेरे बहू के,

गले में होगी मादली ॥

घोंतन चौंक पड़ा और प्रायः कूद कर रास्ते पर उतर गया। बोला, जाता हूँ। भेज दूँगा राखहरि के लड़के को, वह तेजी से भाग गया।

सिताब का हाथ हुक्का लिये हुए थर-थर काँप रहा है। उसकी आँखों में विचित्र दृष्टि फूट पड़ी है। मुँह कैसा हो गया है।

महताब उधर से दो व्यवसायियों को लेकर आया। और बोला, यह लो। गुड़ खरीदने आये हैं। आलू के बीज खरीदेंगे। साहु जी, ये हमारे भैया हैं। वही दाम-दर कहेंगे।

सिताब चौंक पड़ा। एक गहरी साँस लेकर हुक्का खींचने लगा।

महताब का सारा शरीर कीचड़ से लथपथ है। वह खेत निरा रहा था। घर आते समय गुड़ व्यवसायियों से भेंट हो गयी। वह उन्हें साथ लाया है।

उन्हें बिठा कर वह पुकारते-पुकारते मकान में घुसा। बड़ी बहू! ओ बड़ी बहू! उसकी जोर से लड़कपन भरी पुकार थी।

छोटी बहू बरामदे में बैठ कर मैदा गूंध रही थी। वह बोली, माँ री, एक बार पुकारने का ढंग तो देखो!

महताब ने अनसुनी कर दी। बोला—कहाँ गयी बड़ी बहू?

छोटी बहू बोली—गर्म होकर बोली—उसका शरीर अच्छा नहीं है। घर में सोयी है।

महताब बोला—शरीर की बात कुछ नहीं कहती! रोज शरीर खराब! रोज शरीर खराब! ओ बड़ी बहू! बड़ी बहू!

बड़ी बहू बाहर निकल आयी। बोली, क्या कहते हो ?

—कहता हूं मुझे टीका नहीं दोगी ? छठ का टीका ?

बड़ी बहू हँस कर बोली, दूँगी क्यों नहीं! चौखट पर देने से भी मन नहीं माना। बिना पानी पिये बैठी हूँ।

—और एक बात सुनो।

—कहो।

—गुड़-आलू के खरीददार लाया हूँ। हिन्दुस्तानी व्यवसायी।

—तो अच्छा है! बेचो दोनों भाई सलाह करके।

—वह सलाह तो तुम उसके साथ करो जाकर। मैं वह सब नहीं जानता। मुझे किसानी के हिस्से का दस मन गुड़ चाहिये। मैं बेचूँगा। यह बात तय हो गयी है। तुम गवाह हो। वे रुपये मैं लूँगा। पन्द्रह रुपये मन। एक सौ अस्सी रुपये।

—अच्छे पागल हो तुम। तुम्हारा तो सबमें आधा भाग है। लो न दादा से।

—उहूँ। वह सब नहीं माँगता। मेरी किसानी का भाग चाहिये।

मानू बोल उठी, पागल सँभाल कर नहीं बोलता, मरन है।

—चुप रहो, चुप रहो, अरी दुष्टा सरस्वती चुप रहो। उन्हीं रुपयों से मैं हार गढ़ाऊँगा। बड़ी बहू के लिये और तुम्हारे लिये। क्या दुष्टा सरस्वती, अरे मैना—बोलो राधा कृष्ण, बोलो मीठी बात! सोने का हार! सोने का हार!

मानू ने कहा, एक सौ अस्सी रुपये में दोनों को सोने का हार! यही है जो दो पैसे की मिठाई खरीदी, मैंने खाया, मेरे दादी ने खाया, इसके

बाद फेंक दिया, कुत्ते ने खायी, वह भी खतम नहीं कर पाया, पड़ी रही। सोना नब्बे रुपये भरी है।

महताब अब हुंकार दे उठा—अरे तुम सँभल कर बात कहो। अस्सी रुपये का हार मनमें नहीं जँचता। क्या तेरे लिये पाँच सौ अस्सी रुपये का हार चुरा कर लाऊँगा।

—देखो बड़ी बहू—

चाँपाडाँगा की बहू बोली, चुप रहो महताब। छिः। कितनी बार कहती हूँ, मानू को ऐसी बात न कहो। और मानू, अगर पुरुष बड़ी बात कहे, तो क्या उससे इसी तरह बात की जाती है ?

—नहीं। बात नहीं कही जाती ! अस्सी रुपये का हार वह भी चांदी का नहीं सोने का ! वही बीस आने की जमींदारी !

—अच्छा, तो हार केवल तेरे लिये ही होगा।

—नहीं। कभी नहीं। कदापि नहीं।

—मैं हार नहीं पहनूँगी। मुझे हार नहीं चाहिये !

मानू अब हठात् खूब भलेमानस बन गयी। एक बार हँस कर बहुत मीठे स्वर में गर्दन हिला कर बोली, दीदी को अस्सी रुपये का हार नहीं अच्छा लगता। पाँच सौ अस्सी रुपये का हार पहनेंगी दीदी। आज हार का बयाना हो गया। समझते हो ?

इतना कह कर वह मैंदे की थाल हाथ में लेकर बहुत तेजी से चली गयी।

बड़ी बहू ने आर्तकण्ठ से पुकारा, मानू—! उसका मुँह क्षण भर के लिये फीका पड़ गया, जैसे किसी ने उसके मुहँ पर अचानक चाबुक मार दिया है।

छोटी बहू घर में जाकर पीछे घूम कर बोली, चार-पाँच भरी का हार दो सौ-ढाई सौ रुपयों में खूब सस्ता है दीदी—पानी का भाव। इसमें तनिक भी आनाकानी न करो। तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा।

कहते ही घर में चली गयी।

किन्तु महताब उल्लसित हो गया। वह बड़े उत्साह से बोल उठा, सच बात है? बड़ी बहू मेरी शपथ है, बतलाओ, अरे बाप रे! बाप! मक्खी-चूस को कैसी सुमति आयी है! उस दिन पुटी के आते ही बीज दे दिया। आज तुम्हें सोने का हार! बलिहारी, बलिहारी! आज दादा को प्रणाम करूँगा। पैर की धूल लूँगा।

वह बड़े आनन्द के साथ बाहर चला गया।

मकान के बाहर रास्ते के किनारे के बरामदे में दोनों हिन्दुस्तानियों ने बैठ कर पीतल की थाली में सत्तू भिगों दिया है, नमक-मिर्चा रखा है। लोटे के जल से हाथ-मुँह धो रहे हैं। सिताब बैठकर हुक्का पी रहा है। उस समय भी वह जैसे कैसा हो गया है। उसका सिर कैसा कर रहा है।

महताब आकर अकस्मात झुक कर प्रणाम कर बैठा।

सिताब चौंक पड़ा। अरे, अरे, यह क्या है? यह क्या?

—प्रणाम! तुम्हें प्रणाम किया है?

—अरे, हठात् प्रणाम क्यों?

—तुम—। इसके बाद उन दोनों हिन्दुस्तानियों की बात याद आने से चुप हो गया। कहा, सुना है, मैंने सुना है। हँसने लगा।

—क्या?

—बतलाऊँगा, बतलाऊँगा। दो, हुक्का दो।

उसने प्रायः सिताब के हाथ से हुक्का खींच ही लिया और घूमकर हुक्का पीने जाकर गुड़ के व्यवसायियों के पास ठहर गया। भींगे हुए सत्तू पर उसकी नजर पड़ी। वह खूब फूल उठा है। वह बोला, क्या है? सत्तू साहजी?

साहजी ने उत्तर दिया, हाँ, सत्तू है।

महताब बोला, हुँ हुँ! बहुत अच्छी चीज है। नमक मिर्चा डाल कर अच्छा लगता है न?

साहु हँसा। बोला, बंगाली को हजम नहीं होता।

तीसरे पहर गुड़ तोल कर बिक रहा था। राखाल पाल खलिहान-घर में एक वजन का काँटा गाड़कर टिन बन्दी कर वजन कर रहा था। सिताब बरामदे में बैठ कर खपड़े से जमीन पर एक के बाद एक निशान बना रहा था। पास ही एक गमला है ... में आधा गुड़ भरा है। टिन में गुड़ अधिक होने से उसे हत्थे से निकाल कर गमले में रखता जाता है और कम होने पर पूरा कर देता है। काँटे से वजन करने में राखाल की निपुणता प्रसिद्ध है। यह ख्याति-मृदंग बजाने की ख्याति के समान ही है! राखाल की वजन की हुई वस्तु कभी कम-वेशी नहीं होती। उसी तरह तेज वजन भी करता है।

एक ओर एक अधमनी है, दूसरी ओर टिन।

काँटा हिल रहा था। राखाल काँटे पर एक हाथ रख कर उसकी ओर देख रहा था। और स्वर में बोल रहा था, तेरह राम, तेरह—तेरह राम, तेरह।

थोड़ा गुड़ निकाल कर बोला, तेरह राम, चौदह। चौदह। उठाओ।

नोटन ने टिन उतार दिया । तेरह टिन आगे से सजाये हुए थे। एक और रखने से चौदह हुए। राखाल बोला, चौदह, चौदह। चढ़ाओ।

नोटन ने एक टिन और चढ़ाया।

—चौदह राम। चौदह राम। चौदह राम।

उधर एक काँख में और एक सिर पर दो टिन लेकर महताब घर में से निकल आया।

—पकड़ नोटन, पकड़। पहले काँख का।

जब नोटन ने काँख का टिन पकड़ा तो उसने सिर पर का खुद उतार दिया। उसके शरीर में हाथ में गुड़ लगा है।

राखाल बोला, चौदह राम। चौदह राम।

—पन्द्रह—पन्द्रह—पन्द्रह।

महताब ने अपना हाथ बैल के मुँह के आगे कर दिया। ले चाट ले। बैल से चटवा कर घर में चला गया।

राखाल पुकारता था, पन्द्रह। पन्द्रह। पन्द्रह।

उधर घर में कुण्डे में से कटोरा-कटोरा निकाल कर टिन में डाल रही थी बड़ी बहू। कमर में फेंटा बाँध कर वह काम कर रही थी।

बरामदे में बैठ कर मानिक मूड़ी और गुड़ खा रहा है। पास ही उसकी बाँसुरी पड़ी है। बीच-बीच में वह पू-पू बजा देता है।

मानदा टिन के पास बैठ कर जो गुड़ टिन के ऊपर गिरता है उसे काछ कर एक बर्तन में जमा करती है।

महताब घर में आया। टिन भरा हुआ न देख कर इन्तजार करता रहा। बोला, अरे राम राम! अभी भी नहीं भरा?

चाँपाडाँगा की बहू बोली, भर देती हूँ, भर देती हूँ। हमारे दो ही हाथ हैं, चार तो नहीं। कोई चार भुजाओंवाली बहू तो तुम लोग ला सकते थे। सब्र करो। घोड़ा बाँधो।

इस समय काम में लगी रहने पर चाँपाडांगा की बहू में वैसी उदासी नहीं है। उसी समय बाहर से राखाल पुकारा, एक लोटा जल लाओ बहू? बड़ी प्यास लगी है।

मानदा बोली, गुड़ के लोभ से पानी पीने चला है लालची। वजन करने को दूसरा नहीं मिला।

बाहर से राखाल बोला, सुनती हो, ओ बड़ी बहू!

चाँपाडाँगा की बहू एक कटोरी में गुड़ लेकर चली गयी।

महताब बोला, तब तक तुम निकालो।

राखाल बोला, किन्तु गुड़ है अव्वल दर्जे का। कैसी सुगन्ध है! कैसा तार है! सुन्दर! वह बैठ कर हाथ चाट रहा था, चाँपाडाँगा की बहू को देख कर हाथ फैला कर बोला, देने को लायी हो न? दो।

चाँपाडाँगा की बहू कटोरी रख कर दूसरे घर में पानी लाने चली गयी। राखाल लम्बी जीभ निकाल कर कटोरी से चाट-चाट कर गुड़ खाने लगा। हठात् महताब घर से निकल आया—जैसे दौड़ कर आया हो? और खिलखिला कर हँसने लगा।

घर के भीतर से प्रायः रोते-रोते मानदा भी पीछे-पीछे आकर बोली, देखो, देखो, इनकी करतूत देखो! इन बातों में आदर का भाव था। छलना करके झूठ-मूठ रोने का अभिनय, महताब ने उसके दोनों गालों पर गुड़ पोत दिया है। पुलकित होकर ही मानू रो रही है।

उसी कौतुक से महताब हँस रहा था।

राखाल भी कौतुक से ठठा कर हँसने लगा। बड़ी बहू ने आकर जल का लोटा रख कर कहा, मानिक से कहो चाट लेगा, साफ हो जायगा। जाओ तो बाबा मानिक माँ के गाल के गुड़ चाट कर—

यह रंग देख कर मानिक भी उत्साहित हो गया। वह खूब जोर-जोर से बाँसुरी बजाने लगा, पू-पू-पू-पू-पू—

पागल महताब ने यह बात सुन कर जो कर डाला, उसे असम्भव काण्ड छोड़ कर और कुछ नहीं कहा जा सकता। वह अचानक अपने दोनों हाथों का गुड़ बड़ी बहू के दोनों गालों पर पोत कर बोला, तब तो तुम्हारे गाल का मैं चाटूँगा।

राखाल अट्टहास कर उठा। बलिहारी-बलिहारी-बलिहारी।

ठीक इसी समय गला साफ करने का शब्द करते हुए सिताब बोला, यह सब क्या होता है? आँय! पहले वह राखाल पर बिगड़ गया। कहा, कितनी बार गुड़ खा चुके? राखाल। हा-हा-हा- हाँ हँसते क्यों हो?

राखाल अप्रतिम होकर बोला, महताब, समझा न सिताब, वह हम लोग क्या कहते हैं, वह बड़ा मजा! ओह—

सिताब ने रुके हुए क्रोध को प्रकट कर कहा, ओह! ओह बड़ा मजा है! दाव से अपना गला काट कर मुझे भी आमोद करने की इच्छा होती है। आमोद—आमोद—

मानदा ने महताब से कहा, तुम मरो, तुम मरो।

महताब ने दोनों हाथ नचा कर कहा, क्या, हुआ क्या? अरे क्या हुआ? बड़ी बहू स्वामी पर एक तेज नजर डाल कर महताब से बोली, कुछ नहीं हुआ। आओ, गुड़ निकाल कर बेचने का काम खतम कर दें। बाहर लोग बैठे हैं। वह घर में चली गयी।

षष्ठ परिच्छेद

भादों बीत गया है। आश्विन का पहला सप्ताह है। पूजा की ढोल बज रही है। 'पूजा की ढोल बजने' का अर्थ है पूजा का काम शुरू हो गया है। वास्तव में पूजा की ढोल बजती है बोधन के दिन से। यह ठीक है कि बोधन कहीं एक महीना आगे होता है, कहीं पन्द्रह दिन, कहीं-कहीं शुक्र पक्ष की पहली अमावस्या अथवा महालया (पितृ विसर्जन) के दिन से। गाँव में एक पूजा-चण्डीमण्डप में होती है बहुतों के साझे की पूजा है। बोधन में देरी है। तो भी आश्विन लगते ही गाँव-गाँव में पूजा की धूम पड़ गयी है। किन्तु आज सचमुच ढोल बज रही है।

आज ईदपूजा या इन्द्रपूजा है। सवेरे से ही इन्द्र पूजा के स्थान पर ढोलकिया बाजा बजा रहा है। इन्द्र पूजा सरकारी पूजा है अर्थात् कानून के अनुसार जमींदार मालिक है सही, किन्तु असली मालिक हैं गाँव के मण्डल लोग। पंच लोग पूजा का काम चलाते हैं। वे ही देख-भाल करते हैं, वे ही खर्च इकट्ठा करते हैं, इसके बाद खर्च को जमींदार की लगान से बाद करा लेते हैं।

सिताब ईदपूजा की वेदी के स्थान के पास खड़ा था। मोटा मण्डल चण्डीमण्डप के किनारे बैठ कर एक मोटे हुक्के पर तम्बाकू पी रहा था। चण्डीमण्डप में एक-एक बार मिट्टी की हुई दशभुजा की प्रतिमा सूख रही है। अभी मुण्ड नहीं बैठाया गया है। इधर-उधर बहुत से नंगे, अधनंगे

लड़के घूम रहे हैं। उसके साथ मानिक भी है। गोबिन्द चरवाहा उसे ले आया है। मानिक को उतार कर वह इन्द्र देवता की वेदी गढ़ रहा है। दस हाथ लम्बी लकड़ी का शरीर वाला देवता एक विशाल पतिंगे के समान औंधा पड़ा हुआ है। मूर्ति में मूर्तित्व नहीं है। नाक, कान, आँख का निशान नहीं है। दस हाथ लम्बी एक पेड़ की शाखा की छाल छुड़ा दी गयी है। एक ओर सिर पर ढेकी के समान दो छोटे-छोटे काठ खिल पहना कर गांथ दिये गये हैं। इसी दोनों छोटे काठों को वेदी में गाड़ कर देवता को ऊँचा कर पूजा के समय खड़ा किया जायगा।

चण्डीमण्डप के सामने गाँव का रास्ता है। रास्ते पर से किसान जा रहे हैं। कई स्त्रियाँ टोकरियों में लाल मिट्टी लेकर जा रही हैं। कइयों के सिरों पर खड़िया मिट्टी है। वे पुकार रही हैं—लाल मिट्टी लोगे, लाल मिट्टी।

खड़िया मिट्टी वाली पुकारती हैं—खड़िया मिट्टी चाहिये, घर पोतने के लिये खड़िया मिट्टी। दूध के समान रंग, लेना खड़िया मिट्टी।

चण्डीमण्डप से कई मकानों के बाद है—शिवकृष्ण-रामकृष्ण का मकान। शिवकृष्ण के मकान के बरामदे से झांक कर टिकुरी काकी ने वैसे ही जोर से पूछा—क्या है ? क्या ?

—मिट्टी है मिट्टी।

—लाल मिट्टी, खड़िया मिट्टी।

काकी ने मुँह टेढ़ा कर कहा—मिट्टी है मिट्टी ! लाल मिट्टी। खड़िया मिट्टी ! मिट्टी क्या लोग अपनी छातियों पर रखेंगे ! घर में चावल नहीं पकता, लोग तिसपर भी नहीं मानते। घर में धान नहीं है, चावल नहीं

है, खाना नहीं है, जिसके घर था, उसे सवाई वाले ले गये? और जिसके पास है, उन्होंने छिपा रखा है। घर पोते जायँगे! लोग रंग करेंगे। मरन!

एक स्त्री बोली—अगर तुम लोग घर न रंगोगी तो हम खायेंगी क्या?

—क्या खाओगी, इसे मैं क्या जानूँ? मैं क्या जानूँगी, पंचायत ने विचार किया है? मुझे जमीन दी है उसी पाप से तो यह सब हो रहा है। पिछले साल धान में कीड़े लगे थे, इस बार सूख जायगा। सूख जायगा, धान नहीं फूलेगा। फूलेगा भी तो सूख कर बेदम हो जायगा। अब पानी नहीं बरसेगा, और पानी नहीं बरसेगा। खड़ा धान सूख जायगा। देखोगी! टिकुरी की बहू जैसे नाच रही थी। सारा शरीर हिला कर जोर-जोर से बातें कर रही थी। जैसे उसका आनन्द समाता न था।

मिट्टी वाली स्त्रियाँ उसकी रंगत देख कर हँसने लगीं। एक ने ठीक उसीकी तरह आवाज में कहा—ऐसा नहीं होगा मालकिन! और ऐसा नहीं होगा। नहर निकली है। मोराक्षी बाँधी गयी है। पक्की दीवार बना कर लोहे के फाटक द्वारा। फाटक बन्द करने से ही जल चला आयेगा।

—नहीं आयेगा, नहीं आयेगा, नहीं आयेगा। घोंतन कहता है नहीं आयेगा। नहर में जमीन फट जायगी और जल पाताल में चला जायगा। नहीं तो बाँध टूट जायगा। नहीं तो उस जल में धान नहीं बचेगा। बचने पर सड़ जायगा, नहीं तो कीड़े लग जायँगे। धान नहीं होगा, वह बेदम हो जायगा। घोंतन ने कहा है!

एक स्त्री बोली, घोंतन घोष ऐसा ही कहता है, वह कहता है कि मैं हरिनाम का भजन करता हूँ।

काकी बिगड़ कर बोली, घोंतन घोष ऐसा ही कहता है। घोंतन लिखना-पढ़ना जानता है। उसके पेट में विद्या है। इधर-उधर नहीं करता। वह एक नजर में पहचान लेता है। मुझे उसने उस दिन बावली कहा था। मैंने क्रोध किया था। हुं बाबा तो मैं बावली ही हूँ। भौजाई के गाल पर गुड़ लगा कर चाटता है। माँ री! कहाँ जाऊँगी! कहते-कहते हठात् रुक गयी। कण्ठस्वर धीमा कर बोली, ओ, माँ महताब आता है। तेजी से आ रहा है। जंगली सुअर आ रहा है। ओ, माँ हरामजादी राँगी को क्यों पकड़ कर लाता है। अब मरन है! साथ में है मोटा मण्डल।

वह मकान में घुस गयी। स्त्रियाँ उसके मुँह की ओर देख कर जाने लगीं। एक ने पुकारा, मिट्टी चाहिये मिट्टी, लाल मिट्टी, खड़िया मिट्टी।

महताब एक गाय के गले में रस्सी बाँधे ला रहा था। वह सीधा टिकुरी काकी के मकान के सामने आकर खड़ा हो गया और पुकारने लगा—तुम्हारी गाय मैं मवेशीखाने में पहुँचाने जा रहा हूँ। अगर गाय भगवती न होकर बकरी-भेड़ होती तो उसे मैं मार ही डालता।

पीछे-पीछे मोटा मण्डल विपिन भी आता था। उसने गाय की रस्सी हाथ में लेकर कहा, चिल्लाओ मत। जो कहना है, मैं कहता हूँ।

—तुम क्या कहोगे? मेरी एक बिस्वा ईख खा गयी है। कुछ रखा नहीं! यह गाय है और उसका मालिक है विधवा स्त्री। कहो तो मैं क्या करूँ?

अपने केश खींच कर क्रोध से बोला, मुझे केश हटा कर सिर पीटने

की इच्छा होती है। मेरी ईख इतनी अच्छी, हरी और जोरदार हो गयी थी।

विपिन ने पुकारा, टिकुरी की बहू! बाहर आओ। सुनो।

टिकुरी की बहू ने बाहर निकल कर कहा, क्या सुनूँ? मैं किसी की बात नहीं सुनती। सब झूठी बात है। मैं अपनी रांगी को कभी नहीं बाँधती। वह खेत में घूम कर खूब चरने के बाद घर चली आती है। मैं विधवा हूँ, मैं बाँध कर कैसे खिला सकती हूँ? जो खेत बोते हैं, वे क्यों नहीं बेड़ा बाँधते? अब खेत में जाती है तो हट-हट कर क्यों नहीं भगा देते?

विपिन बोला, तुम पगली हो गयी हो क्या? क्या कह रही हो——

—ठीक कहती हूँ। दो, मेरी गाय दो। मैं ससुर समझ कर आदर नहीं करूँगी। मैं पंच नहीं मानूँगी। मवेशीखाने में देगा! ओह!

वह विपिन के हाथ से गाय लेने के लिये आगे बढ़ी। महताब अवाक् होकर अभी तक काकी का रंग बाँधना देख रहा था। वह अब चिल्ला उठा— कभी नहीं। दो, गाय दो। कह कर झटका देकर विपिन के हाथ से रस्सी ले ली।—मैं मवेशीखाने में दूँगा।

वह गाय को खींचने लगा।

टिकुरी काकी ने कमर में फेटा बाँध कर कहा, अरे मैं तेरी स्त्री के समान डरपोक नहीं हूँ। तेरे चिल्लाने से मैं नहीं डरती—

वह बढ़ कर महताब के हाथ से गाय छीनने पर तैयार हो गयी। महताब ने माना नहीं। वह गाय खींचने लगा—आ, आ।

टिकुरी काकी बोलती ही जा रही थी—मैं घर के कोने में आँख का

जल नहीं गिराऊँगी। लाज का थप्पड़ खाकर मैं मन मार कर नहीं रह जाऊँगी। मैं दरख्वास्त दूँगी। हाँ मैं दरख्वास्त दूँगी। अभी घोंतन के यहाँ जाऊँगी।

उसकी बात खतम होते न होते शिवकृष्ण गिरता-पड़ता बाहर आया और हाथ जोड़ कर बोला, भाई महताब! मैं हाथ जोड़ता हूँ, विनती करता हूँ। मुझे ज्वर है घर में पैसा नहीं है, धान-चावल भी नहीं है। मवेशीखाने भेजने से मुझे छुड़ाना पड़ेगा। नवग्राम जाना पड़ेगा। पैसा लगेगा। मेरी दशा देखो। गाय छोड़ दो भाई।

महताब रुक कर खड़ा हो गया।

विपिन बोला, गाय छोड़ दो बाबा।

महताब बोला, अहा हा! शिव तू मर जायगा रे! आँय! अहा हा! कैसी दशा हो गयी है तुम्हारी?

शिवकृष्ण को खड़े रहने की शक्ति नहीं थी। वह बैठ गया और दोनों कुहनियाँ घुटने पर रख कर दोनों हाथों से सिर पकड़ लिया और बोला, ज्वर ने एकदम हड्डी तोड़ डाली। तीन ओढ़नों से कँपकँपी नहीं रुकती। गाय छोड़ दे भाई!

काकी आगे बढ़ी और महताब के शिथिल हाथ से गाय की रस्सी खींच कर बोली, देगा और अच्छा कहेगा।

देगा नहीं?

महताब ने गाय छोड़ दी और कहा, आज शिव का मुँह देख कर छोड़ दिया। और किसी दिन नहीं छोड़ूँगा।

काकी बोली, शिव का मुँह नहीं देखना पड़ेगा। जिसका मुँह देखने से धर्म होता है, उसका मुँह जाकर देख।

भौजाई का मुँह देखना छोड़ अपनी स्त्री का मुँह देख रे। शिबू का मुँह! मरन!

काकी गाय लेकर चली गयी।

विपिन मण्डल ने शिवकृष्ण से कहा, टिकुरी की बहू को लेकर आफत में पड़ गये शिबू! उसको सावधान कर दे। कह कर चला गया।—ये बातें अच्छी नहीं हैं।

शिवकृष्ण ने सिर पर हाथ उलट दिया। वह क्या करेगा?

महताब ने हाथ बढ़ा कर शिवकृष्ण से कहा, उठ मुझे पकड़ कर उठ।

शिवकृष्ण धीरे-धीरे उठा।

महताब उसको घर पहुँचा कर लौटते समय हठात् रुक गया। काकी न जाने क्या-क्या बक गयी। क्या भौजाई का मुँह! स्त्री का मुँह! न जाने क्या-क्या। शिवकृष्ण की अवस्था देख कर वह उस समय इतना अभिभूत हो गया था, कि बात ठीक सुन कर भी उसने समझने की चेष्टा नहीं की। अब बात याद पड़ी है। क्या कहा था उसने! उसने पुकारा—अरे, काकी! अरे विषमुँही टिकुरी काकी! सुनती है?

काकी ने घर के भीतर से ही उत्तर दिया—क्यों रे—डोकरा? क्या कहता है?

—क्या कहा उस समय? एक बार फिर कह तो? क्या भौजाई का मुँह, बहू का मुँह—क्या कहा था?

टिकुरी काकी हँस कर बोली, तुम्हारी बड़ी बहू का मुँह बहुत सुन्दर है! चाँद का टुकड़ा। वही कह रही थी। तुम्हारी बहू का मुँह किन्तु उतना सुन्दर नहीं है, यही कह रही थी। क्या मैं अनुचित कहती हूँ?

महताब खुश हो गया। उसने जोर से समर्थन करते हुए कहा, हजार बार। लाख बार। यह तुम ठीक कहती हो। नहीं, तुम यह ठीक कहती हो। किन्तु अब गाय सँभाल कर रखना। यह कहे जाता हूँ। वह धड़-धड़ खेत में चला गया।

उस समय दोपहर को सन्नाटा था। खेतों में धान भर उठा है। निरौनी हो रही है। किसान कड़ी धूप में धान के खेतों में पानी-कीचड़ से लथपथ घास-पात उखाड़ रहे हैं। दूर पर अब भी मिट्टी वालियों की आवाज सुनाई पड़ रही है—मिट्टी चाहिये, लाल मिट्टी, खड़िया मिट्टी!

सिताब के घर में उस दिन चना-मटर ढेकी में कूट कर बेसन तैयार हो रहा था। बेसन से सेवई छान कर फिर गुड़ में पाग कर पूजा के लिये लड्डू तैयार किये जाँयगे। दो कूटनेवाली स्त्रियाँ ढेकी चला रही हैं और मानदा ढेकी के मुँह पर चला-फिरा देती है।

सुनसान दोपहर की बेला। मकान निर्जन। बड़ी बहू नहीं दिखाई देती हैं। इसी निर्जनता में वे गाना गाती हैं। मानदा गाती है मूल गान और स्त्रियाँ गाती हैं अँतरा।

स्त्रियाँ अँतरा गा रही थीं—

मेरा बाजू—बन्द—झुमका डोले,
पर बन्धु का मन तो डोले ना।

और माँग के लाल मानिक—
की छटा से आँखें खोले ना।
हाय सखी लाजों मरी, लाजों मरी रे!

मानदा ने गाया—

मेरा मन जो झूला झूले
वह उसकी बनमाला झूले पर
मेरा मन गया भूल वहाँ पर
जब आया था उसे भुलाने।

कूटनेवाली स्त्रियों ने फिर अँतरा गाया—

मेरा बाजू बन्द झुमका डोले,
पर बन्धु का मन तो डोले ना!

हाय सखी लाजों मरी, लाजों मरो रे!

मानदा ने फिर गाया—

मन लेने आयी थी मैं
मन हार कर घर में लौटी
और लाज से गले का ताबीज, गिर पड़ा टूट कर भू पर।

साथ-साथ कूटनेवालियों ने गाया—

हाय! सखी लाजों मरी, लाजों मरी, लाजों मरी रे!

मानदा ने फिर गाया—

खोलने गयी बाजू-बन्द बन्धन, वह भी न खोल सकी मैं,
भूलने गयी उसको जो सखि, वह भी नहीं भूल सकी मैं।
काली नाग पकड़ने जाकर—
कालिया से गयी जकड़ में

मरने जा अमर हुई मैं, जलती हूँ जलन-ज्वाला से
लाजों मरी, लाजों मरी, लाजों मरी रे।

राधाकृष्ण की लीला से सम्बन्ध रखते हुए इस प्रकार के प्रेम के गाने बंगाल के गाँवों में समय-समय पर समयोपयोगी छन्दों और उपमाओं में रचित होते आये हैं। यह भाव पुराना नहीं होता। यह नयी भाषा में नवीन दिखाई देता है। सभी समयों में स्त्रियाँ ये गाने—बाउल, बैरागी, पांचाली-दल और यात्री दल के गानेवालों से सुन कर सीख लेती हैं। समय-समय पर इसी प्रकार निर्जन दोपहरी में गाया करती हैं। घर में गाती हैं, ढेकी साल में, घाट पर गाती हैं—जल में गला डुबा कर, सखियाँ मिल कर जल भरने के मार्ग में गाती हैं।

गाने के बीच में ही दरवाजे पर धक्का लगा। कोई सिकड़ी बजा कर दरवाजे के उस ओर खड़ा है। मानदा उस ओर देख कर बोली, कौन है?

औरतों के स्वर में आवाज आयी, दरवाजा खोलो।

मानदा ने कूटनेवालियों में से एक से कहा, खोल दे तो।

स्त्री ने दरवाजा खोलते ही कहा; ओह! पुटी मालकिन! मानदा की ओर देखकर बोली, घोंतन घोष की बहिन है। कह कर हट कर खड़ी हो गयी।

पुटी ने मकान के भीतर आकर कहा, अरे बापरे! अरे पूजा की धूम पड़ गयी है! खूब मटर कूटती हो! खूब गाना हो रहा है।

मानदा ने मुँह बिचका कर कहा, हाँ कूट रही हूँ। किन्तु तुम क्या सोचती हो? इस घोर दोपहर में?

—बड़ी बहू कहाँ हैं ? चाँपाडाँगा की दीदी ? एक बात कहने आयी हूँ।

मानदा उसके मुँह की ओर देख कर बोली, क्या बात है ?

—नहीं बहिन, वह बात मैं उससे ही कहूँगी। मेरी माँ ने कहने भेजा है, दूसरे से कहने से मना किया है।

—मैं जानती हूँ, मैं जानती हूँ। गहना न ? रुपया ?

—तुम जानोगी क्यों नहीं ? तुम आधे की मालकिन हो। जानोगी क्यों नहीं ? किन्तु मैं चाँपाडाँगा की दीदी से कह दूँ, तुम उससे सुन लेना। दीदी कहाँ हैं ?

मानदा ने उँगली दिखा कर कहा, उधर की झोपड़ी में धान उबाल रही हैं।

पुटी चली गयी।

मानदा ने झाड़ू हाथ में लेकर कहा, सिर पर तीन झाड़ू मारने की इच्छा होती है, तीन झाड़ू।

मकान में एक ओर फूस की झोपड़ी में चूल्हे पर हाँड़ी में धान उबाला जा रहा है। एक छोटे टुकड़े आँगन में उबाला हुआ धान फैलाया हुआ है। एक मजदूरिन अपने पैरों से धान उलट-पुलट रही है। चाँपाडाँगा की बहू की साड़ी मैली, धुयें से काली है। उसने कमर में गमछा बाँध लिया है। सिर पर कपड़ा नहीं है। केश रूखे दिखाई पड़ते हैं। अभी स्नान नहीं हुआ है। मुँह और नेत्र आग की आँच से और अभी तक न नहाने से सूख गये हैं। थोड़े अधिक काले दिखाई देते हैं।

पुटी जाकर थोड़े अचरज से बोली, तुम बीमार हो क्या दीदी ?

तुम्हारा मुँह कैसा हो गया है ? जैसे बड़ी बीमारी से उठी हो ! वह सक-रुण दृष्टि से कादू की ओर देखती खड़ी रही ।

पुटी ?—पुटी को देख कर बड़ी बहू थोड़ा विस्मित हो गयी ।

—ऐसे असमय में ?

—माँ ने तुम्हारे पास भेजा है । किन्तु—

—सहेली माँ ? क्यों रे ? सुना था सहेली माँ बीमार हैं—वह शंकित हो गयी । क्या पुटी रुपये-पैसे के लिये आयी है !

—बहुत भोग कर उठी हैं। किन्तु तुम्हारा ऐसा चेहरा क्यों है ?

अब लज्जापूर्वक हँस कर बड़ी बहू बोली, आज उपवास है न ! इसपर-

—उपवास ! इन्द्रपूजा का ?

—नहीं, आज संक्रान्ति है । संक्रान्ति को काली का उपवास करती हूँ ।

—काली का कवच लिया है दीदी ? लड़के के लिये ?

—जानती हूँ, नहीं होगा, तो भी लिया है । चाँपाडाँगा की बहू हँस पड़ी । यह हँसी बड़ी उदासी भरी हुई थी ! उपवास से सूखे हुए मुँह के ओंठो पर वह हँसी अनावृष्टि आकाश के बिना बरसनेवाले बाँझ बादल में क्षीण बिजली रेखा के समान दिखाई पड़ी ।

पुटी बोली, तुम कलकत्ता जाकर डाक्टर को क्यों नहीं दिखाती दीदी ? वही तो बाबुओं के गाँव के रवीन बाबू की बहू ने क्या चिकित्सा करायी—कि वर्ष बीतते न बीतते लड़का हुआ है ।

बड़ी बहू बोली, उन बाबुओं को जो होता है, वह क्या हम लोगों को होगा, क्या अच्छा लगेगा ? सहेली माँ ने क्या कहा है ?

पुटी ने कहा, क्यों कादू दीदी ! बहनोई के पास रुपये तो बहुत हैं !

बाबुओं से कम नहीं हैं, तो होगा क्यों नहीं ? नहीं-नहीं, तुम पकड़ो। तुम कलकत्ता जाओ।

कादू बोली, तुम्हारे बहनोई रुपये खर्च करेंगे ? इससे तो वह नया ब्याह कर लेंगे।

पुटी जैसे भय से चिल्ला उठी, नहीं—कादू दीदी, नहीं।

पुटी का ऐसा भय देख कर कादू हँस पड़ी। हँस कर बोली, छोकरी का भय देखो। भय नहीं है, तुम्हारे बहनोई ऐसा भी नहीं कर सकेंगे। दो बहुओं को भात देना होगा न ? इसमें कितना खर्च है जानती हो ?

पुटी सन्न होकर कादू का मुँह ताकने लगी।

कादू ने हँस कर ही पूछा, इस प्रकार क्यों देख रही हो ?

पुटी बोली, पुरुषों को नहीं जानती हो दीदी, जब उनको झोंक आती है तो वे सब कुछ कर सकते हैं।

—पुरुषों की इतनी बातें तुमने कैसे जान लीं ?

पुटी जैसे अप्रतिभ हो गयी। पैर के नाखून से भूमि खोदते-खोदते बोली, आँख के सामने देखती हूँ दीदी।

—अपने दादा को ?

—हाँ, और भी बहुतों को देखा है।

—मरने दो। जिसकी जैसी इच्छा हो, करे। तुम्हारा कंजूस बहनोई और जो कुछ करे, किन्तु यह काम नहीं करेगा।

अब कहो, सहेली माँ ने क्या कहा है ?

पुटी उसका मुँह देख रही थी, कादू की अन्तिम बात सुन कर चौंक कर बोली, थोड़ा आड़ में चलो दीदी।

—आड़ में? आओ।

पुटी के साथ वह घर में चली गयी। फिर पूछा—क्या है रे?

—तुम जानती हो कि नहीं, मुझे नहीं मालूम, किन्तु तुम्हारे स्वामी के साथ मेरे दादा की आज कल खूब बनती है, अकस्मात् अनहोनी हो रही है। मण्डल प्रायः दादा के पास जाते हैं।

चाँपाडाँगा की बहू चौंक पड़ी। किन्तु वह बड़ी कड़ी स्त्री है। क्षण भर में अपने को संभाल कर हँस कर बोली, तेरे दादा के पास जाते हैं? इससे क्या हुआ? तेरे दादा के साथ किसी समय मेरा व्याह ठीक हुआ था, इससे क्या सदा अनबन ही रहेगी?

—तुम मेरे दादा को जानती नहीं, चाँपाडाँगा की दीदी।

—दादा पर इतना क्रोध क्यों है रे? व्याह नहीं दिया, इसीलिये क्या?

—मरन है, मैं व्याह के लिये नहीं सोचती। किन्तु बात मेरी नहीं, माँ की है। माँ ने कहा है कि दादा बड़े मण्डल को ठग रहे हैं। राखहरि दत्त के लड़के से मिलकर जाल फैलाया है। दो भरी के गहने में लोहे का तार भर कर, सीसे का ठप्पा भर कर चार भरी वजन बना कर बन्धक रखता है। माँ बोली है, मेरी सहेली की पुत्री है, इस पर महताब ने इस बार धान छोड़ कर उपकार किया है, इसलिये ये सब जान-सुन कर चुप रहने से मेरा धर्म नहीं रहेगा। तुम्हारे स्वामी की उसी लोभ में पड़ कर दादा से बन रही है।

—वह तो सोनार को दिखा-सुना लेते हैं।

—नहीं। नहीं लेते। यही तो माँ ने कहा है—कैसे उसने सिताब को वश में कर लिया है, भगवान जाने। कल दो सौ रुपये देकर एक जोड़ी

अनन्त बन्धक रखी है। शायद उसमें लोहे की दो पतली सींकें भरी हैं। माँ ने अपने कानों सुना है। वह गहना बिना तोड़े नहीं पकड़ा जा सकता।

चाँपाडाँगा की बहू बोली, मैं उनसे कहूँगी। आने दो।

पुटी बोली, मेरा नाम न लेना दीदी। तुम्हारी दुहाई! नहीं तो दादा मुझे—

—तुझे मारता है क्या पुटी?

पुटी हँसी। बोली, वह बात जाने दो, और एक बात कहती हूँ—

चाँपाडाँगा की बहू प्रश्न भरी दृष्टि से पुटी की ओर देखने लगी। पुटी बोली, जैसे भी हो, अपने स्वामी से उसका साथ छुड़ाओ। नहीं तो तुम्हारा घर नहीं रह जायगा। वह नष्ट कर देगा। अवश्य नष्ट कर देगा। बड़ा मण्डल हमारे घर जाता है, दादा के साथ कानाफूसी करता है। मुझे अच्छा नहीं लगता। कभी तुम्हारी निन्दा, कभी छोटे मण्डल की निन्दा। बड़े मण्डल बीच-बीच में कहते हैं—जानते हो घोंतन मेरी क्या इच्छा होती है—घर छोड़ बैरागी हो जाऊँ या घर में आग लगा दूँ। तुम्हारे स्वामी पहले जैसे नहीं हैं दीदी। तुम सावधान हो जाओ।

बड़ी बहू आँखें फाड़ कर शरदकाल के दोपहर के नीले आकाश की ओर देखती रही। आकाश में छोटे-बड़े हल्के बादलों के समूह धीमी चाल से जा रहे हैं। जैसे झुण्ड-झुण्ड दूध के समान नौ लाख गायों का दल हों, जो आकाश-गंगा के असीम विस्तृत कोमल नीले किनारों पर स्वच्छन्द चरता हुआ धीमी चाल से घूम-फिर रहा है। वह धूप में अधिक उजला हो गया है। अकस्मात् दो-एक के शरीरों पर एकदम बीच में काले

रंग की पुट है। जैसे दधिमुखी धवली गाय की पीठ पर एक टुकड़ा काले रंग का विचित्र समावेश हो। छोटे-छोटे टुकड़े जैसे उनके बछड़े हैं जो बड़े बादलों की अपेक्षा तेज चाल से भाग रहे हैं। वह अपनी शक्ति भर पीठ पर पूँछ उठाये हुए आकाश के आँगन में दौड़ा-दौड़ी करते फिर रहे हैं।

बाहर एक गाय हुंकार उठी।

उसकी हुंकार से बहू को स्तब्धता भंग हुई। पुटी उसके मुँह की ओर ताक रही थी। गर्विणी चाँपाडाँगा की बहू को लगा—कि वह क्षण भर में कितनी गरीब हो गयी है। पुटी उसके मुँह की ओर देख कर संभाल न सकी, झट बोल उठी, मैं जाती हूँ दीदी।

वह घर से बाहर निकल रही थी। चाँपाडाँगा की बहू ने आकर झट उसका हाथ पकड़ कर कहा, पुटी !

पुटी ने उसकी ओर विस्मय के साथ ताक कर कहा, क्या ? चाँपा-डाँगा की बहू की दृष्टि जैसे कैसी हो गयी है ! उसका चेहरा भादों मास के भरे हुए तालाब के समान हो गया है। किनारे तक भरे हुए अथाह जल में से जैसे कोई एक जलचर हिल उठा है। उसके हिलने से ऊपर कम्पन आ गया है।

चाँपाडाँगा की बहू बोली,—अत्यन्त धीमे गले से मेरे स्वामी पहले जैसे नहीं हैं ? मेरी निन्दा करते हैं ? क्या निन्दा करते हैं पुटी ? मैंने क्या किया है ? क्या कहते हैं ?

पुटी उसका मुँह देख रही थी, उसे भय लग रहा था, भय के साथ

लेते हैं। वे बहुत चेष्टा करके भी बेच नहीं पाते। घोंतन इस कारबार में सिताब को घुसने में सहायता करता है।

घोंतन बैठ कर बीड़ी खींच रहा था। कहीं पूजा मण्डप में शहनाई बज रही है। बरामदे के पास ही एक हारसिंगार के पेड़ से फूल गिर रहे हैं।

सिताब के बरामदे में आते ही उसने उठ कर अभ्यर्थना की और उसे आदर के साथ बिठाया। बीड़ी दी सिताब की बगल में एक बण्डल और हाथ में एक पोटली थी। उसने उसे बिना भूमिका के ही घोंतन के हाथ में देकर कहा, देखो—लड़कों-बच्चों के शरीर पर होता है कि नहीं।

पोटली खोल कर घोंतन ने देखी, उसमें कई फ्राक, दो साड़ियाँ एक धोती, एक थान, दो ब्लाउज और एक शर्ट थी। घोंतन ने समझा, ये सब उसके लिये लाया है। उसने दाँत निकाल कर कहा, ठहरो इसे घर में दे आऊँ।

वह पोटली लेकर भीतर चला गया।

सिताब को पैर मोड़कर बैठने का अभ्यास है, वह घुटने पर केहुनी रखकर और सिर पर एक हाथ देकर दूसरे हाथ से बीड़ी पीने लगा।

रास्ते से कई गायें लेकर एक चरवाहा चला गया। उसके पीछे बहु-बल्लभ बाउल एक तारा और कमर में गमछा बाँधकर टुंग-टांग शब्द निकालते हुये जा रहा था। बहुबल्लभ ने सिताब को देखकर कहा, बड़े मण्डल यहाँ बैठे हैं?

सिताब बोला, क्या तुझे इसकी कैफियत देनी पड़ेगी?

बहु बल्लभ ने कहा, कपड़ा खरीदने आये थे?

सिताब ने बीड़ी खींची और धुआँ छोड़ते-छोड़ते कहा, उहूँ। आकाश के तारे गिनने आया था।

बहु वैष्णव है, क्रोध नहीं करता। उसने हा-हा हँसकर कहा—दिन में ही ?

सिताब बोला, रात में रास्ते में साँप-टाँप, सियार-कुत्ते रहते हैं, रात में अपने घर तारे गिनता हूँ। नवग्राम के आकाश के तारे गिनने के लिये दिन में ही आना अच्छा है।

—हाँ, दिन में तारे गिनने का समय तुम्हें है। तुमलोगों का धान कितना अच्छा है! आह, जैसा काला गहरा रंग, उसी तरह पुञ्ज! हाँ, महताब एक मर्द है! उसमें अपूर्व शक्ति है!

सिताब उसका मुहँ देखता रहा। इसके बाद फतुहे की पाकेट से एक पैसा निकाल कर फेंक दिया और बोला, जा, जहाँ जाना हो, चला जा। बक-बक कर मेरा कान न खा। मिजाज खराब न कर।

हरिबोल—हरिबोल!—कहकर पैसा उठा लिया और उसे सिर से लगाकर आकाश की ओर देखकर बोला, मिजाज खराब होने की बात ही है! आकाश खाँय-खाँय कर रहा है, बादल का नाम निशान नहीं! तुम्हारे उस खेत में अभी तक नहर नहीं आयी है। जल न पाने पर इतना अच्छा धान सूख जायगा। आह! थोड़ी देर चुप रहकर फिर बोला, चिन्ता मत करो। पानी बरसेगा। इसी पूजा में ही पानी बरसेगा।

—नहीं, नहीं बरसेगा।

इस बात का सुर सुनकर बहु चौंक पड़ा।

सिताब फिर बोला, एकदम सूखकर घास हो जायगा। जल जायगा।

वह बोला—नहीं, नहीं, नहीं। बरसेगा। भगवान वैसा नहीं करेंगे। नहीं-नहीं। देंगे, देंगे। माँ भगवती आती हैं—भोग खायेंगी। मुँह धोयेंगी। हे माँ जल दो। जल देकर सृष्टि बचाओ माँ।

सिताब विरक्त होकर उठा और बरामदे की ओर जाकर पुकारा—घोंतन! ओ घोंतन!

बहु और खड़ा नहीं हुआ, चला गया।

घोंतन जल्दी-जल्दी बाहर निकल आया। उसने इसी बीच नया जामा पहन लिया है। हँसकर बोला, देर हो गयी। चाय बनाने को कहा है। घर में दूध नहीं है, पुटी दूध लाने गयी है।

—लड़कों के शरीर पर कपड़े ठीक आये न?

—हाँ, ठीक आये हैं। तुम्हारी नजर ठीक है!

—बहू और पुटी को कपड़े पसन्द आये?

—बहू को तो आये हैं, पुटी की बात नहीं जानता। वह भाड़ खाने वाली बात नहीं बोलती। वह दूसरी तरह की है। वह बड़ी बदजात है।

—नहीं-नहीं। बड़े काम की लड़की है। बड़ी अच्छी लड़की है।

—किन्तु बहू हँसती थी।

—क्यों, इसमें हँसने की क्या बात है?

—वही जो चाँपाडाँगा की बहू के साथ बचपन में मेरे व्याह की बात हुई थी, उसी को लेकर मजाक कर रही थी। अन्त में सौतिन से प्रेम हुआ!

सिताब थोड़ा हँसा, इसके बाद सहसा गम्भीर होकर बोला, तू भाग्यवान हो घोंतन। तेरा भाग्य अच्छा है। तू बड़ा भाग्यवान है।

इसके बाद थोड़ी देर चुप रहकर बोला, उसके साथ तेरा व्याह नहीं हुआ घोंतन, तू बच गया।

ठीक इसी समय घोंतन की माँ ने बाहर आकर कहा, तुम्हें धन-पुत्र और लक्ष्मी लाभ हो बाबा, किन्तु इतने रुपयों की चीजें तुम्हें नहीं देनी थी। इतनी मीठी बातें कहने पर भी जैसे उसका कण्ठ स्वर निरस था। जैसे वेसुरा लग रहा था।

सिताब चंचल हो उठा, बोला, मौसी!

—हाँ बेटा!

—घोंतन का लड़का रो रहा था, देख गया, इसीलिये—

—तो लड़कों को ही देना था यह बाजार। इस पर बुरा न मानो, तुम्हारे परिवार में भाई-भौजाई हैं—

भाई-भौजाई! सिताब को क्रोध आ गया। इसमें भाई-भौजाई का क्या है? मैं अपने हिस्से से दूँगा। उसको लड़का है, मेरे लड़का-पड़का नहीं है। मेरा कौन खायेगा? मैं क्या करूँगा? बिटोरने से क्या लाभ?

—कादू से कहा है बेटा?

—कादू से? सिताब चौंक पड़ा। सिर नीचा कर गर्दन हिला कर जनाया—नहीं, उसे भी नहीं बताया।

—तुम बेटा, मेरे और पुटी के दो जोड़े कपड़े ले जाओ।

—ले जाऊँ?

—हाँ।

—माँ! घोंतन चिल्ला उठा।

माँ इससे भी न डरी। बोली, बात चलेगी बेटा! चलेगी, नहीं चल

चुकी है। टिकुरी की बहू— । वह रुक गयी। थोड़ी देर बाद जैसे शक्ति संचय कर बोली—टिकुरी की बहू ने कल मुझसे कहा, सिताब खूब आता-जाता है। कन्या भी खोजता है। तो—पुटी को— । वह फिर रुक गयी।

सिताब आँखें फाड़ कर घोंतन की माँ की ओर देखता रहा। यह बात तो जैसे एकान्तभाव से उसके मन की बात थी, किन्तु इस क्षण के पहले भी उसके मन ने इस बात को तय नहीं कर पाया था। हाँ, वह सन्तान चाहता है। कादू बाँझ है, वह उसके प्रति पूर्ण अनुरक्त-आसक्त है। वह उसके प्रति प्रेम-प्रीति से पूर्ण स्त्री नहीं है। कादू महताब-महताब कहती है। उसका प्रथम यौवन धन कमाने की कठोर साधना में उपवासा रह गया है। बहुतों से ठगा जाकर किशोरावस्था में उसने निष्ठुर आघात पाकर संसार को कुटिल और अविश्वासी के रूप में ही देखा है। घोंतन ने उसके मन में सन्देह उत्पन्न कर दिया है। टिकुरी की बहू ने उसमें हवा दी है। उसको अविश्वास हो गया है। इसी समय पुटी आकर उसके सामने खड़ी हो गयी है। युवती स्त्री है। विवाह नहीं हुआ है। बहुत दुखी है। यही तो—इसको विवाह करने से वह बड़ी कृतज्ञता से उससे लिपट जायगी। आज सब बातें एक ही बात में साफ हो गयीं। वह कहने पर उसकी आँखों में जल भर आया—कहना चाहा—हाँ। मैं पुटी को चाहता हूँ। मैं अपना सब उसे दे दूँगा।

किन्तु कह नहीं सका।

ठीक इसी समय सिताब के चरवाहे गोविन्द ने भागते हुए आकर कहा, मण्डल जी, जल्द चलिये ! घर चलिये।

—क्यों रे, क्या हुआ ? घोंतन ने पूछा।

—सिताब बोला, होगा क्या ? निश्चय मेरे जन्म-शत्रु ने कुछ किया है। वह मेरा भाई नहीं, जन्म-शत्रु है। सदा से जलाता रहा है। उसीने कुछ किया है।

—हाँ। खेत में एकदम सिर फुड़ौवल लगा दी है। उसका सिर फटा है। खून गिर रहा है। और मीरबन्ध के शेखों में से दो के सिर फोड़ दिये हैं। रक्त की गंगा बह रही है। जल के लिये मार-पीट हुई है।

सिताब चिल्ला उठा, मर जाय, मर जाय, नहीं तो पकड़ ले जाओ। मैं नहीं जानता, कुछ नहीं जानता।

कह कर दन-दन आगे बढ़ा।

इतनी बड़ी घटना का जो कारण है, वह सुनने में तो साधारण जान पड़ता है, किन्तु किसानों के लिये असाधारण है, उसका महत्व बहुत अधिक है।

कारण है, पानी की चोरी।

महताब ने अपने मुँह से ही कहा, कल रात में एक पहर तक अमर-कुड़ी में मैंने लबालब पानी भर दिया था। अंगुल से नाप कर देखा मेड़ के सिरे से दो अंगुल नीचे था। शेख के लड़के वही जल चुरा लेंगे ? कहा, ऐसा कह कर पागलपन न कर, घर जा। चाँपाडाँगा की बहू ने भात रखा है, जाकर खा। जब मैंने उनकी गर्दन पकड़ी तो हैदर ने सिर पर लाठी जमा दी। मैं महताब हूँ! उसी लाठी से पीट कर मैंने दोनों भाइयों के सिर फोड़ डाले।

महताब उस समय मकान में बैठ कर बड़ी बहू से परिचर्या करा रहा

था। उसने खूब अच्छी तरह धो दिया फिर गेंदे के फूल की पत्तियाँ पीस कर उसमें भरी और कपड़ा बाँध रही थी। मानदा पानी से बरामदे में गिरा हुआ खून धो रही थी।

सिताब गम्भीर होकर खड़ा-खड़ा सुन रहा था। महताब की बात समाप्त होते ही बोला, खूब किया, अच्छा किया। अब फौजदारी मामला चले। जेल जाओ। एक पैसा खर्च नहीं करूँगा। मैं यह कहे देता हूँ।

—इसलिये वह मेरा पानी चुरा लेगा?

—क्या पानी चुराने का प्रमाण मिलता है? जल में नाम लिखा रहता है क्या?

—उसने जल पाया कहाँ से?

—जहाँ से भी पाये! तूने कहाँ पाया? मूर्ख, पगला कहीं का।

अब बड़ी बहू बोली, देखो उसे इस तरह जो मुँह से निकले वही मत कहो। मैं तुम्हें मना करती हूँ। तुम सहोदर बड़े भाई हो, तुम्हारे मुँह से ये बातें कैसे निकलती हैं? छिः-छिः!

महताब ने बड़ी बहू के दोनों हाथ परम आवेग के साथ पकड़ कर कहा, जिसकी बड़ी बहू नहीं है, उसको कोई नहीं है।

उस क्षण सिताब को जैसे जोर मिला, वह जल उठा। चाँपाडाँगा की बहू से बोला, तुमको भी छिः! तुमको भी छिः! तुमको भी छिः! यह कह कर कपड़े का बण्डल फेंक कर चला गया।

कण्ठस्वर सुन कर कादू चौंक पड़ी। वह कुछ देर तक तीक्ष्ण दृष्टि से भौहें सिकोड़ कर स्वामी के जाने का मार्ग देखती रही, इसके बाद महताब से बोली, छोड़ो, तुम्हारे लिये दूध गर्म कर दूँ। जाकर घर में थोड़ा सो जाओ। मानू, ले जा इसे।

बड़ी बहू ने रसोईघर में जाकर चूल्हे पर दूध की कटोरी रख दी, और चुपचाप बैठी रही।

महताब ने घर में जाकर बिछौने पर सोकर अपने आप ही कहा, चमार के नेता को मैं एक दिन निकाल दूँगा।

पास के बिछौने पर मानिक सोया था। मानू उसका दबा हुआ हाथ हटा रही थी, उसने चमार शब्द नहीं सुन पाया, केवल नेता के मारने की बात सुन कर समझा कि उसे मारने को कह रहा है। इस संसार में मुँह जली मानदा को छोड़ ऐसा कौन है जिसको इतने सहज में मार सकता है ! उसने अकस्मात् गरदन घुमा कर तेज आवाज में पूछा—किसे ?

—दूसरा कौन ? उस चमार, कृपण को, बड़ी बहू के स्वामी को। उसी मेरे दादा, तुम्हारे भसुर को।

—तुमको भी छिः ! समझा ?

—तुम्हारा सिर भी एक रोज फोड़ दूँगा। हाँ !

बड़ी बहू सीढ़ी पर से ही बातें सुन रही थी, बोली, क्या अनाप-शनाप बोलते हो ? क्या तुम्हारे कारण मुझे एक क्षण भी शान्ति नहीं मिलेगी महताब ? लो, दूध पी लो।

—नहीं। दूध नहीं पीऊँगा। भात दो। मछली और भात। कल तालाब में पकड़ी हुई मछली है। याद पड़ गया। मछली का मूँड़ा और भात। ले आओ।

चाँपाडाँगा की बहू बोली, मानू, भात ला दे।

कह कर वह लौटी। महताब ने उसका आँचल पकड़ कर कहा, नहीं वह मुझे छिः करती है। उसके हाथ का नहीं खाऊँगा। तुम भात ला दो।

चाँपाडाँगा की बहू बोली, छोड़ो, आँचल छोड़ो।

उसकी गम्भीर आवाज सुनकर महताब ने आँचल छोड़ दिया, तुम्हें क्या हुआ है ? बतला सकती हो ?

—कुछ नहीं हुआ है, मैं मछली नहीं छुऊँगी, मानू ला दे, यह कह कर चली गयी।

महताब चिल्ला उठा, क्यों नहीं छुओगी ? क्या तुम विधवा हो गयी ? या खरदा की देवी माता हो गयी हो ? मछली नहीं छुओगी ?

सीढ़ी के बीच से ही उत्तर आया—आज षष्ठी है।

—षष्ठी है ?

मानदा मुँह बिचका कर बड़ी बहू के चले जाने पर स्वामी के पास जाकर बोली, हाँ, हाँ, षष्ठी है। लड़के वंश, नहीं चाहिये क्या ? लड़के के लिये क्या करती है, देखो न। गले में एक बोझ ताबीज है। नित्य उपवास करती है। अन्धे हो क्या ?

महताब ने अब क्रोध नहीं किया। वह एक क्षण के लिये भयंकर वेदना से पीड़ित होकर स्थिर दृष्टि से देखने लगा। कुछ देर बाद अस्फुट स्वर से बोला—लड़का, सन्तान ! सियाराम, सियाराम ! उसने एक गहरी साँस छोड़ी।

मानदा बोली, बड़ी बहू के लिये बड़ी दर्द होती है। अब समझो।

फिर एक लम्बी साँस छोड़कर महताब बोला, तू ठीक कहती है मानू, मैं नहीं समझ पाता था। थोड़ी देर बाद बोला, मैं थोड़ा पागल हूँ ! सिर थोड़ा खराब है।

—थोड़ा ? अब अक्ल हुई न ?

—हाँ, हुई। फिर एक लम्बी साँस छोड़कर बोला, नहीं। यह मैं नहीं समझा।

—अगर इस समय समझ गये हो, तो समय पर व्यवस्था करो। समझे न ?

—क्या करूँ, बतला तो मानू ?

—क्या करोगे ? यह भी मुझे बतलाना पड़ेगा ? दादा से जाकर सीधे पूछो, घोंतन से सलाह कर कितने रुपयों के गहने बन्धक रखे हो ? अब तक कितने रुपयों का धान बिका है, हिसाब दो ? मेरी सम्पत्ति—

सम्पत्ति ?—महताब ने घृणा भरी हुई तेज नजर से मानदा की ओर देख कर कहा, शिव-शिव-शिव ! अब तक अब तक की सम्पत्ति की बात कहती हो ?

मानदा विस्मय से अवाक् होकर स्वामी की ओर देखती रही। महताब ने उसे सीढ़ी दिखा कर कहा, चली जा, मेरे सामने से चली जा। मेरे सारे अंग जल रहे हैं। चली जा। सम्पत्ति ?

चली जाऊँ ? मानदा चिल्ला उठी।—चली क्यों जाऊँ ? मैं लड़के की माँ हूँ। यह मेरे लड़के का घर है।

—मैं लड़के का बाप हूँ। जब चली जाओगी तो अच्छा कहोगी। उसकी गर्दन पकड़ कर उसे सीढ़ी पर बिठा आया। फिर मानिक के सिरहाने बैठ कर खिड़की से बाहर की ओर देखने लगा।

नीचे बड़ी बहू थके शरीर और उदास मनसे बरामदे में आँचल बिछा कर सोयी थी। सोयी नहीं थी, हृदय के असह्य आवेग की हलचल शान्त करने के लिये औंधी पड़ी थी। वह और नहीं सँभाल पाती है, सँभाल पा

रही है। इसी समय मानदा तेजी से सीढ़ी से नीचे उतर कर बड़ी बहू को इस प्रकार पड़ी देख कर ठिठक कर खड़ी हो गयी। जैसे मनुष्य भयंकर क्रोध में निरुपाय होकर सब सहने वाली पृथ्वी पर पैर ठोंक कर उसे जाहिर करता है और कभी-कभी सिर पटक कर फोड़ कर शान्त होता है, वह मिट्टी पर चोट करता है, मिट्टी को खून से रँगता है—उसी प्रकार मानदा ने बड़ी बहू पर सब क्रोध सब क्षोभ निकाल कर आघात किया। उसने कहा, तुम्हीं ने, तुम्हीं ने मेरे सिर पर आग रखी है। तुम्हीं ने।

बड़ी बहू ने उसी तरह पड़ी-पड़ी उत्तर दिया। दिन-रात आँखों से पानी गिरा कर भी उसे बुझा नहीं पाती हूँ, क्या करूँ कहो?

कहते-कहते वह उठ बैठी। आँखों से जल उस समय भी लुढ़क रहा था।

मानू ने आज प्रायः क्रोध में ज्ञान खो दिया है। वह चिल्ला कर बोल उठी, अब क्या हुआ है? बहुत रोना पड़ेगा। तुम्हें बहुत रोना पड़ेगा।

मानदा के चिल्लाने से ही शायद दो ओर से दोनों भाई—सिताब और महताब—चले आये। सिताब मकान के बाहर से आया है और महताब ऊपर से नीचे उतरा है। महताब की गोद में मानिक है।

सिताब कड़ी आवाज में बोला, तुम लोग एक क्षण भी शान्त न होने दोगी? क्यों इतनी अशान्ति है? रोती हो? तुम रोती हो? बोलो, क्यों रोती हो?

महताब स्थिर दृष्टि से देखता हुआ खड़ा था। हठात् वह चल कर बड़ी बहू के पास आया और मानिक को बड़ी बहू की गोद में फेंक कर बोला, यह लो, यदि तुम्हें लड़के के लिये इतना दुःख है, तो इसे लो। अपने लड़के को तुम्हें दे दिया। लो।

मानदा चिल्ला उठी, नहीं, नहीं, नहीं। मेरा लड़का—

महताब रास्ता रोक कर खड़ा हो गया—नहीं।

सिताब ने अधीर चाल से आकर बड़ी बहू की गोद से मानिक को उठा लिया और मानदा और महताब के पास उतार कर कहा, नहीं। मैं दूसरे का लड़का नहीं चाहता। अगर भगवान मुझे दें, तो मैं लूँगा। वही मेरा होगा।

कहकर वह बाहर चला गया।

बड़ी बहू ने पुकारा—सुनो, सुनो, जाओ मत।

क्या? सिताब लौट पड़ा।

बड़ी बहू बोली, तुम मुझे छुट्टी दे दो।

सिताब बोला, बच जाऊँ, बच जाऊँ, ऐसा होने पर मैं बच जाऊँ। कहकर वह चला गया।

बड़ी बहू उठ कर खिड़की के रास्ते की ओर चली।

महताब बोला, तुम कहाँ जाओगी?

बड़ी बहू ने कहा, हटो। तालाब में गोता लगा आऊँ।

कहकर बगल से वह बाहर चली गयी। महताब ने उसके पीछे-पीछे जाने के लिये तैयार होकर पुकारा, बड़ी बहू!

मानदा बोली, टोको मत। डूब कर नहीं मरेगी।

महताब ने मानदा की ओर घूम कर कहा, तुम सब साँप की जाति हो। तुम लोगों में विष छोड़ कुछ नहीं है। जीवन जला डाला। बड़ी बहू से कहना, तेरा काटना सह लिया था। उसका काटना सहन नहीं

हुआ। मैं चला। अब इस मकान में फिर नहीं आऊँगा। जिधर मुँह उठेगा, चला जाऊँगा। हे शिव! हे भगवान!

कहते-कहते वह चला गया।

वह खिड़की के रास्ते ही गया। तालाब के घाट पर उस समय बड़ी बहू स्तब्ध होकर खड़ी थी। वह भरे तालाब की ओर देखा रही थी। उसने दाहिनी मुट्ठी में गले की कवच-ताबीज पकड़ रखी थी।

दूर से ही महताब ने उसे देख कर कहा, मैं चला। मैं नहीं लौटूँगा।

बड़ी बहू ने उसकी ओर देखा, कुछ कह न सकी।

महताब जाते-जाते बोला, नहीं। लड़का—तुम्हें लड़का बच्चे हो। उसको लेकर तुम सुखी रहो। मैं जाता हूँ। तुम्हें मेरी क्या जरूरत है?

वह चला गया। बड़ी बहू खड़ी रही। उसके मुँह पर विचित्र हँसी छा गयी। इसके बाद उसने जोर कवचवाली मुट्ठी को झटका दिया। कवच में बँधा हुआ सूत पट से टूट गया। उसने कवचों को पानी में फेंक दिया।

वहाँ 'छप' से एक शब्द हुआ और कवच पानी में डूब गये।

इसके बाद वह धीरे-धीरे पानी में घुसी। वह घुटने तक जल में पहुँच कर ठिठक कर खड़ी हो गयी। उसके नेत्रों से जल निकल रहा था।

महताब जिधर मुँह उठे उधर जाने का संकल्प लेकर ही घर से निकला था। वह आधा पागल है। उसे गहरी चोट लगी है। बड़ी बहू उसके बचपन के खेल की साथी है। दस-ग्यारह वर्ष की कादम्बिनी ससुर के घर आकर देवर के साथ खेल घर में खेलती—वह माँ बनती और महताब पुत्र बनता। वह कीचड़-धूल का भात पका कर देवर को खाने के लिये देती।

आँगन में एक नीची जगह को तालाब मानकर वह उसमें महताब को नहला देती। छोटी अँजुली में शून्य को जल मान कर महताब के सिर पर ढाल देती। फटे, चिथड़े से शरीर-मुँह पोंछ देती। कभी-कभी मारती। महताब रोता और रोना बन्द कर हठात् चाँपाडाँगा की बहू की गर्दन पर टूट कर उसे उल्टी मार मारता।

महताब की माँ आकर कहती, क्या हुआ ?

कादू लज्जा से चुप रहती।

महताब बोलता, मुझे मारा है।

—तुमने क्या किया था ?

—कहा था, भात नहीं खाऊँगा। वह माँ बनी है न !

—ओह ! तुम पुत्र हो वह माँ है !

—माँ नहीं, राख ! राख ! राख !

—नहीं, नहीं-नहीं ! ऐसा न कहना चाहिये, ऐसा न कहना चाहिये। बड़ी भौजाई माँ के ही बराबर है। बराबर नहीं, माँ ही है।

—इतनी छोटी लड़की मेरी माँ होगी ?

—होती है। लक्ष्मण से सीता अवस्था में छोटी थीं। फिर सीता लक्ष्मण को माँ से भी अधिक थीं। जानते हो ?

केवल यही खेल नहीं ! उन्होंने कितने खेल खेले थे—उनका विवरण एक गाने से भी अधिक है। वह खतम नहीं होता। लिखने पर रामायण–महाभारत हो जायगा। कहने से बात खतम हो जाती है। इसी प्रकार एक साथ कितने दिन बीते हैं। इसपर इतने दिन निस्सन्तान अवस्था में महताब को अत्यन्त गहरे प्रेम में जकड़ कर आज अकस्मात् उसने उस

स्नेह को तुच्छ मान कर सन्तान-कामना को बड़ा समझने के सम्वाद से महताब को मर्मान्तक दुःख हुआ है। वह अपनी जाति-बिरादरी के पाढ़े से निकल कर गाँव के सिरे पर बाउरियों के पाढ़े में आया।

वह बाउरीपाढ़ा पार कर खेतों में पहुँचा।

आश्विन मास में धान के खेत में लबालब जल की आवश्यकता होती है। किन्तु आश्विन मास भर जल नहीं बरसा। खेत सूख गये हैं। खेतों में उत्कण्ठित किसान कन्धे पर कुदाल रखे हुए घूम रहे हैं। महताब को भी इस समय खेतों में ही घूमना चाहिये था। आज सबेरे भी वह घूमा है। मार-पीट कर सिर फोड़ा है, किन्तु अब उसे इच्छा नहीं है। पागल है, खेतों के किनारे स्थित एक पेड़ की डाली पर बैठ कर पैर झुलाते हुए गाने लगा—

"इस संसार में कौन है किसका,
कौन तुम्हारा, तुम हो किसके ?
मेरे अपने जो जन लगते,
उनका कौन ठिकाना जाने ?

दो कड़ियाँ गाने के बाद न जाने क्या मनमें आया, कि वह कूद कर नीचे उतरा, वह दन-दन मेड़ों पर चल कर अपने उन खेतों के जल को, जिनको उसने दिन-रात परिश्रम कर दोन से भरा था, पैरों से मार कर खोल दिया। पानी बहने लगा। वह उल्लास से चिल्ला उठा—सम्पत्ति—विष—विष—जा विष बह जा। धान सूख जा। सूख जा।

चारों ओर के खेतों के किसान अवाक् हो गये। छोटे मण्डल को क्या सूझा है ? इसमें अधिकांश मजदूर-श्रेणी के लोग हैं, वे धान बचाने के लिए

खेतों में छाती फाड़ कर परिश्रम कर रहे हैं। तालाब-तालाब में दोन चल रही है। नालियाँ काटे जा रहे हैं। खाना-पीना खेतों में ही होता है। खेतोंमें ही रात बितायेंगे। वे कभी देशी शराब के कुल्हड़ की चुस्की लेते हैं, कभी तम्बाकू पीते हैं और बड़ी मिहनत करते हैं। महताब का हलवाहा नोटन भी खेत में था। वह दौड़ा आया। वह शराब की हाड़ी में चुस्की लगा रहा था; उसे हाथ लिये हुए ही दौड़ा आकर बोला, मण्डल! छोटे मण्डल!

महताब बोला, जाय, जाय, विष बह जाय।

नोटन हाँड़ी मेंड पर रख कर टूटी मेंड़ बाँधने लगा। महताब की नजर हाँड़ी पर पड़ी। हाँड़ी उठा कर नाक सिकोड़ ली, और मुँह फेर लेने पर विवश हुआ। उसने फिर जोर कर मुँह घुमाया, वह शराब पियेगा ही।

नोटन से अचरज से पूछा, क्या हो रहा है? शराब पीओगे?

—पिऊँगा। पिऊँगा।

—यह देखो, घर में बकेगा।

—घर? मैं अब घर नहीं जाऊँगा।

कह कर कुल्हड़ में चुस्की लगायी।

इधर चण्डीमण्डप में प्रतिमा बिठा कर एक ओर मण्डल लोग पूजा का आयोजन कर रहे थे, दूसरी ओर खेतों में जल की चर्चा चल रही थी।

विपिन, सिताब, रामकृष्ण और दूसरे मण्डल बैठे हैं। घोंतन भी आकर जमा है। चण्डीमण्डप में टिकुरी-काकी तथा दो-तीन और प्रवीणायें मिलकर कोई झाड़ू दे रही है, कोई पूजा के बर्तन माँज रही है। एक स्त्री घास की रस्सी में आम की पत्तियाँ पहना रही है। कई लड़के

रंगीन कागज काट कर झण्डियाँ बना रहे हैं। एक लड़का एक मोटे कागज पर लिख रहा है—यात्राभिनय। एक ओर बैठा है घोंतन।

विपिन कहता था, पूजा के कुछ दिन बीत जायँ, इसके बाद नहर के आफिस में चलो। जब नहर में जल आ रहा है, तो खेतों में नालियाँ नहीं आयी हैं, इसीलिये पानी नहीं दिया जायगा, यह बात नहीं चलेगी। पानी दे दे। हम किसी प्रकार ले आयेंगे।

घोंतन बोल उठा, वे नहीं देंगे। वह अत्यन्त ज्ञानी बन कर सिर हिलाने लगा।

बिपिन ने गर्दन मोड़ कर घोंतन को देख कर कहा, कौन है घोंतन? इसीलिये कहता कि इतना ज्ञानी कौन है? यूनियन कोर्ट के वकील है क्या? कानून एकदम ओठ पर है। देंगे नहीं? क्यों नहीं देंगे! तू यहाँ कहाँ? आँय!

सिताब बोला, वह मेरे पास आया है।

तुम्हारे पास! बहुत अच्छा। आया है, अच्छा किया। किन्तु सब बातों में क्यों पड़ता है? अपनी बात हम देखेंगे। सभी बातों में उसको दखल नहीं देना चाहिये। देंगे नहीं, चलो सब मिल कर चलें। कहें, नहर जब सिंचाई के लिये है तो क्यों नहीं दोगे? ठीक है न!

रामकृष्ण, शिवकृष्ण तथा अन्य मण्डलों ने समर्थन कर कहा, यह ठीक बात है। गाँव भर मिल कर चलें—

सिताब खड़ा हो गया। उसे यह सब अच्छा नहीं लगता था। उसका भी परिवार विष हो गया है।

उसने पुकारा, घोंतन!

घोंतन के उत्तर देने के पहले ही विपिन बोला, जा रहे हो सिताब ?

—क्या करूँ ? मुझे जल की आवश्यकता नहीं है। सूख जाय धान, जल जाय खेत। जो होना है, होवे। समझते हैं न ?

शिवकृष्ण बोला, सिताब के खेतों में जल है। महताब ने आगे से बाँध रखा है। उसको चिन्ता नहीं है।

अरे ! कह कर सिताब चिल्ला उठा, किन्तु इसके बाद रुक गया। बोला, छोड़ो इन बातों को। मेरी बात मेरे मन में ही रहे। कह कर वह थोड़ी दूर चला गया। किन्तु एक बात याद पड़ने पर उसने लौट कर कहा, हाँ एक बात और है ताऊ। मेरी स्त्री पूजा के वरण की डाली धरती है, किन्तु इस बार दूसरे को देखिये। वह नहीं धरेगी।

उधर से टिकुरी काकी सबसे पहले बोल उठी, यह अच्छा है, यह अच्छा है बाबा ! हम लोग नहीं कह पाते थे। यह तुम्हें अच्छी बुद्धि आयी है।

विपिन ने दृढ़ स्वर में कहा, टिकुरी की बहू क्या कहती हो ?

—उचित बात कहती हूँ। मण्डल बहरा है क्या ? कान में बात नहीं पड़ती ?

—नहीं। नहीं पड़ती। अनुचित बातें मत कहो।

सिताब बोला, न्याय-अन्याय विचार की क्या बात है ताऊ ? उसका मन अच्छा नहीं है, शरीर अच्छा नहीं है—

—क्यों रे ? मन अच्छा नहीं है क्यों ? सुना है महताब ने अपना लड़का बड़ी बहू को दिया है, फिर भी मन अच्छा नहीं है। बाप रे देवर का इतना प्रेम ?

काकी !—सिताब ने कड़ी आवाज में टोक कर कहा, महताब का लड़का मैं क्यों लूँगा ? मेरे भाग्य में होगा—

—होगा नहीं, कार्तिक देवता के बाप भी आ जायँ तो भी बाँझ को लड़का नहीं होगा। चाँपाडाँगा की बहू की कोख नहीं फलेगी।

उसे टोक कर सिताब बोला, चाँपाडाँगा की बहू के कपाल का लेख ही तो अकेला नहीं है काकी, मेरे कपाल का लेख भी तो है !

सिताब दनदना कर रास्ते पर चला गया। घोंतन बोला, ठहरो, ठहरो।

वह सिताब के साथ होकर बोला—अच्छी बात तुमने कही है ! ठीक कही है। दूसरे के लड़के से अपनी साध मिटती है ? नहीं मिटती। स्त्रियों का भाग्य और पुरुषों का भाग्य एक नहीं है। तुम पुटी से ब्याह करोगे ? मैं करूँगा। मैं करूँगा। तुम बोलो।

सिताब कहने जाकर भी न कह सका। उसका हृदय लालायित है। किन्तु चाँपाडाँगा की बहू ! चाँपाडाँगा की बहू ! वह ? ओह, वह तो पागल हो जायगी !

घोंतन ने पाकेट से सिगरेट निकाल कर एक अपने मुँह में ठूँस लिया और एक सिताब को देकर बोला, पियो।

—सिगरेट ?

—हाँ, लो, धराओ।

उसने दियासलाई जलायी।

घोंतन ने फिर कहा, वह जो तुमने कहा कि उचित-अनुचित विचारने की बात क्या है ताऊ ? खूब बुद्धिमान के समान बात कही। जब पाँच आदमी कहते हैं, जब सन्देह है—

सिताब बोला, चुप रहो घोंतन । चुप रहो । अरे तू चुप रह ।

वह रास्ते पर उतर आया ।

रास्ते पर आते ही नोटन से भेंट होगयी । बड़े मालिक, छोटे मालिक—

—छोटे मालिक की बात मैं कुछ नहीं जानता । वह चलता रहा ।

—वह चला गया—

नोटन भी पीछे-पीछे चलते-चलते बात कह रहा था । महताब शराब पीकर खेत से चला गया है । कह गया है कि वह विरागी होगा । नोटन किसी प्रकार भी उसे लौटा नहीं सका ।

—जावे—जावे—जावे ।

—अरे, नशा खाकर—

—करे, मरे, नाश हो जाय, चूल्हे में जाय । जो कहना हो, बड़ी बहू से कह ।

—उन्होंने कुछ नहीं कहा ।

—तो छोटी बहू से कह ।

—उसने भी कहा, नहीं जानती ।

—मैं भी नहीं जानता । समझा । मैं भी नहीं जानता ।

घोंतन ने पुकारा—ठहरो । ठहरो ।

सिताब जैसे भाग जाना चाहता था ! कहाँ ? वह नहीं जानता । महताब उस समय खेत के बीच एक पेड़ के नीचे सो गया था । उसे नशा हो गयी है । उसके मकान की भी यही दशा है । बड़ी बहू उसी प्रकार औंधी होकर लेटी हुई है । छोटी बहू अपने घर में मानिक को लेकर चुप-

चाप बैठी हुई रो रही है। शरद के नीले आकाश में बादल के दो-एक टुकड़े तैर रहे हैं। पानी बरसने का कोई लक्षण नहीं है।

तीसरा पहर ढलने लगा। तो भी बड़ी बहू नहीं उठी, मानू बाहर नहीं निकली, महताब भी नहीं लौटा, सिताब भी जो बाहर निकला, तो अभी तक वापस नहीं आया। धीरे-धीरे सन्ध्या हो गयी। निर्मल नीले शरद के आकाश में छठ के चाँद की चाँदनी आँगन में घर की छत पर पेड़ की शाखाओं के पल्लवों पर स्वप्नलोक की शोभा बखेरने लगी। वह चाँदनी जैसे स्वप्न में देखे हुए रहस्य पुरी के प्रकाश के समान स्पष्ट किन्तु धूमिल, धूमिल किन्तु स्पष्ट है। आकाश में छठ का चाँद शाम से ही एकदम चौथाई आकाश पार कर उदय होता है। जैसे आकाश का नीलापन तालाब के नीचे से सिर उठा कर हँसता रहता है। चाँद के आस-पास तारे निकले हैं। असंख्य—संख्या नहीं, सीमा नहीं। एक तारा ताक-झाँक, दो तारे झिलमिल, तीन तारे मस्ती लायें, चार तारे पक्षी रोकें, पाँच तारे पंचदीप, छः तारे शंख बजे, सात तारे सात भाई, आठ तारे अरुन्धती; नौ तारे अन्धकार, दस तारे एकाकार। गिनते-गिनते दस तारे निकल रहे हैं। अगणित तारे निकल आते हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती। ऐसी ही दशा हो गयी, किन्तु मण्डलबाड़ी में कोई न उठा। दीपक नहीं जला, भोजन नहीं पका, बाहर खुला हुआ दरवाजा साँय-साँय करने लगा। उधर चण्डीमण्डप में छठ की सन्ध्या को देवी का आह्वान-अभिषेक हो गया, मृदंग ढोल, घण्टे और शहनाई बज कर बन्द हो गयी। सिताब वहाँ के काम समाप्त कर अब घर में आया। छठ की धूमिल चाँदनी में सुनसान मकान जैसे शोकातुर तुरन्त हुई विधवा के समान उदास शब्दहीन होकर घूँघट

खींच कर आ बैठा है। सिताब घर में आकर ठिठक गया। उसका सारा शरीर जलने लगा। वह तेज स्वर में बोल उठा—यह क्या है!

किसी ने उत्तर नहीं दिया।

सिताब ने और चिढ़ कर कहा, पूछता हूँ क्या मामला है? घर में दीपक नहीं है! चूल्हा नहीं जला। छठ के दिन! शुभ दिन में सब मर गये हैं क्या?

बड़ी बहू बरामदे में सोयी थी। सिताब अब उसे देख कर उसके पास जाकर खड़ा होगया। बोला—सुन नहीं पाती हो?

—कादू ने थके स्वर में कहा, अब मुझसे नहीं होता है। मुझे तुम माँ के यहाँ भेज दो।

—अच्छी बात है। भेज दूँगा। अच्छी तरह भेज दूँगा। यही होगा। कहकर उसने ऊपर की सीढ़ी की ओर पैर बढ़ाया।

—एक बात कहती हूँ! जब तक हूँ, तब तक कहनी ही पड़ेगी।

—क्या?

—महताब उसी दोपहर में बिना खाये चला गया है। वही फूटा सिर लेकर। अब तक नहीं लौटा।

—उसकी बात मैं नहीं जानता।

—तुम्हारी माँ के पेट का छोटा भाई है।

—मेरा शत्रु है। इसके अलावा वह निरा बच्चा नहीं है।

—जान-बूझ कर ऐसी बात कहते हो?

—कहता हूँ! कहता हूँ! कहता हूँ! वह मेरा शत्रु है, तुम मेरा

शत्रु हो और यह घर-द्वार मेरे लिये सब विष है। आग हैं। स्मशान हैं।

कह कर वह चला गया।

जाते-जाते लौट आया और बाहर का दरवाजा बन्द कर दन-दन चला गया।

मानदा अपने बन्द घर के दरवाजे के पास खड़ी होकर सब सुन रही थी। उसके दोनों नेत्र बाघिनी के समान क्रोध से जल रहे थे—और अपना सारा क्रोध उतारना चाहती थी, उसी बड़ी बहू पर। उसीने उसका भाग्य इस महताब के समान पागल के भाग्य से जोड़ दिया है। वह दरिद्र की कन्या है। उसी दरिद्रता का सुयोग लेकर उसके पिता के कुल की जाति की कन्या होने के कारण हितैषिणी बन गयी थी। और सम्पन्न अवस्था का लोभ दिखा कर महताब के साथ व्याह के सम्बन्ध में उसके बाप को राजी कर लिया था। पहले-पहल बड़ी बहू का स्नेह-यत्न महताब के साथ उसकी अन्तरंगता मानदा को अच्छी लगी। धीरे-धीरे आँख खुलने पर आज उसने दिव्य-दृष्टि पायी है। उसकी छाती में आग धधक रही है। वही आग आँखों से निकल कर सब कुछ जला कर खाक कर देना चाहती है। आज इस दुर्गा षष्ठी के दिन उसके कष्ट के धन, एकमात्र सन्तान को महताब ने उस बाँझ स्त्री को दान कर दिया! बाँझ स्त्री की दृष्टि की आकांक्षा बड़ी प्रबल होती है और उसका आकर्षण दुर्निवार। इसके लिये यदि—

वह और सोच न सकी। वह दौड़ कर मानिक से लिपट गयी और रोते-रोते कहने लगी, हे माँ षष्ठी! पगले मनुष्य ने मायाविनी की माया

में भूल कर कहा है—कि लड़का दान किया। मैं कहती हूँ माँ, मैं कहती हूँ, नहीं। हे माँ, तुम रक्षा करो।

उसने लड़के को छाती से लिपटा कर तकिये में मुँह छिपा लिया।

अपने घर में सिताब उत्तेजित मन से अँधेरे में छत की लकड़ी की ओर देखते हुए जागते हुए सोये के समान पड़ा था। उसके मन में अनेक हलचल, बहुत चिन्ता, बहुत कल्पना समायी हुई थी।

बाहर रास्ते पर चौकीदार ने आवाज दी—ओ—अरे—

कई मिनट बाद चौकीदार ने मकान के दरवाजे पर आकर पुकारा—बड़े मण्डल! बड़े मण्डल!

सिताब पुकारा—हाँ, जागता हूँ।

चौकीदार बोला, तुम्हारे छोटे मण्डल, उस खिड़की के तालाब के पेड़ के नीचे बैठे रो रहे हैं।

—रोने दे। तू जा।

फिर भी सिताब उठ कर बैठ गया।

ये बातें मानदा ने भी सुनीं। वह भी उठ बैठी।

सीढ़ी पार कर उतरते ही सुनाई पड़ा, एक दरवाजा खुल गया।

दरवाजा खोल कर बरामदे में आने पर सिताब ने देखा, बाहर का दरवाजा खुला है।

दरवाजा खोल कर बड़ी बहू बाहर गयी है। वह करती ही क्या? वह दुर्निवार प्राण का आकर्षण रोक न सकी। उसी घोर रात में अकेली स्त्री अँधेरे रास्ते से होकर तालाब के किनारे के पेड़ के नीचे गयी और महताब का हाथ पकड़ कर बोली, उठो।

महताब ने कहा, नहीं-नहीं। तुम्हें मेरी आवश्यकता नहीं है। तुम सब झूठ बोलती हो।

—नहीं—नहीं। कोई बात झूठी नहीं है। झूठ नहीं है, नहीं है, नहीं है। हुआ न ? अब उठो।

—मुझे पकड़ो। मैंने नशा खाया है। शराब पी है।

—सुना है। नोटन ने मुझसे कहा है।

—मुझे बकोगी नहीं ?

—तुम्हारा क्या दोष है ? सब मेरा अभाग्य है ! उठो, मेरा कन्धा पकड़ कर उठो।

महताब को उसने पकड़ कर उठाया। महताब उसके कन्धे पर भार देकर उठ खड़ा हुआ और बोला, जानती हो मैं विरागी होकर चला जाता ! किन्तु लौट आया—

बड़ी बहू अँधेरे में थोड़ा हँसी।

पागल ने कहा, तुम्हारे लिये लौट आया।

दूसरी ओर से अँधेरे में सिताब बोल उठा, तुम और मेरे घर में न घुसो, मैं मना करता हूँ। अगर जगह न हो, तो पेड़ की डाली से गले में रस्सी बाँध कर झूल कर मर जा।

बड़ी बहू थर-थर काँप उठी और दूसरे ही क्षण ज्ञान खोकर गिर पड़ी।

अष्टम परिच्छेद

दूसरे दिन सप्तमी के सबेरे।

सुख की रात सोने का नूपुर बजा कर चंचला विलासिनी की तरह हठात् चली जाती है। किस प्रकार, किस ओर चली गयी, समझ नहीं पड़ता। चली जाने पर तन्द्रा टूटती है। दुःख की रात भी ठहरती नहीं, अत्यन्त दुःख से असहनीय हो जाती है, जान पड़ता है, रात का अन्त नहीं, पार नहीं, किन्तु वह भी एक समय बीत जाती है। रात बीत जाती है। सबेरा होता है। मण्डलबाड़ी की वह दुःख की छठ की रात भी बीत गयी। बड़ी बहू अचेत होकर गिर पड़ी थी। आज सबेरे होश आया है। 'घर में न आना', कहने पर भी वैसी अवस्था में सिताब उसे बिना लाये न रह सका। वह रास्ते में पड़ी रह कर मर जाने देने वाला अमानुष नहीं है। रास्ते में पड़ी रह कर मरने की बात नहीं है। महताब के रहते हुए बड़ी बहू रास्ते में पड़ कर कभी नहीं मरेगी। वह महताब को कादू को उठा लाने नहीं देगा। कभी नहीं। एक दिन बड़ी साध से घर लाया था। अपने को भाग्यवान समझा था।

सबेरे चाँपाडाँगा की बहू ने आँखें खोल कर देखीं। सिरहाने सिताब खड़ा था, बैठे थे राखाल और त्रिपिन मण्डल। ज्ञान होते न देख कर राखाल और विपिन को सिताब ने ही बुलाया था। राखाल अच्छा हाथ देखता है। वह मृदंग बजाने में जैसा निपुण है, नाड़ी देखने में भी वैसा

ही कुशल। राखाल उसकी नाड़ी देख रहा था, उसने चाँपाडाँगा की बहू को ज्ञान होता देख हाथ हटा लिया। बोला, ज्ञान हो गया, भय नहीं। क्यों, सब कुछ पहचान पाती हो ? याद पड़ रहा है ?

बड़ी बहू ने एक लम्बी साँस छोड़ कर सिर का घूँघट खींच दिया।

राखाल बोला—यह देखो। किन्तु नाड़ी बड़ी दुर्बल है। जैसे कई दिनों से खाया-पिया नहीं है। समझते हो न ? अच्छी तरह भोजन दो। थोड़ा गरम दूध पिलाओ।

घूँघट के नीचे से बड़ी बहू ने धीमे स्वर में कहा—बड़े मण्डल से मेरा एक निवेदन है।

—मुझसे ? विपिन मण्डल ऐसी बात सुनने को तैयार न था।

—हाँ। आप से ही।

—कहो। क्या कहती हो, कहो !

—एक गाड़ी बुलाकर मुझे अपनी माँ के घर भेज दीजिये।

—क्यों बहू ? इस पूजा के दिन—

सिताब अब अपने को रोक न सका। वह बोल उठा—जाना, जाना, इसके लिये बड़े मण्डल को क्यों कष्ट दोगी ? मैं ही भेज दूँगा। हाँ भेज दूँगा। जरूर भेज दूँगा।

बड़ी बहू ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। बोली, और आप पाँच जन मिलकर महताब को उसकी सम्पत्ति का भाग समझा दें। वह पागल है। सम्पत्ति जायदाद पाने पर शायद समझे, घर रहे, नहीं तो घर पर नहीं रहेगा। विरागी हो जायगा।

सिताब बोला, होगा, वह भी होगा। इसी पूजा के भीतर ही केश-चीर कर बाँट दूँगा। पंचायत बुलायी है।

विपिन बोला, आह! सिताब! छिः, क्या पागल हो गये?

—हाँ पागल हो गया हूँ। हो गया हूँ। आप सब बाँट दीजिये। नहीं तो मुझे गले में रस्सी लगानी पड़ेगी। कहते-कहते घर से बाहर चला गया।

राखाल और विपिन भी उसके पीछे-पीछे चले गये।

बरामदे में उस समय महताब लड़खड़ाते-लड़खड़ाते खड़ा हुआ है। पिछले दिन की सिर की चोट और दिन भर के अनाचार से उसे ज्वर हो गया है। ऐसा शरीर लेकर कब बड़ी बहू को ज्ञान होगा—इसी आशा से बरामदे में बैठा था। वहीं बैठे-बैठे घर की सब बातें सुन रहा था।

क्रोध भरे उत्साह से वह खड़ा हुआ है।

सिताब और विपिन के बाहर से आते ही वह बोला, हाँ। मेरी सम्पत्ति मुझे समझा दो। भाग कर दो।

सिताब उसकी ओर कठोर दृष्टि से देखता रहा। विपिन ने वह दृष्टि देख कर शंकित हो सिताब को पुकारा—सिताब! बाबा!

सिताब ने महताब से कहा—बाँट दूँगा। सिताब के न रहने पर प्रताप मण्डल की जमीन-जायदाद कर्ज में नीलाम हो जाती, भीख माँग कर खाना पड़ता। जो हो, अपना कर्तव्य मैंने किया है। तू अपना उचित भाग पायेगा।

—घाँतन घोष की सलाह से कितने रुपयों के गहने बन्धक रखे गये हैं, उन सबका हिसाब मुझे देना होगा।

—उन रुपयों में से एक पैसा भी प्रताप-मण्डल की सम्पत्ति का नहीं है। वे मेरी स्त्री के गहने बेचने के रुपये हैं। गाँव की पंचायत जानती है—ससुर ने ब्याह के समय पाँच सौ रुपयों के गहने दिये थे। उस गहनों को बेच कर मैंने कर्ज अदा किया है। उसीको मैंने बढ़ाया है। वह मेरे ब्याह का दहेज है। वह मेरा निजी है।

महताब बोला, बड़ी बहू वे रुपये तुम्हें नहीं देगी।

महताब ! चिल्ला उठा सिताब।—तू बड़ी बहू का नाम जबान पर न ला। मैं तुझे मना करता हूँ। मैं तुझे मना करता हूँ।

वह तेजी से मकान से बाहर चला गया। उसके साथ विपिन भी चला गया। केवल राखाल हतभंग होकर खड़ा-खड़ा सब देख रहा था।

महताब सिताब की अन्तिम बात से थोड़ा दब गया था क्यों बड़ी बहू का नाम जबान पर नहीं लायेगा ? क्यों ? हठात् वही प्रश्न कर वह आँगन में उतरा—क्यों ? सुनूँ क्यों ? क्यों मैं बड़ी बहू का नाम जबान पर नहीं ला सकता ?

घर से निकल कर मानदा ने उसका हाथ पकड़ा—नहीं, नहीं जा सकते।

ऊपर से बड़ी बहू की आवाज सुनाई पड़ी—महताब, जाओ मत। घर में जाकर सो जाओ। मेरी शपथ, मेरा मरा मुख देखोगे।

महताब खड़ा होगया।

अब राखाल बोला, छोटी बहू, चाँपाडाँगा की बहू को थोड़ा दूध गर्म कर दे दो।

यह बात छोटी बहू के कानों में नहीं गयी। वह महताब के पैरों के

पास घुटने टेक कर पागल के समान बोली, मैं सिर फोड़ कर मर जाऊँगी।

राखाल धीरे-धीरे बाहर चला गया।

बाहर आकर उसने देखा, सिताब पत्र लिख रहा है।

नोटन खड़ा है। पत्र समाप्त कर उसने पढ़ लिया—

कल्याणवरेषु,

श्री मणिलाल पाल इस पत्र को आवश्यक समझना, तुम पत्र पढ़ कर इस आदमी के साथ चले आना। यहाँ तुम्हारी बहिन किसी प्रकार रहना नहीं चाहती। हम दोनों भाई अलग हो रहे हैं। इस समय चाँपाडाँगा की बहू को यहाँ से न ले जाने पर किसी प्रकार भी नहीं चलेगा। तुम पत्र पढ़ते ही चले आना। नहीं तो चाँपाडाँगा की बहू को अकेली भेजना पड़ेगा। उस समय मुझे दोष देने से नहीं चलेगा। इति।

सिताबचन्द्र पाल

पढ़ कर पत्र मोड़ा और नोटन के हाथ में देकर बोला, चला जा, कल मणि को अपने साथ ले आना। खबरदार, कोई बात नहीं प्रकट करेगा।

नोटन ने पत्र लेने के लिये हाथ बढ़ाया।

राखाल बोला, सिताब!

—गड़बड़ न कर राखाल। रोक मत। घर जा।

—अरे! चाँपाडाँगा की बहू को—

—राखाल तू घर जा।

राखाल रुक गया। भय पाया।

सिताब ने पत्र नोटन के हाथ में देकर कहा—तू सब कह देगा। जो कुछ हुआ है, मुँह से कह देगा। समझा?

इस बार राखाल चला गया।

सिताब फिर बोला—जाते समय घोंतन से—घोंतन से कहना, मैंने बुलाया है। मैंने बुलाया है।

नोटन तो भी चुपचाप खड़ा रहा।

सिताब ने कहा, क्यों ? खड़ा क्यों है ?

उधर चण्डीमण्डप में शहनाई, मृदंग, ढोल बज उठी। सप्तमी की पूजा का घड़ा लाने का समय होगया है।

सिताब फिर बोला, नोटन।

अब नोटन बोला, यह सुनो, पूजा का मृदंग बजता है। घड़ा आ रहा है मण्डल। उसने सब समझ लिया है।

सिताब ने कड़े स्वर में कहा, नोटन !

नोटन पुराना आदमी है। इस घर के दुःख-सुख के साथ उसका जीवन सैकड़ों चक्करों, हजारों बन्धनों में बँध गया है उसने कहा, जो करना हो, पूजा के बाद करना। मण्डल, आज सप्तमी की पूजा का दिन है। देवी का घड़ा आयेगा। साथ-साथ लक्ष्मी पधारेंगी, आज घर फोड़ने का धुआँ न उठाओ। बेसाज का बाजा न बजाओ।

सिताब उसके हाथ का पत्र लेने को तैयार हो गया। बोला, बतला तू जायगा कि नहीं ?

नोटन ने अपना हाथ हटा कर कहा, जाऊँगा। तुम मालिक हो। मुझे बात माननी पड़ेगी। मैं जा रहा हूँ। किन्तु खेतों में धान सूख रहा है। मिट्टी सों-सों कर रही है। जल नहीं है। जल नहीं होगा। आकाश से पानी नहीं बरसेगा। मैंने तुमसे कह दिया। जो चाहो, करो।

वह चला गया !

रास्ते में एक मकान के दरवाजे पर खड़ा होकर उस समय बहुवल्लभ बाउल एकतारा और बाँया बजाकर गा रहा था—

कमल मुख सूख गया है
आओ माँ आओ पोंछ दूँ,
माँ की गोद में सो जाओ माँ,
शीतलपाटी बिछाय दूँ ॥
बोल-बोल माँ कान-कान में
क्या दुःख पाया कोमल प्राण में ?
श्मशान-ताप से शरीर जलता,
आँचल वायु से मिटा दूँ ।
आओ माँ मुख पोंछ दूँ ॥

आगमन के गाने के वात्सल्य रसने अनावृष्टि से सूखे हुए शरद के आकाश की नीलिमा को करुणा से भर दिया है ।

बड़ी बहू के कानों में उस गाने का स्वर उड़ कर पड़ रहा है । यह गाना जैसे दूर चाँपाडाँगा में बैठ कर उसी की माँ गा रही है । वह तो जायगी । इस मकान में उसकी मियाद खतम हो गयी है । यह बात वह जानती है । उसके चित्त की सब माया, सारी ममता कट गयी है । उसके स्वामी की भी कट गयी है । वह प्रेम माया नदी के समान सूख कर मरुभूमि बन गया है । उसी मरुभूमि की छाती पर सिताब के हृदय का रूप फूट निकला है । वह चाहता है, नया घर, नया परिवार, नयी—

उसके मुँह पर हँसी दौड़ गयी । उसके प्रति यह निकृष्ट सन्देह

एकदम झूठा है। इतने समय तक तो इसी तरह चला आता था। इसी प्रकार से तो उसने महताब से स्नेह किया है, इस प्रकार तो महताब ने भी लड़कपन किया है! कहाँ, इतने दिनों तक तो सन्देह नहीं हुआ। हठात् आज क्यों हुआ? वही उसकी नयी छिपी हुई साध ने आँखों पर परदा डाल कर संसार को काला दिखा कर जोर दे रही है।

ठीक इसी समय किसी ने पुकारा, बहू!

चाँपाडाँगा की बहू चौंक पड़ी। वह प्रश्न भरी हुइ दृष्टि से सीढ़ी की ओर देखने लगी।

सीढ़ी के नीचे से आगन्तुक बोला, बहू, मैं राखाल हूँ।

चाँपाडाँगा की बहू धीरे-धीरे उठ बैठी।

राखाल ऊपर आ गया। वह अकेला नहीं हैं, उसके साथ है एक आठ-नौ वर्ष की लड़की। उसके हाथ में एक कटोरा दूध है। राखाल बोला, तुम्हारे लिये दूध लाया हूँ, बहू। तुम पियो। खेदी, काकी को दूध का कटोरा दे दो।

चाँपाडाँगा की बहू ने सिर का घूंघट आगे खींच कर कहा, पूजा का घड़ा आ रहा है। मुझे लक्ष्मी बैठाना होगा। इसके पहले तो न पी सकूँगी।

—बहू, ऐसे शरीर पर सिर में चक्कर आनेपर गिर पड़ोगी

—नहीं। खूब कर सकूँगी। मैं कर सकूँगी।

वह धीरे-धीरे दीवार पकड़ कर खड़ी हो गयी। बोली, तू रख दे खेदी। मैं लक्ष्मी बैठा कर पिऊँगी।

राखाल बोला, खेदी, तू साथ जा। समझी, तू साथ जा।

उधर मृदंग, ढोल, घण्टा, शहनाई का शब्द जोर हो उठा। चण्डी-मण्डप में घड़ा आ गया। शंख बजी, उलुध्वनि हुई।

इस बार चण्डीमण्डप में पूजा का सब आयोजन हुआ है ; किन्तु उसमें प्राण नहीं है, समारोह जम नहीं रहा है। सब जैसे उदासीन और चिंतित हैं। आकाश में जल नहीं है, किसानों की आँखें दूर दिगन्त की ओर लगी हैं, चित्त उद्वेग से कातर हैं। इसके अलावा सिताब के घर की कलह ने एक दुखदायी प्रभाव डाल दिया है। केवल लड़के दौड़ा-दौड़ी कर रहे हैं। उनमें मानिक भी है। गोविन्द उसे ले आया है। नंगे बदन है। किसी ने एक जामा भी नहीं पहना दिया है। वह रंगीन बाँसुरी लेकर ही खुश है। उसी को बजा रहा है—पू-पू! पू-पू! बजा रहा है और घूम-फिर रहा है।

मण्डल लोग बैठे हैं, तम्बाकू पी रहे हैं, किन्तु महफिल ऊँघ गयी है। कोई बड़ी एक बात नहीं कहता। केवल टिकुरी चाची चिल्ला रही है।

—अविश्वास, अनाचार, अविचार—इससे बड़ा पाप क्या होगा? क्या इससे धर्म रहता है या देवता प्रसन्न होता है। मण्डल लोग क्या सब धर्मज्ञान चबा कर खा गये हैं? पूजा क्यों की जाती है?

विपिन मण्डल सीधा होकर बैठ गया। बोला, टिकुरी की बहू, तुम ऐसे क्यों चिल्लाती हो? ऐसे क्यों चिल्लाती हो?

—चिल्लाऊँगी नहीं? कहती हूँ कि मण्डल लोगों ने आँखों-कानों में तेल डाल लिया है। सिताब के यहाँ से अभी तक पूजा नहीं आयी। क्या इधर ध्यान है?

पाँच आने का भागीदार सिताब उस समय चण्डीमण्डप के सामने रास्ते पर घोंतन से बातें कर रहा था।

विपिन मण्डल विस्मित और व्यस्त हो उठा। प्रतिवर्ष पूजा के समय

चाँपाडाँगा की बहू छठ की सन्ध्या से दशमी तक चण्डीमण्डप में सब समय हाजिर रह कर सब अनुष्ठान पूर्णतः सफल कर देती है। सिताब की भी दृष्टि इस पर खूब रहती है। हिस्से के काम में वह सब हिस्सेदारों की पूजा समझ लेता है, पूरा-पूरा तौल-माप कर लेता है। इक्कीस सेर आतप का नैवेद्य चढ़ाता है। सिताब चण्डीमण्डप में माप का सेर हाथ में लेकर बैठा रहता है। सबसे पहले चाँपाडाँगा की बहू अपने तिहाई भाग का सात सेर चावल, सवा पाँच गण्डे केले के भाग के सात केले, सवा पाँच पाव चीनी की सात छटाँक चीनी, उसके साथ पूजा की फुटकर चीजें एक डाली में सजा कर रख देती है।

सिताब सब देख-सुन कर चिल्ल-पों करता है—कहाँ हैं सब, कहाँ हैं! सब भागीदार सो रहे हैं क्या?

इस बार उनके घर में एक आकस्मिक कलह उठ खड़ी हुई है। फिर भी पूजा नहीं आयगी—इसकी कल्पना भी न कर सका। चाँपाडाँगा की बहू की अवस्था भी विपिन खुद देख आया है; सिताब ने भी बातों में बहुत कुछ कहा है। आज उसके बाहर निकलने की बात नहीं है, और उसमें सामर्थ्य भी नहीं है। किन्तु सिताब है, छोटी बहू है।

विपिन उठ कर खड़ा हो गया। पुकारा—सिताब!

रास्ते पर से सिताब ने उत्तर दिया—आता हूँ।

—आता हूँ नहीं। घर जाओ। पूजा की सामग्री नहीं आयी। भेज दो।

टिकुरी काकी ने चिल्ला कर कहा, अपनी छोटी बहू को भेज दो, समझे बेटा! बड़ी बहू को न भेजना।

ठीक इसी समय चण्डीमण्डप के पीछे की ओर से प्रवेश किया पुटी और बड़ी बहू ने। पुटी ने स्नान किया है, बड़ी बहू ने भी स्नान किया है। पुटी के हाथ में पूजा की सामग्री की डाली है। उसने आकर डाली रख दी।

पुटी को उसकी माँ ने भेज दिया है। उसने भेजा है अफवाह की बात कहने के लिये। कहा है, लजाने से काम नहीं चलेगा। कह देना। कादू मेरे पेट की लड़की से भी अधिक प्यारी है किन्तु कादू की अवस्था देखकर पुटी वह बात न कह सकी। वह बोली, तुम्हारे घर की पूजा देखने आयी हूँ दीदी! कादू पूजा की सामग्री की डाली देकर उसे साथ लायी है।

बड़ी बहू को देखकर सब अवाक हो गये। इतनी बड़ी घटना गाँव में नहीं छिप सकती, सिताब ने स्वयं चिल्ला दिया है। इसके बाद भी बड़ी बहू चण्डीमण्डप में आकर सबके सामने खड़ी होगी, इसको कल्पना भी किसी ने नहीं की थी।

पुटी ने पूजा की डाली रख दी। बड़ी बहू ने गले में आँचल देकर प्रणाम किया।

सारे चण्डीमण्डप में कुछ समय के लिये ऐसा हो गया कि सुई गिरने पर सुनाई पड़े।

प्रणाम करने के बाद बड़ी बहू ने खड़ी होकर सन्नाटा तोड़ा—बोली, यह हमारी पूजा की सामग्री है। देख ले, कौन देखता है?

अब टिकुरी-काकी का मुँह खुला। बोली, मैं देख लेती हूँ—! डाली की ओर देख कर फिर पुटी की ओर देखकर पूछा—चाँपाडाँगा की बहू को छुया है पुटी? बड़ी बहू खड़ी होकर बोली—मण्डलबाड़ी

का भण्डार अब भी मेरे हाथ में है टिकुरी काकी। वहाँ लक्ष्मी बैठाकर अपने हाथ से सामग्री सजा कर मैं ही ला रही थी। पुटी हठात् आ गयी। उठा लो। तुम्हारे 'नहीं' बोलने से नहीं चलेगा। अगर 'नहीं' कहना होगा तो देवी कहेंगी। बैठकर स्वयं सब सामग्री देवी के सामने रख कर बोली, अगर 'नहीं' बोलना हो तो तुम बोलना माँ। और किसी की बात मैं नहीं सुनूँगी। अगर मेरे हाथ की पूजा अशुद्ध हो तो मेरे सिर पर वज्र गिरा दो, नहीं तो मुझे साँप काट ले। अथवा अपने हाथ का खड्ग मेरी छाती में मार दो। सब सन्न हो गये। केवल विपिन चिल्ला उठा—बहू! बहू! बहू!

बड़ी बहू ने किसी ओर न देखकर पुटी से कहा, चलो पुटी। वे दोनों चली गयीं।

टिकुरी काकी बोली—गंगाजल का घड़ा कहाँ है, ओ इन्देश की बहू।

सिताब रास्ते से ऊपर आकर विपिन से बोला, आज सन्ध्या समय हमारा बँटवारा कर दीजिये।

—आज? सिताब—

—नहीं ताऊ। आज ही! यह बदनामी मैं नहीं सहन कर पाता हूँ।

वैसा ही हुआ।

पंचायत ने बैठकर सिताब की सम्पत्ति बाँट दी। सिताब का हिसाब बड़ा साफ था। कागज-पत्र में गलती नहीं थी। और खेतों में कौन खेत कैसा है, यह भी मण्डलों से छिपा नहीं था। जमीन तालाब के बाँटने का काम थोड़े ही समय में समाप्त हो गया।

अन्तिम दिन बर्तन-वर्तन बँटा। और घर के आँगन को रस्सी से नाप कर मण्डलों ने भाग कर दिया। पंचायतवाले घर के आँगन में खड़े थे। सिताब-महताब दोनों दो ओर खड़े हो गये। मानिक पू-पू-पू बाँसुरी बजाता फिरता है। दोनों बहुयें घरों में हैं।

भाग के सम्बन्ध में सिताब ने कुछ नहीं कहा। वह प्रारम्भ से ही कहता था, पहले वह चुन ले। अन्तमें मैंने ठग लिया है, यह नहीं सुनूँगा।

आँगन में रस्सी पकड़ी थी एक ओर रामकृष्ण और दूसरी ओर एक दूसरे आदमी ने। विपिन बोला,—अब बतलाये कौन किस ओर लेगा? इधर के घर अच्छे हैं, इसी तरह उधर रसोई घर रख लेना होगा। सिताब—?

महताब खड़ा होकर बोला—मैं अच्छा घर लूँगा।

सिताब हँस कर बोला—यही सही। मैंने पुराना घर ले लिया।

महताब साथ ही साथ नये घर के बरामदे में जाकर बोला, बस।

सिताब बोला—आप लोग थोड़ी देर तक ठहरें। मैंने कच्ची ईंट और राज-मजदूर सब ठीक कर रखा है। मिट्टी की दीवार बनाने में देर होगी। आज ही ईंट की जुड़ाई होगी। आओ! अरे! सुनते हो!

कई मजदूर आ गये। सिताब बोला, उसका मुँह मैं फिर नहीं देखूँगा।

महताब हठात् आकर बोला, जो गहने बन्धक रखे गये हैं, उसका हिसाब कहाँ है? बिपिन ताऊ!

सिताब बोला, वह तो मेरे व्याह का दहेज है।

—वह तो बड़ी बहू का गहना है! बड़ी बहू तो लेगी नहीं।

—वह मैं समझूँगा। उसके लिये तुम्हें वकालत नहीं करनी पड़ेगी।

—जरूर करनी पड़ेगी।

विपिन बोला, महताब तुम झूठ-मूठ मत चिल्लाओ।

ठीक इसी समय बड़ी बहू के भाई मणिलाल ने घर में प्रवेश किया। महताब चिल्ला कर बोला, वही, वही बड़ी बहू का भाई आया है। नोटन बुलाने गया था।

मणिलाल ने आकर सिताब को प्रणाम किया। वह अवस्था में बड़ी बहू से तीन वर्ष छोटा है। खूब स्वस्थ है। किसान का लड़का। प्रणाम कर बोला—बहनोई साहब, नोटन ने यह सब क्या कहा है?

—तुम्हारी बहिन को लेकर मेरा परिवार में रहना असम्भव है, मणिलाल!

विपिन ने आकर हाथ पकड़ कर कहा—सिताब यह काम तुम हठात् न करो। सिताब!

—नहीं। वह अब नहीं होगा ताऊ। मणिलाल तुम अपनी बहिन को ले जाओ। मैंने गाड़ी ठीक कर रखी है।

महताब ने गर्दन हिलाकर बड़े ज्ञानी के समान उल्लासपूर्वक ही कहा—मैंने भी ठीक कर रखी है। मैंने भी गाड़ी ठीक कर रखी है। हाँ मैं भी महताब हूँ! हाँ!

वह बड़े अहंकार के साथ, जिसको कहते हैं दर्प भरा कदम, उसी कदम से मजदूरों द्वारा तैयार दीवार के चारों ओर घूम आया। जैसे लाठी का खिलाड़ी पैंतरा भाँज रहा हो, उसी पैंतरा भाँजते समय उसने देखा कि मानदा न जाने कब घर से निकल कर एक भाग बटोर रही है। महताब ठिठक कर खड़ा हो गया। इसके बाद बोला—नहीं, नहीं, नहीं।

मानदा रुक गयी। इसके बाद घूँघट खींच कर धीमे स्वर में बोली—हमारा कौन सा है?

—वही। महताब ने वही लिया है। विपिन बोला।

—तो फिर?

महताब ने पास जाकर कहा, मेरा भाग तुझे छूना नहीं पड़ेगा। तू अपने कपड़े-लत्ते बटोर ले। हाँ, मैंने गाड़ी ठीक कर रखी है। मैं तेरे साथ घर में नहीं रहूँगा। हाँ!

मानदा के हाथ से कई बर्तन गिर पड़े।

सब चौंक पड़े। विपिन बोला, अरे मूर्ख, आधा पागल, कहता क्या है? पागल हो गया क्या?

—अनुचित क्या कहा? पागल क्यों होऊँगा?

—तो यह सब क्या कहता है? अपनी स्त्री को क्यों नहीं रखेगा?

—वह क्यों नहीं रखेगा? वह क्यों भेजेगा?

सब अवाक हो गये।

महताब बोला, उसको मैं भेज दूँगा। भेज कर उसी गाड़ी से बड़ी बहू को ले आऊँगा। नहीं तो शिवकृष्ण-रामकृष्ण की टिकुरी काकी और इन्देश की बहू की तरह तुम लोग भाग कर दो। बड़ी बहू के साथ उसकी नहीं बनती, छोटी बहू से मेरी नहीं बनती। छोटी बहू उसके भाग में जाय, और बड़ी बहू मेरे घर रहेगी।

विपिन बोला, छिः छिः छिः! महताब तू चुप रह। और बदनामी न बढ़ा। न बढ़ा।

महताब चिल्ला उठा—ना-ना-ना, बड़ी बहू को मैं जाने नहीं दूँगा। बिना बड़ी बहू के मेरा नहीं चलेगा।

सिताब एक टुकड़ा टूटी ईंट लेकर जोर से झपटा।

महताब के ऊपर नहीं, झपटा बड़ी बहू के ऊपर। बड़ी बहू कब आकर सीढ़ी के दरवाजे पर खड़ी थी, किसी ने ध्यान नहीं दिया। सिताब ने देख लिया था। कच्ची ईंट का टुकड़ा बड़ी बहू के पास की दीवार में लग कर चूर-चूर हो गया। विपिन ने सिताब का हाथ पकड़ कर खींचते हुए कहा, चलो, बाहर चलो। वह उसे खींच ले गया। खलिहान घर में आकर सिताब बोला, मैं नया संसार बसाऊँगा। मैं फिर व्याह करूँगा।

—करना। मैं इसमें आपत्ति नहीं करूँगा।

—घोंतन की बहिन पुटी के सम्बन्ध में मैंने घोंतन से कहा है।

नवम परिच्छेद

नवमी की रात। मण्डलबाड़ी की सम्पत्ति, घर-द्वार सबका आज दिन में बँटवारा हो गया है।

मकान के बाहर सिरकी लगी हुई बैलगाड़ी सजी हुई है, सबेरे ही बड़ी बहू चाँपाडाँगा जायगी—शायद सदा के लिये जायगी।

मकान के आँगन में कमर तक कच्ची ईंटों की दीवार बन चुकी है। भार बँधा हुआ है। कल बाकी खतम हो जायगी।

सिताब ने सबके सामने घोषणा की है कि उसे सन्तान चाहिये। वह फिर व्याह करेगा। अगर घोंतन पुटी के साथ उसका व्याह करे तो वह आनन्दपूर्वक व्याह कर लेगा। तो भी जैसे उसकी छाती में आग जल

रही है। कादम्बिनी पर एक भयंकर क्रोध उसकी छाती में आग के समान जल रहा है।

एक पहर रात बीत चुकी है, चाँदनी फैल रही है। आकाश में बादल दिखाई दे रहे हैं।

सोने के कमरे में बड़ी बहू सोयी थी। सिताब भी सोया था, किन्तु उसे नींद नहीं आयी। बड़ी बहू को विदा कर दूगाँ, विदा कर दूगाँ कह कर मतवाला हो गया था। कल बड़ी बहू चली जायगी, आज रातमें उसका हृदय कैसा अधीर और अस्थिर हो उठा है! वह जैसे क्रोध, क्षोभ, ज्वाला, वेदना, दुःख आदि सभी का सम्मिश्रण है! जैसे ज्वालामुखी के गर्भ से खौलते हुए बहुत सी धातुओं का आलोड़न हो। वह हठात् उठ बैठा, कितने दिनों से तुम मेरी आँखों में धूल झोंकती आती हो, बतला सकती हो? कितने दिनों से?

बड़ी बहू ने उत्तर नहीं दिया। सिताब घर में एक बार घूम कर उसके पास आकर खड़ा होगया। बोला, तुमने क्यों इस प्रकार मेरे मुँह में चूना-स्याही लगाया? कह कर वह तेजी के साथ खिड़की के पास जाकर खड़ा होगया। फिर पास में आकर बोला, तुम विष देकर मुझे मार डालती, पीछे जैसी इच्छा होती, कर सकती थी। इसके बाद ही बोली, गहने, वही कई गहने देकर तुमने सम्पत्ति बचा कर मुझे ठग लिया। उसका तुम्हें एक पैसा भी न दूँगा।

वह जाकर बिछौने पर लोट गया। साथ ही साथ उठकर उसके पास जा बैठा और बोला, मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा। तुम्हारा गला घोंट-कर मार डालूँगा।

कहते-कहते वह अस्थिर होकर खड़ा हो गया। फिर एक चक्कर लगा कर बोला, तुम जबाव भी न दोगी ! चाँपाडाँगा की बहू !

अब चाँपाडाँगा की बहू बोली — कहो।

—मेरा पैर छूकर कहो।

—क्या ?

—जो देखा है, वह भूल है। जो समझा है, वह भूल है। मेरे पैर छूकर कहो ? उठो।

उसने बड़ी बहू का हाथ पकड़ कर जोर से खींच लिया और अपना पैर बढ़ा कर कहा, मेरे पैर छूकर कहो !

बड़ी बहू ने उसके मुँह की ओर स्थिर दृष्टि से देख कर कहा, नहीं। इसके बाद उठ कर धीरे-धीरे बाहर चली गयी। बाहर आकर बरामदे में लेट गयी।

सामने पृथ्वी पर चाँदनी फैली हुई है। आकाश में चाँदनी पेड़-पल्लवों पर चाँदनी। किन्तु उस पर जैसे एक छाया पड़ गयी है। पूर्व की ओर दिगन्त में बादल छाये हैं। चाँदनी से प्रकाशमान पृथ्वी के एक कोने में उसीकी छाया पड़ी हुई है। बीच-बीच में बिजली चमक रही है। वह चमक स्वल्प और अस्पष्ट है। संकेत है, स्पष्ट प्रकाश नहीं।

लेटे-लेटे उसको कितनी बातें याद पड़ीं। एक बार इच्छा हुई सिताब के पैरों पर गिर कर उनसे लिपट कर कहे, तुम वास्तव में अन्धे हो, तुम वास्तव में अन्धे हो। तुम्हारा पैर पकड़ कर मैं यही बात कहती हूँ और अन्तिम प्रार्थना करती हूँ कि तुम मुझे मार ही डालो। मार ही डालो। मैं कौन-सा मुँह लेकर चाँपाडाँगा जाऊँगी ?

सिताब घर में टहल रहा था। वह चिन्ता से अधीर अस्थिर है।

चाँपाडाँगा की बहू पर भयंकर क्रोध जैसे स्वच्छन्द प्रवाह से बाहर निकलने का मार्ग नहीं पा रहा था! न जाने कहाँ बाधा पाने से लौटकर अपनी ही छाती में धक्का मार रहा था। किसी प्रकार भी वह अपराधों के पहाड़ को उसके सिर पर रखकर छोड़ना सम्भव नहीं हो रहा था। बड़ी बहू औंधी लेटकर मुँह कुचलकर पीसी नहीं जा रही थी। उसने जल के लोटे से जल लेकर सिर धो डाला। इसके बाद लेट गया।

सर्वत्र सन्नाटा। रात जैसे सन-सन कर चली जा रही है। असंख्य करोड़ कीड़े-मकोड़े लगातार एक तान बजाते जा रहे हैं। बाहर एक बार एक उल्लू बोल उठा। सिताब चौंक पड़ा, कान लगाकर कुछ सुनने की चेष्टा की। बड़ी बहू के साँस लेने का शब्द कहाँ सुनाई पड़ता है; उसने सावधानी से बिछौना छोड़कर बरामदे की ओर के दरवाजे के पास खड़ा होकर झाँककर देखा।

आकाश की चाँदनी की छाया पड़ रही है। बरामदें के भीतर उसकी रेलिंग की कुछ दूरी पर चाँदनी फैली है। वहाँ रेलिंग की छाया पड़ रही है। भीतर धूमिल अँधेरा-उजेला है, उसी में सफेद कपड़े से ढँकी हुई बड़ी बहू शान्त होकर पड़ी हुई है।

वह फिर आकर बिछौने पर लेट गया। फिर उठा और एक तकिया लेकर खिड़की के पास रखकर लेट गया। बाहर दिगन्त में बादल घने हो रहे हैं और धीरे-धीरे हवा चल रही है। उसी हवा में उसे तन्द्रा आ गयी।

अकस्मात् उसकी तन्द्रा टूट गयी। वह जैसे पैर में कुछ स्पर्श अनुभव

कर रहा है ! देखा, पैरों के पास से चाँपाडाँगा की बहू सीढ़ी की ओर मुँह फेर कर चली जा रही है। बरामदे का दरवाजा ठीक पैर के पास ही है। बड़ी बहू बरामदे से उठकर आयी है। वह सीढ़ी से उतर रही है। सिताब चंचल नहीं हुआ। वह स्थिर होकर सोते हुए के समान लेटा रहा। बड़ी बहू सीधे चली गयी। वह कान लगाकर सुनने लगा। सीढ़ी का दरवाजा खुल गया। अब वह उठा, घर के एक कोने में कई वस्तुओं के बीच एक दाव पड़ा था उसे लेकर वह नीचे चला गया।

बड़ी बहू महताब के घर की ओर जा रही है।

महताब बाहरी बरामदे में पड़ा है। सोने के पहले मानदा से बोला है, हुक्म दिया है—नहीं, नहीं, मेरा घर में काम नहीं है, ले तू घर ले, द्वार ले, सम्पत्ति ले, मुझे नहीं चाहिये। रात भर बाहर रहता हूँ। कल चला जाऊँगा। निश्चय चला जाऊँगा।

बड़ी बहू सचमुच महताब के घर की ओर गयी। आँगन के बीच में दीवार बन गयी है। प्रायः दो हाथ ऊँची बनी है। बड़ी बहू सावधानी से दीवार पार होकर बरामदे की ओर खड़ी हो गयी। महताब बरामदे में ही सोया है। बरामदे में खुले हुए दरवाजे के भीतर लालटेन से कुछ प्रकाशित घर में मानिक को लेकर मानदा सोयी है, दिखाई दे रहा है। बड़ी बहू बरामदे पर चढ़ी। महताब के सिरहाने एक छोटी-सी पोटली रखकर तेजी के साथ बरामदे की उस ओर की खिड़की से बाहर निकल गयी।

महताब को अच्छी तरह नींद नहीं लगी थी। बड़ी बहू के दरवाजा खोलने के शब्द से जाग उठा, उसने ताककर देखा—एक मूर्ति बाहर

चली गयी। उसने विस्मय के साथ अस्फुट स्वर में कहा—बड़ी बहू? वह हाथ के सहारे खड़ा हो गया। उसके शरीर में ज्वर हुआ है। हाथ में कुछ टकराया। उसने उसे दबा कर देखा—यह क्या? रुपये? गहने? बड़ी बहू के पीछे तेजी से चला। उसने समझ लिया है, उसने समझ लिया है। बड़ी बहू का मतलब उसने समझ लिया है।

वह बाहर चला गया।

साथ ही साथ मानदा बरामदे में बाहर निकली। उसने खुली खिड़की के दरवाजे की ओर देखा। थोड़ी हँसी, फिर उसके पीछे चली।

अब सिताब आँगन में उतर आया। उसके हाथ का दाव चाँदनी में चमक उठा।

महताब ने खिड़की के दरवाजे से बाहर निकल कर चारों ओर देखा। कई पड़ों के नीचे अँधेरा है, उसके उस पार चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाशित पृथ्वी है। लबालब तालाब चाँदनी में चमक रहा है। चन्द्रमा तालाब के जल में चन्द्रमाला बनाकर काँप रहा है।

तालाब के घाट पर बहू खड़ी है।

बड़ी बहू बैठ गयी। उसने साड़ी के आंचल के टुकड़े कर दिये। वह मरने आयी है। वह पानी में डूब कर मरेगी! वह कपड़े के टुकड़ों से दोनों पैर बाँधेगी। छाती की साड़ी में एक ईंट है। सोये-सोये उसने बहुत सोचा है। छिः छिः किस मुँह से वह चाँपाडाँगा लौटेगी? लोगों के पूछने पर क्या कहेगी?

ऐसा निश्चय कर ही मकान से निकलते समय अपने शरीर के गहने

और छिपाकर जमा किये हुए दो सौ रुपये एक पोटली में बाँध कर महताब के सिरहाने रख आयी है। उसको बहुत-कुछ था। सब स्वामी होने के कारण सिताब ने ले लिया। उसने एक बात भी नहीं कही। यह थोड़ा-सा वह महताब को ही दे जायगी। सिताब ने महताब को नहीं दिया है।

बड़ी बहू पैर बाँध रही थी।

पेड़ के नीचे की छाया में से महताब आकर खड़ा हो गया। पुकारा—बड़ी बहू!

चाँपाडाँगा की बहू चौंक पड़ी। उसकी ओर देख कर अस्फुट स्वर में बोली—महताब!

महताब बोला, तुम जल में डूबने आयी हो बड़ी बहू?

बड़ी बहू ने अबोध को धोखा देना चाहा—कौन कहता है? मैं घाट पर आयी हूँ। शरीर बहुत जल रहा है। स्नान करूँगी।

नहीं। गर्दन हिला कर महताब बोला, आज तुम मुझे ठग नहीं सकोगी। तुम पैरों में रस्सी बाँधती हो। मेरे सिरहाने तुम गहने-रुपये फेंक आयी हो। मैंने उसी समय समझ लिया?

बड़ी बहू ने कहा, मैं यह कलंक लेकर चाँपाडाँगा किस मुँह से लौटूँगी भाई! तुम क्यों आकर इस समय सामने खड़े हो गये महताब?

—मैं चला जाता हूँ। मैं कुछ नहीं कहूँगा। तू मर जा। वे ऐसा सोचते हैं, यह मैं नहीं समझ पाता था। अपने गहने-रुपये तुम ले लो। आँचल से हाथ न बाँध कर तुम डूब मरो। जिसका पावना है वह लेगा।

वह लौटने को तैयार हो गया।

—महताब! देवर!

महताब लौट पड़ा। बड़ी बहू बोली, वह तुम्हारा पावना है। तुम्हारे दादा ने तुम्हें फाँकी दी है।

—मैं लेकर क्या करूँगा ? तू डूब कर मर जा। मैं भी घर से चला जाऊँगा। तुम्हारे जाने के साथ ही साथ मैं भी रास्ता लूँगा।

—नहीं-नहीं। ऐसा मत कहो। मानू का क्या होगा ? मानिक का क्या होगा ?

—सो वही जाने।—उसने ऊपर हाथ उठा दिया।—तुम जिस घर में नहीं रहोगी, उस घर में मैं नहीं रहूँगा।

बड़ी बहू भी आज चकित हो गयी। विरक्त हो गयी। छिः-छिः-छिः-छिः ! कठोर स्वर से बोली, किन्तु क्यों ? क्यों तुम मेरे लिये घर छोड़ोगे महताब ? तुम्हारी बहू है, तुम्हारा लड़का है, तुम्हारा घर है, तुम्हारी सम्पत्ति—

—आह ! तुम भी वही कहती हो ? हाय रे हाय ! वह हाहाकार कर उठा। इसके बाद फिर बोला, केवल बहू, बेटा, सम्पत्ति लेकर घर किया जाता है, माँ के न रहने से, माँ रहते उसे छोड़ कर बहू-बेटे लेकर घर ? मेरी माँ कह गयी है बड़ी भौजाई तेरी माँ है। बचपन में खेल घर में तुम माँ बनती और मैं लड़का बनता—याद नहीं है ? कहती थी लक्ष्मण की बात, सीता की बात।

वह चित्र क्षण भर में मनमें अंकित होगया, वह क्या भूलने योग्य है ! जान पड़ा, उसी युग में जैसे लौट गये हैं।

महताब फिर बोला, मरते समय माँ ने तुमसे नहीं कहा था, मेरा महताब पागल है, वह माँ के बिना नहीं रह सकता—तुम उसकी माँ

बनना ? तुम्हारे लड़के-बाले हों, किन्तु यह तुम्हारा बड़ा लड़का है। नहीं कहा था ? याद नहीं है ?

—याद है भाई।

याद है क्या, इस समय आँखों के सामने नाच रहा है।

केवल उसीके नहीं, केवल महताब के ही नहीं, सिताब के आँखों के सामने भी नाच रहा है। वह इसका साक्षी है, माँ मरते समय जब वह बात कही थी, उस समय वह भी वहाँ खड़ा था।

एक पेड़ के नीचे दाब हाथ में लेकर सिताब बातें सुन रहा था। वह थरथर काँपने लगा। याद पड़ा, सबके अन्तमें माँ ने उसे बुला कर कहा था—तुम मेरे बरगद के पेड़ हो। अनेक तूफान सह कर इस गिरी हुई मण्डलबाड़ी को खड़ा किया है। तुम्हारी छाया के नीचे इन दोनों को दे जाती हूँ। महताब पागल को बहू देखेगी। तुम बड़ी बहू को देखना। वह साक्षात् लक्ष्मी है! उसीको पाकर सब हुआ है। उसका कभी अपमान न करना। वह बड़ी अभिमानिनी है।

इस आधी रात के समय पेड़ की छाया में जैसे वही चित्र स्पष्ट नाचने लगा।

उधर आकाश में शन शन करके बादल उठ रहे हैं, कभी बादल जमे हैं, चक्कर लगाते हैं, गम्भीर हो गये हैं—इसके बाद धीमी हवा चल रही है, धीमी हवा तेज हो गयी है। बादल दौड़ रहे हैं, आकाश ढँक कर असीम विस्तार से फैल रहे हैं। बादल-बादल में संघर्ष हो रहा है। बिजली चमकी, बादल गरज उठा। बादलों की आवाज गहरी, लम्बी सुनायी पड़ती है।

महताब ने बड़ी बहू से कहा, सो तुम मर जा माँ, आज भी माँ ही

कहता हूँ। तू मरो. मैं भी चला जाता हूँ। इसी रास्ते से जाऊँगा। एकदम गंगासागर।

बड़ी बहू बोली, महताब! नहीं। ऐसा मत करो भाई।

—नहीं नहीं। मैंने निश्चय कर लिया है। तुमने क्या मुझे कम दुःख दिया है! मुझे लेकर पुत्र की तुम्हारी साध नहीं मिटी! कितने कवच पहिने! कितने उपवास किये! मैं गंगासागर में डूब मरूँगा। जिससे अगले जन्म में तुम्हारी ही गोद में जन्म लूँ।

बड़ी बहू चिल्ला उठी, अपने कवच मैंने तोड़ कर फेंक दिये हैं।

एकदम बाधा-बन्धनहीन चिल्लाहट—उसी बादल की गरज के समान।

साथ ही साथ कहीं से बालक का स्वर सुनाई पड़ा—बड़ी माँ! बड़ी माँ!

बड़ी बहू चकित होकर बोल उठी—मानिक!

उधर एक पेड़ की छाया के नीचे से मानदा चिल्ला उठी, मानिक!

मानिक को सब उस घर में अकेले छोड़ आये हैं! मकान का दरवाजा खुला हुआ है! मानिक! बड़ी बहू उठने लगी। किन्तु पैर के बन्धन के कारण उठ न सकी, गिर पड़ी। वह बोली, महताब,—मानिक को देखो महताब! आह मेरे पैर का बन्धन! आह!

दाव हाथ में लेकर पेड़ के नीचे से सिताब दौड़ा आया।

महताब चिल्ला उठा—नहीं-नहीं।

सिताब बोला, तेरे पाँव पड़ता हूँ महताब! तेरे पैर पड़ता हूँ। झंझट न बढ़ा। जा मानिक को देख। अरे छोटी बहू मेरी तरह बाग में आकर खड़ी थी। मानिक अकेला था। देखो, मैं उसके पैरों के बन्धन काट कर ले आता हूँ। जाओ।

वह बड़ी बहू के पैरों के बन्धन काटने बैठा। बोला, छिः छिः छिः।

उधर मकान के भीतर से मानदा की आवाज सुनाई पड़ी—मानिक! मानिक!

मानिक अकेला घर में सोया था। बिजली के प्रकाश और बादल की गरज से उसकी नींद टूट गयी। उसने माँ को घर में नहीं पाया। बाहर भी कोई न मिला। दरवाजा खुला हुआ था। हल्के-हल्के बादलों से आकाश में कुहरा छा गया है। उससे चाँदनी नहीं छिपी है, धुँधली भी नहीं हुई है, एक रहस्यलोक सा बन गया है। वह उसी प्रकाश में खुले दरवाजे से निकल पड़ा है। अकस्मात् बड़ी बहू के जोर से 'महताब' कहने से बड़ी माँ का 'संकेत पाकर बड़ी माँ' कहकर रास्ते में निकल पड़ा है। बड़ी माँ कहाँ! सब उसको छोड़ कर चले गये हैं।

मानदा ने दौड़ते हुए घर में जाकर पुकारा—मानिक!

किन्तु मानिक कहाँ?

उसने दिशा भूल कर उसी बाग की खिड़की से बाहर होकर पुकारा—मानिक!

महताब दौड़ा आया—मानिक कहाँ है? नहीं जानती—

मानदा ने कातर भाव से स्वामी की ओर देखा।

महताब ने दाँत पीस कर कहा, बात सुनने गयी थी, लड़के को अकेले छोड़ कर?

मानदा ने एक बार पुकारा, दीदी!

बाग के भीतर से बड़ी बहू ने उत्तर दिया—मानू! मानिक!

—मकान में नहीं है।—वह रो पड़ी।

बड़ी बहू आकर खड़ी हो गयी। वह हाँफ रही थी। उसके पीछे सिताब था। बड़ी बहू ने चिल्ला कर पुकारा—मानिक!

उसी समय घने काले ईशान कोण के बादलों ने चाँद ढँक दिया। साथ-साथ चलने लगी हवा—एक जोर की हवा। हवा का पहला झोंका चला गया। इसके बाद उतने ही वेग से ठंडी हवा चलने लगी। उसी हवा में एक रंगीन बाँसुरी की क्षीण आवाज सुनाई पड़ी—पू—पू।

बड़ी बहू बोली, बड़े रास्ते पर। वही मानिक की बाँसुरी है।

मानिक बड़े रास्ते पर ही निकल आया था। उसके शिशु मन में चण्डीमण्डप में पूजा समारोह की स्मृति है। उसे जान पड़ा कि उसे सुला कर सब लोग पूजा देखने गये हैं। उसी रास्ते पर अपनी बाँसुरी बजाते-बजाते आ रहा था—पू-पू-पू-पू!

अकस्मात् चाँदनी ढँक कर अँधेरा छा गया।

मानिक दौड़ने लगा।

वह भी सुन रहा है, बड़ी माँ पुकारती है, बाप पुकारता है, ताऊ पुकारते हैं, माँ पुकारती है—मानिक! मानिक! मानिक! मानिक!

चण्डीमण्डप से ही वे पुकारते हैं इसमें उसे सन्देह नहीं है। वह दौड़ते दौड़ते रास्ते के मोड़ पर खड़ा होता है, रास्ता पहचानता है, फिर चलने लगता है। दो-एक बार हाथ की बाँसुरी बजा लेता है।

वह चण्डीमण्डप के पास पहुँच गया।

चण्डीमण्डप में उस समय बड़ी बहू सिर पटकती थी—मेरे मानिक को लौटा दो! मेरे मानिक को लौटा दो।

मानिक उल्लास के साथ बाँसुरी बजा कर चण्डीमण्डप में बड़ी माँ के पास खड़ा होगया।

उधर झमझम कर वर्षा होने लगी।

दूसरे दिन सूर्य मनोहर रूपसे निकला।

बर्षा से भींगी हुई रात के अन्तमें टुकड़े-टुकड़े बादलों के बीच से ताक-झाँक कर पूर्व के आकाश में लाल रंग से लाल कर और पश्चिम आकाश में इन्द्रधनुष चित्रित कर पृथ्वी को सुन्दरी के समान सजाकर दिन के देवता हँसते-हँसते उदय हो गये।

मण्डलबाड़ी के सामने उस समय मणिलाल विदा हो रहा था। जिस सिरकी लगी हुई गाड़ी में बड़ी बहू जाने वाली थी उसमें मणिलाल अकेला ही घर लौट रहा था।

सिताब तम्बाकू पी रहा था। मणिलाल हँस कर बोला, माँ से क्या कहूँगा? पूछेगी—क्या हुआ? कादू क्यों नहीं आयी?

सिताब बोला, कहोगे ! थोड़ा सोच कर बोला, उनके दामाद को भूत लगा था ! और क्या कहोगे ? भूत ने छोड़ दिया । इससे नहीं भेजा ।

बड़ी बहू घर में से मानिक को गोद में लेकर निकल कर बोली, चलूँगी रे चलूँगी । माँ से कहना, आश्विन की पूर्णिमा को लक्ष्मी पूजा के बाद ही आऊँगी । मैं और तुम्हारे बहनोई दोनों ही आयेंगे । विवाह का सम्बन्ध करने आयेंगे । तेरे विवाह का सम्बन्ध लेकर जायेंगे, कहोगे, कन्या बड़ी अच्छी है । अच्छी सुन्दरी है । माँ की सहेली की कन्या है । पुटी । तुम्हारे बहनोई तो पागल—

सिताब बोला, यह देखो ! यह देखो ! राधे-राधे-राधे ! क्या कहती हो !

बड़ी बहू हँसने लगी ।

ठीक इसी समय महताब आ उपस्थित हुआ । उसका सारा शरीर कीचड़ से लथपथ है । सिर की पट्टी भींगी है, केश भींगा हुआ, कन्धे पर कुदाल है । वह इसी बीच न जाने कब खेत में चला गया था । उसने स्वयं अपने खेत की मेंड़ तोड़ दी थी, यह बात याद आने पर वह स्थिर न रह सका ।

"कर्कट छरकट, सिंह में सूखा, कन्या काने कान ,
बिना हवा के तुला बरसे, कहाँ रहेगा धान ।"

कर्कट अर्थात् सावन में जल से भर देने पर, सिंह अर्थात् भादो में सूखा—धूप होने से और कन्या अर्थात् आश्विन में मेंड़ तक लबालब जल रहने से और तुला अर्थात् कार्तिक में बिना हवा के बरसने से धान रखने को जगह नहीं मिलेगी, नहीं अँटेगा । क्या आश्विन में खेत की मेंड़ काटने से चलेगा ?

इस कहावत को किसान ऐसे दिनों में गाने लगते हैं—

"कर्कट छरकट, सिंह में सूखा, कन्या काने कान,
बिना हवा के तुला बरसे, कहाँ रहेगा धान,
बहू-कन्या बड़े यत्न से लीपो अपने आँगन ।"